॥ शब्द ३८ ॥ सरन गुरु पाई जागे भाग	
हिंदी	संस्कृत
सरन गुरु पाई जागे भाग । सुरत मन चरनन में रहे लाग ॥१॥	गुरुशरणं प्राप्तं भागाः जागरिताः। आत्मामनश्च चरणयोः संलग्नौ ॥१॥
दरश गुरु पावत हरषा मन । सेव गुरु चाहत धाया तन ॥२॥	गुरुदर्शनं प्राप्य मनः हर्षितम्। गुरुसेवां वाञ्छन् देहः धावितः॥२॥
साध सँग करत बढ़ा विश्वास । चरन गुरु रलत भया परकाश ॥३॥	साधसङ्गं कुर्वन् विश्वासः वर्धितः। गुरोः चरणाभ्यां मिलित्वा प्रकाशः जातः॥३॥
बचन गुरु सुनत अमी बरसाय । नाम गुरु सुमिरत प्रेम बढ़ाय ॥४॥	गुरुवचनं श्रृण्वन् अमृतं वर्षति । गुरोः नाम स्मरन् प्रेम वर्धते॥४॥
शब्द की महिमा निस दिन गाय । सुरत मन धुन रस छिन छिन पाय ॥५॥	शब्दमहिमां प्रतिदिनं गायति । आत्मामनश्च प्रतिक्षणं ध्वनिरसं प्राप्नुतः ॥५॥
भेद सतसँग का गुरु जब दीन । सुरत मेरी जागी हुआ मन लीन ॥६॥	यदा गुरुः सत्संगभेदं दत्तवान् । ममात्मा जागरितः मनश्च लीनं जातम् ॥६॥
शब्द धुन घट में नित सुनती । संख और घंटा नित गुनती ॥७॥	नित्यं घटे शब्दध्वनिं श्रृणोमि । नित्यं शंखश्च घंटायाश्च मननं करोमि॥७॥
बंक का द्वारा लीन खुलाय । त्रिकुटी चढ़ कर पहुँची धाय ॥८॥	बंकपदस्य द्वारं उद्घाटयितः । त्रिकुटीपदं प्राप्तवान् धावित्वा॥८॥
मानसर किये जाय अश्नान । लगा फिर धुन मुरली से ध्यान ॥९॥	मानसरसि गत्वा स्नानं कृतम्। तदा वेणुध्वनिना सह ध्यानः संलग्नः ॥९॥
पुरुष का दरशन पाय हरषात । धुनन सँग अमृत रस बरसात ॥१०॥	पुरुषस्य दर्शनेन हर्षामि। ध्वनिभिः सह अमृतरसः वर्षति ॥१०॥
गई फिर अलख अगम के पार । मिले मोहि राधास्वामी पुरुष अपार ॥११॥	यातः तदा अलखागमयोः पारम् । रा धा/धः स्व आ मी पुरुषापरः मया प्राप्तः॥११॥
चरन में गुरु के रही लिपटाय । मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥१२॥	सद्गुरुचरणयोः लिप्लिम्पामि। रा धा/धः स्व आ मीकृपां प्रतिक्षणं प्राप्नोमि ॥१२॥
बेद मत नहिं जाने यह भेद । सकल जिव सहते करमन खेद ॥१३॥	वेदमतम् अनभिज्ञम् अनेन भेदेन। जीवाः कर्मणां कष्टं सहन्ते ॥१३॥
संत बिन कौन करे उपकार । शब्द बिन कौन करे निरवार ॥१४॥	सन्तं विना कः उपकर्तुं क्षमः । शब्दं विना कः उद्धरितुं क्षमः ॥१४॥
सरन राधास्वामी जो धारे । जाय घर भौसागर पारे ॥१५॥	रा धा/धः स्व आ मी दयालोः शरणं यः धरति । सः भवसागरात् पारं गृहं गच्छति॥१५॥

॥ शब्द ३९॥ चरन गुरु दीन हुआ मन मोर	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु दीन हुआ मन मोर । शब्द धुन सुनता सूरत जोड़ ॥१॥	सद्गुरुचरणयोः मम मनः दीनं जातम् । आत्मानं संयुज्य शब्दध्वनिं श्रृणोमि॥१॥
भरम तज हिये परतीत भई । प्रेम सँग सूरत शब्द गही ॥२॥	भ्रमा: त्यक्ता: हृदि प्रतीतिः जाता। आत्मा प्रेम्णा शब्दं गृह्णाति॥२॥
छोड़ दिया मन से क्रोध और काम । सुमिरता हिये में राधास्वामी नाम ॥३॥	मनसः कामक्रोधौ अत्यजताम्। हृदि राधास्वामीनाम स्मरामि॥३॥
सरन गुरु हित चित से धारी । चरन में प्रीति लगी सारी ॥४॥	गुरोः शरणं हितचित्तेन च धृतम् । चरणयोः पूर्णा प्रीतिः अयुनक्॥४॥
दरश गुरु जागत मन अनुराग । बचन सुन जगत बासना त्याग ॥५॥	गुरुदर्शनेन मनसि अनुरागः जागर्ति। प्रवचनं श्रुत्वा जगत: वासनाः नश्यन्ति॥५॥
साध संग होवत कारज पूर । भक्ति गुरु धावत मन हुआ सूर ॥६॥	साधपुरुषेण सह कार्याणि पूर्णानि भवन्ति। गुरुभक्त्यै धावन् मनः शूरं जातम् ॥६॥
ध्यान गुरु धारत भागे चोर । सुनत नित घट में अनहद शोर ॥७॥	गुरुध्यानेन चौराः पलायन्ते। नित्यं घटे अनाहतनादं श्रृणोमि॥७॥
शब्द की क्या कहुँ महिमा सार । सहज में होवत जीव उधार ॥८॥	किं वच्मि शब्दमहिमाया: सारम् । सहजे भवति जीवोद्धारः ॥८॥
करम और धरम सभी त्यागे । शब्द सँग मन सूरत जागे ॥९॥	सर्वे कर्मधर्मा: त्यक्ताः । आत्मामनश्च शब्देन सह जागरितौ ॥९॥
नहीं कोइ जाने घट का भेद । भरम कर सहते करम का खेद ॥१०॥	न कोऽपि जानाति घटस्य भेदम् । भ्रमेण सहन्ते कर्मणां कष्टम् ॥१०॥
काल का जाल बिछा भारी । जीव सब घेर लिए सारी ॥११॥	बृहद्कालस्य जालम् । सर्वे जीवाःआवृताः पूर्णतः॥११॥
पड़े सब भरमें करमन में । दुःख सुख भोगें जनमन में ॥१२॥	सर्वे कर्मेषु भ्रमन्ति। दुःखञ्च सुखञ्च भुञ्जन्ति जन्मसु ॥१२॥
सरन सतगुरु की जो आवे । उलट कर वही निज घर जावे ॥१३॥	सद्गुरुशरणं यो आयाति । उल्लुण्ट्य सैव स्वगृहं गच्छति॥१३॥
होय माया से वह न्यारा । चरन गह संत जाय पारा ॥१४॥	स: मायाया: पृथग्भवति । सन्तचरणौ गृहीत्वा पारं याति॥१४॥

सराहूँ कस कस अपना भाग । चरन में राधास्वामी के मन लाग ॥१५॥	कथं स्वभाग्यस्य प्रशंसनं करोमि। रा धा/ध: स्व आ मीचरणयोः मन: लीनं जातम्॥१५॥
प्रेम संग आरत उन गाऊँ । दया पर छिन छिन बलि जाऊँ ॥१६॥	प्रेम्णाः तेषां आरतिं गायामि । प्रतिक्षणं दयायां समर्पयामि ॥१६॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार । रहूँ मैं छिन छिन चरन सम्हार ॥१७॥	रा धा/ध: स्व आ मीशरणं हृदि धार्य । प्रतिक्षणं अहं चरणयोः जागरूक: भवामि॥१७॥

॥ शब्द ४० ॥ चरन गुरु निज हियरे धारे	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु निज हियरे धारे । लगे मोहि प्राणन से प्यारे ॥ १ ॥	गुरुचरणौ स्वहृदये अधार्यम् । प्राणानपि मां प्रिय: प्रतीत:॥ १ ॥
देख सतसँग मन लागी प्रीति । सुनत गुरु बचन बढ़ी परतीत ॥ २ ॥	सत्संगं दृष्ट्वा मनसि प्रीतिः जाता। गुरुवचनं श्रुत्वा प्रतीतिः अवर्धत॥ २ ॥
संग गुरु महिमा चित्त बसाय । सेव गुरु करता चित्त लगाय ॥ ३ ॥	गुरुमहिमायाः सानिध्यं चित्ते धार्य । गुरुसेवां करोमि चित्तेन सह ॥ ३ ॥
मगन मन निरखत नित्त बिलास । सुखी होय रहता चरनन पास ॥ ४ ॥	निमग्नमनसा नित्यविलासं संपश्यामि। सुखीभूय चरणयो: समीपं निवसामि॥ ४ ॥
प्रेम घट बढ़ता दिन और रात । शब्द गुरु महिमा कही न जात ॥ ५ ॥	प्रेम भवति न्यूनाधिक्यं अहर्निशम् । शब्दगुरोः महिमा कथयितुं न शक्यते ॥५॥
बिना गुरु शब्द नहीं छुटकार । भरमते सब जिव माया लार ॥ ६ ॥	शब्दगुरुं बिना मुक्तिः न भवति। सर्वजीवाः मायया साकं भ्रमन्ति॥६॥
लगे नहिं उनका ठौर ठिकान । दुःख सुख भोगें चारों खान ॥ ७ ॥	तेषां नास्ति कोऽपि अधिष्ठानम् । दुःखसुखमनुभवन्ति चतुर्योनिषु ॥७॥
भाग मेरे पूरबले जागे । सुरत मन गुरु चरनन लागे ॥ ८ ॥	पूर्वजन्मनः मम भाग्यं जागरितम्। आत्मामनश्च गुरुचरणौ संलग्नौ ॥८ ॥
शब्द का भेद मिला मोहि सार । सुनूँ नित घट में धुन झनकार ॥९॥	शब्दभेदसारं प्राप्तं मया । नित्यं घटे ध्वने: झंकृतिं श्रृणोमि॥९॥
सहसदल घंटा संख सुनाय । तिरकुटी गुरु पद परसा जाय ॥१०॥	सहस्रदलपदे घंटाशंखयो: ध्वनिं श्रुत्वा। त्रिकुटीपदे गुरोः पदं अस्पृशम् ॥१०॥
सुन्न में धुन रारँग जागी । गुफा चढ़ धुन मुरली साजी ॥११॥	सुन्नपदे रारंगध्वनिः जागरिता । गुहायामारुह्य वेणुध्वनिः सञ्जित: ॥११॥
सत्तपद बीन सुनी निज सार । पुरुष का दरशन करूँ सम्हार ॥१२॥	सत्तपदे अहितुण्डवाद्यं निजसारम् अश्रृणवम्। पुरुषस्य दर्शनं सचेतसः करोमि॥१२॥
वहाँ से गई अलख दरबार । अगम गढ़ खोला सुरत सुधार ॥१३॥	तत्रत अलखसदनं अगच्छम्। संशुद्ध्यात्मानमुद्घाटितं अगमदुर्गम् ॥१३॥

परे तिस निरखा सतगुरु धाम । पाइया अद्भुत राधास्वामी नाम ॥१४॥	ततः परे सद्गुरो: धामम्(धाम) ईक्षितम्। अद्भुत रा धा/ध: स्व आ मी-नाम लब्धम्॥१४॥
सरन गुरु पाई चरन समाय । नाम प्यारे राधास्वामी छिन २ गाय ॥१५॥	गुरो: शरणं प्राप्तं चरणयोः समाहितम्। प्रतिक्षणं प्रिय-रा धा/ध: स्व आ मी नाम गायामि॥१५॥

॥ शब्द ४१ ॥ चरन गुरु घट में धार रही	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु घट में धार रही। सरन गुरु निज उर सार लई ॥१॥	गुरुचरणौ घटे दधाति । गुरुशरणं स्वहृदये संरक्षितम् ॥१॥
प्रीति जग झूँठी देखी आय । सरन में राधास्वामी के गई धाय ॥२॥	जगतः प्रीतिं मिथ्या दृष्ट्वा । रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं प्राप्तं धावित्वा ॥२॥
जगत जिव मतलब के हैं यार। भोग सँग बहते माया धार ॥३॥	जगज्जीवा: स्वार्थमित्राणि सन्ति । भोगै: सह मायाधारायां प्रवहन्ति ॥३॥
संग इन चित से नहिं चाहूँ । चरन गुरु सीतलता पाऊँ ॥४॥	एतेषां संगं चेतसा न कामये । गुरुचरणयो: शीतलतां प्राप्नोमि ॥४॥
करी मोपै राधास्वामी मेहर बनाय । चरन में अपने लिया लगाय ॥५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु मयि कृपां कृतवान्। आत्मन: चरणयो: मां स्वीकृतवान्॥५॥
सुनाए बचन सार के सार । शब्द का दीना भेद अपार ॥६॥	सर्वस्यसार: प्रवचनानि अश्रावयत् । शब्दस्यापारं भेदं दत्तवान् ॥६॥
नाम राधास्वामी सुमिरूँ नित्त । शब्द धुन सुनती कर कर हित्त ॥७॥	नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी-नाम स्मरामि। शब्दनादं हिते मत्वा श्रणोमि॥७॥
कहूँ क्या महिमा सतसँग की। बाढ़ नित बढ़ती गुरु रँग की ॥८॥	किं वच्मि सत्संगस्य महिमाम् । सद्गुरुरंगस्य जलौघः नित्यं संवर्धते॥८॥
हिये में निस दिन बढ़ती प्रीत । शब्द की होती नई परतीत ॥९॥	हृदये प्रतिदिनं प्रीतिः वर्धते। शब्दस्य नवा प्रतीतिः भवति॥९॥
भाग से कोइ कोइ प्रेमी पाय । लिए मन सूरत दोउ जगाय ॥१०॥	भाग्यात् विरल: प्रेमीजनः प्राप्नोति । आत्मामनश्च द्वौ अजागृताम् ॥१०॥
जगत से चित में धर बैराग । चरन गुरु बढ़ता नित अनुराग ॥११॥	चेतसि जगतः वैराग्यं आधृत्य। गुरुचरणयो: नित्यानुरागः वर्धते ॥११॥
बासना भोगन की दई त्याग । मधुर धुन शब्द रहा मन लाग ॥१२॥	भोगानां कामना त्यक्ता । मनः शब्दस्य मधुरध्वनौ युनक्ति ॥१२॥
हुए राधास्वामी आज सहाय । भाग मेरे भी लीन जगाय ॥१३॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु अद्य सहायक: सञ्जात:।

	ममापि भाग्यं जागरितवान् ॥१३॥
प्रेम सँग गुरु के सन्मुख आय । करूँ नित आरत उनकी गाय ॥१४॥	प्रेम्णा गुरोः सन्मुखमागत्य । तेषां आरतिं नित्यं गीत्वा करोमि ॥१४॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय । चरन में राधास्वामी रहूँ लिपटाय ॥१५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां प्रतिपलं प्राप्य । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो अहं लिप्लिम्पामि ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ४२ ॥ जगत सँग मनुआँ रहत उदास	
हिंदी	संस्कृत
जगत सँग मनुआँ रहत उदास । चहत गुरु चरनन नित्त बिलास ॥१॥	जगता सह मनः उदास: भवति। गुरुचरणयोःनित्यविलासं वाञ्छति॥१॥
रीत मोहि जग की नहिं भावे । साध सँग छिन छिन मन धावे ॥२॥	जगत: रीतिः मह्यं न रोचते| सज्जनै: सार्धं मनः प्रतिक्षणं धावति ॥२॥
तजत मन अब कृत संसारी । भजत गुरु नाम सुरत प्यारी ॥३॥	मनः अधुना जगत: विधानं त्यजति। प्रियात्मा गुरोः नाम स्मरति॥३॥
काम और क्रोध रहे मुरझाय । चरन गुरु आसा मनसा लाय ॥४॥	कामक्रोधश्च म्लानः अभूताम् । गुरुचरणयोः आशां मनसि धार्य॥४॥
लोभ और मोह गए घर छोड़ । नाम में राधास्वामी के चित जोड़ ॥५॥	लोभमोहश्च गतवन्तौ गृहं त्यक्त्वा । रा धा/ध: स्व आ मी इति नाम्नि चित्तं संयोज्य ॥५॥
अहँगता दीनी सब जारी । दीनता चरनन में बाढ़ी ॥६॥	अहं भावं त्यक्तं सर्वम् । दीनताचरणयोः अवर्धत॥६॥
बिरह अनुराग रहे घट छाय। सुरत मन धुन सँग रहे लिपटाय ॥७॥	विरहानुरागश्च घटम् आच्छादितौ । आत्मामनश्च ध्वनिसार्धं संश्लिष्टौ ॥७॥
किया राधास्वामी यह सिंगार । गाऊँ कस महिमा उनकी सार ॥८॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु एषः श्रृङ्गारः कृतवान्| तस्य महिमाया: सारं कथं गायामि ॥८॥
चरन गुरु लागी बिरह सम्हार । रही मैं अचरज रूप निहार ॥९॥	गुरुचरणयो: संलग्न: विरहं धार्य। अवलोकयाम्यहम् अद्भुतरूपम्॥९॥
प्रेम की धारा बढ़ी नियार । करी राधास्वामी दया अपार ॥१०॥	प्रेम्ण: विलक्षणा धारा संवर्धिता| रा धा/ध: स्व आ मी दयालु अपारदयां कृतवान्॥१०॥
गाऊँ नित आरत राधास्वामी साज । दिया मोहि राधास्वामी अचरज दाज॥११॥	गायामि नित्यारतिं रा धा/ध: स्व आ मी दयालो अलंकृत्य। रा धा/ध: स्व आ मीदयालु: माम् अद्भुतोपहारं दत्तवान्॥११॥
गगन में बाजे अनहद तूर।	गगने नदन्ति अनाहतवाद्यानि।

लखा घट अंतर अद्भुत नूर ॥१२॥	अपश्यमद्भुतं प्रकाशं घटान्तसि ॥१२॥
गुरू पद परस गई सुन में । रली जाय फिर मुरली धुन में ॥१३॥	त्रिकुटी पदं संस्पृश्य प्राप्तं सुन्नपदम् । तत: विलीन: अभवम् वेणुध्वनौ ॥१३॥
सुनी धुन बीना सतपुर में । अलख लख गई अगमपुर में ॥ १४॥	सतपुरे वीणाध्वनिम् अश्रृण्वम्। अलखं वीक्ष्य अगमपुरं अगच्छम् ॥१४॥
परे तिस धाम अनूप दिखाय । चरन राधास्वामी परसे जाय ॥१५॥	तत: परे अनूप: धाम:(धाम) ईक्षित: । रा धा/ध: स्व आ मीचरणौ आसाद्य अस्पृशम्॥१५॥

॥ शब्द ४३ ॥ प्रीति गुरु हिये अंतर बढ़ती।	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति गुरु हिये अंतर बढ़ती। सुरत मन गुरु चरनन धरती ॥१॥	गुरोः प्रीतिः हृदन्तसि वर्धते । आत्मामनश्च गुरुचरणयोः धरामि ॥१॥
प्रेम रँग लाल हुआ मन मोर । दिए सब घट के बंधन तोड़ ॥२॥	प्रेमरङ्गेन मम मनः रक्तं जातम् । घटस्य सर्वाणि बंधनानि अत्रोटयन् ।।२।।
दरस गुरु होवत मनुआँ मस्त । निकट कर देखत दूर की बस्त ॥३॥	गुरुदर्शनेन मनः मग्नं भवति। निकटतः दूरस्थवस्तुं पश्यति॥३॥
भेद पाय सुध बुध सब भूली । हिये कँवलन क्यारी फूली ॥४॥	भेदं प्राप्य सर्वचेतनता विस्मृता । हृदये कमलानां केदारिका विकसिता।।४।।
मगन मन धुन सँग रहा लिपटाय । देह तज रहा गगन में छाय ॥५॥	निमग्नमनः नादेन सह लिम्पति । देहं त्यक्त्वा आकाशे व्याप्नोति॥५॥
खिला अब घट में इक गुलज़ार । सहसदल जोत सरूप निहार ॥६॥	अधुना घटे एकम् उद्यानं विकसितम्। सहस्रदलपदे ज्योतिस्वरूपं निरीक्ष्य ॥६॥
गुरू पद निरखा अजब बहार । सुन्न में सुनती सारँग सार ॥७॥	गुरुपदस्य अद्भुतं सौंदर्यमपश्यम् । सुन्नपदे सारंगीसारं श्रृणोमि॥७॥
भँवर चढ़ धरा सोहंगम ध्यान | सत्तपुर सुनी बीन धुन तान ॥८॥	भँवरपदे आरुह्य सोहंशब्दस्य ध्यानमधरम् । सत्तपुरे अहितुण्डवाद्यनादं अश्रृण्वम्॥ ८॥
अलख लख अगम लोक के पार । अनामी पुरुष किया दीदार ।।९।।	अलखपदं दृष्ट्वा अगमलोकमतिक्रम्य। अनामीपुरुषस्य दर्शनमकरवम् ।।९।।
सरन राधास्वामी पाई सार । हुई मैं उन चरनन बलिहार ॥१०॥	रा धा/धः स्व आ मी-शरणसारं प्राप्तम् । अहं तेषां चरणयोः समर्पितः अभवम् ।।१०।।
संत मत क्या कहूँ महिमा गाय । सर्ब मत उसके नीचे आय ॥११॥	संतमतस्य महिमां किं गायेयम् । सर्वाणि मतानि तस्मात् अधः सन्ति ॥११॥
काल सँग रहे सभी लिपटाय । गए सब माया संग भुलाय ॥१२॥	सर्वेऽपि कालेन सह लिम्पन्ति । सर्वे मायया साकं भ्रमन्ति ॥१२॥
सरन गुरु कोइ बड़भागी पाय । शब्द की डोरी गह चढ़ जाय ॥१३॥	कश्चिदेव सौभाग्यवान् गुरुशरणं लभते । शब्दस्य रज्जुं गृहीत्वा आरोहति ॥१३॥
चरन में राधास्वामी के लौ लाय। मेहर से निज घर अपना पाय ॥१४॥	रा धा/धः स्व आ मी-चरणयोः निष्ठां धार्य। तेषां कृपया स्वगृहं प्राप्नोति ॥१४॥

हरख और आनंद उर न समाय । जगत और देह दई बिसराय ॥१५॥	हर्षोल्लासं च हृदये न समाहितौ । जगत्देहञ्च अविस्मरताम् ।।१५।।

*

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ४४ ॥ टेक गुरु बाँधो स्वामी प्यारी	
हिंदी	संस्कृत
टेक गुरु बाँधो स्वामी प्यारी । तजो अब करम भरम सारी ॥१॥	स्वामीप्रिया गुरो आश्रयं गृहाण । अधुना सर्वकर्मभ्रमा: त्यज ॥१॥
जगत जिव पूजें देवी देव । करे नहिं कोई सतगुरु सेव ॥२॥	जगत: जीवा: देवीदेवान् च पूजयन्ति। न कोऽपि करोति सद्गुरो: सेवाम् ॥२॥
अटक रहे सब जिव नीर पखान । भरम कर फिरते चारों खान ॥३॥	सर्वे जीवा: जलपाषाणेषु संलग्ना: सन्ति। भ्रान्ता: चतुर्योनिषु भ्रमन्ति॥३॥
भेद सतसँग का नहिं पावें । करम बस चौरासी धावें ॥४॥	सत्संगस्य भेदं न प्राप्नुवन्ति । कर्मानुसारं चतुरशीत्यां धावन्ति ॥४॥
भाग मेरा धुर का जागा हाल । मिले मोहि सतगुरु परम दयाल ॥५॥	मम सर्वोच्चधामस्य(धाम्नः) भाग्यं जागरितं सद्य: । मया परमदयालु: सद्गुरु: प्राप्त: ॥५॥
मेहर से दीन्हा भेद अपार । बताया शब्द सार का सार ॥६॥	कृपां कृत्वा अपारभेदं दत्तवान् । शब्दसारस्य सारं उक्तवान् ॥६॥
सुरत मेरी धुन रस में लागी । कुमत गई सूमत अब जागी ॥७॥	ममात्मा ध्वन्या: रसे अयुङ्क्त । कुबुद्धि: गता सुबुद्धि: च जागरिता ॥७॥
सुना राधास्वामी नाम दयार। गया तम हो गया घट उजियार ॥८॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: नाम अश्रृण्वम् । अंधकार: गत: घटे प्रकाश: अभवत् ॥८॥
चरन गुरु परसे मल हुआ नास। देखती घट में अजब बिलास ।।९।।	गुरुचरणौ संस्पर्श्य नष्टा मलिनता । घटे अद्भुतविलासं पश्यामि ।।९।।
चरन गुरु को सके महिमा गाय । मेहर से कोइ बड़भागी पाय ॥१०॥	गुरुचरणयो: महिमां क: गातुं शक्नोति । कृपया कश्चिदेव भाग्यवान् प्राप्नोति॥१०॥
चरन गह आई सतगुरु ओट । उतर गई करम भरम की पोट ॥११॥	चरणौ गृहीत्वा सद्गुरो: शरणम् आगता । कर्मभ्रमयो: पोटलिका अपसरिता॥११॥
प्रीत राधास्वामी हिये बाढ़ी । शब्द की लागी घट ताड़ी ॥१२॥	रा धा/ध: स्व आ मी-प्रीति: हृदये अवर्धत । घटे जाता शब्दरसस्य मादकता ॥१२॥
थाल हिये आरत कर में धार । शब्द धुन जोत जगाई सार ॥१३॥	हृदयस्य स्थाली आरतिं हस्तयो: धार्य । शब्दध्वने: सारस्य ज्योतिम् अजागरयत॥१३॥
गुरु के सन्मुख ले ठाढ़ी।	गुरो: समक्षं गृहय स्थिता।

मेहर मोपै कीनी गुरु भारी ॥१४॥	गुरु: मयि अतिकृपां कृतवान् ॥१४॥
सरन दे पूरा कीना काम । भजूँ में छिन छिन राधास्वामी नाम ॥१५॥	शरणं दत्वा कार्यं पूर्णं कृतवान्। प्रतिपलं अहं रा धा/ध: स्व आ मी-नाम भजामि ॥१५॥

॥ शब्द ४५ ॥ हरख मन सरन गही सतगुरु	
हिन्दी	संस्कृत
हरख मन सरन गही सतगुरु । प्रीति सँग धरे बचन निज उर ॥ १ ॥	हर्षितमनसा गुरुशरणं गृहीतम् । प्रीत्या स्वहृदये प्रवचनानि अधारयन् ॥१॥
साध सँग शोभा बरनी न जाय । रली गुरु चरनन भाग जगाय ॥ २ ॥	साधुभिः साकं शोभा अवर्णिता । भाग्यं जागरयित्वा गुरुचरणयोः अयुङ्क्त ॥२॥
भई निज हिरदे गुरु परतीत । तजी मन भय लज्या जग रीति ॥ ३ ॥	गुरुप्रतीतिः निजहृदये जाता । त्यक्ता मनसा भयलज्जा जगतः रीतिश्च ॥३॥
सुनत रही महिमा सतसँग सार । निरख रही घट में नाम उजार ॥ ४ ॥	सत्संगसारस्य महिमाम् अश्रृण्वम् । संपश्यामि घटे नाम्नः प्रकाशम् ॥४॥
दरश गुरु परतक्ष चाह रही । मेहर हुई पास बुलाय लई ॥ ५ ॥	कामये गुरोः दर्शनं प्रत्यक्षम् । दयासंजाता आहवानिता अन्तिकम् ॥५॥
उसँग कर आरत गुरु धारी । करी गुरु मेहर दृष्टि भारी ॥ ६ ॥	उत्साहेन गुरो: आरति: धृता । गुरुः अतिकृपादृष्टिं कृतवान्॥६॥
प्रेम मेरे हिरदे दीन बढ़ाय । शब्द धुन हिये में दीन जगाय ॥ ७ ॥	मम हृदये प्रेम वर्धितवान् । शब्दनादं हृदये जागरितवान् ॥७ ॥
करम और भरम दिये सब त्याग । चरन गुरु नित बढ़ता अनुराग ॥ ८ ॥	सर्वे कर्मभ्रमा: त्यक्ताः। गुरुचरणयोः नित्यं अनुराग: वर्धते ॥८॥
सहसदल सुनती संख पुकार । गगन चढ़ पहुँची गुरु दरवार ॥ ६ ॥	सहसदलपदे शङ्खध्वनिम् श्रृणोमि । गगने आरुहय प्राप्तं गुरुधामम् (धाम)॥९॥
सुन्न धुन रारँग गाज रही। भँवर में मुरली बाज रही ॥१०॥	सुन्नपदे रारंगध्वनिः गर्जति । भँवरपदे वेणुनादं भवति ॥१०॥
सुनी धुन बीन अमरपुर जाय । पुरुष का दरशन अद्भुत पाय ॥११॥	अमरपुरं गत्वा अहितुण्डवाद्यध्वनिम् अश्रृण्वम् । पुरुषस्य अद्भुतदर्शनं प्राप्य ॥११॥
अलख में पहुँची लगन' बढ़ाय । अगमपुर दरशन कीना धाय ॥१२॥	अलखपदं प्राप्तं संवर्ध्य प्रेम। अगमपुरं धावित्वा दर्शनम् कृतम् ॥१२॥
लखा तिस ऊपर राधास्वामी धाम । सुरत ने पाया वहाँ बिसराम ॥१३॥	तस्योपरि रा धा/ध: स्व आ मी-धामम् (धाम) अपश्यम् । आत्मा तत्र विश्रामं प्राप्नोत्॥१३॥
कहूँ कस शोभा निज पुर' गाय ।	स्वगृहस्य शोभां कथं कथयेम् ।

सुरत मेरी छिन छिन रही शरमाय ॥१४॥	ममात्मा प्रतिपलं लज्जितः अस्ति ॥१४॥
मिले मोहि राधास्वामी पुरुष अनाम । किया मेरा राधास्वामी पूरन काम ॥१५॥	मया अनामी रा धा/धः स्व आ मी-पुरुषः प्राप्तः। रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः मम कार्य पूरितवान् ॥१५॥

॥शब्द ४६॥ हिये में गुरु परतीत बसी ।	
हिंदी	संस्कृत
हिये में गुरु परतीत बसी । प्रीति सँग सूरत शब्द रसी ॥१॥	हृदये गुरो: प्रतीति: अवसत् । प्रीत्या सह आत्मा शब्दे विलीनः जात:॥१॥
दरश गुरु कीन्हा सुरत सम्हार । सुनत गुरु बचन बढ़ा मन प्यार ॥२॥	आत्मावधानेन गुरुदर्शनं कृतम् । गुरो: वचनं श्रुत्वा मनसि प्रीतिः वर्धिता ॥२॥
बचन सतसँग के चित धारूँ । सरन पर जान प्रान वारूँ ॥३॥	सत्संगस्य वचनानि चित्ते धरामि। शरणे शक्तिप्राणं च समर्पयामि ॥३॥
कहूँ क्या महिमा सतगुरु गाय । दिया मेरा अद्भुत भाग जगाय ॥४॥	सद्गुरो: महिमागानं कथं करोमि । ममाद्भुतं भाग्यं अजागरयत् ॥४॥
प्रीति मेरे हिये में दृढ़ कर दीन । हुआ मन चरनन में लौलीन ॥५॥	मम हृदये प्रीतिं दृढ़कृता । अभूत् मनः चरणयोः लयलीयनम् ॥५॥
नित्त मैं गाऊँ महिमा सार । नाम गुरु सुमिरूँ धर कर प्यार ॥६॥	अहं नित्यं महिमासारं गायामि । गुरो:नाम स्मरामि प्रीतिं धार्य ॥६॥
एक चित होय भजन करती । सुरत धुन संग अधर चढ़ती ॥७॥	एकाग्रचित्तं भूत्वा भजनं करोमि । आत्मा ध्वनिना सह अधरे आरोहति ॥७॥
प्रेम नित हिये अंदर भरती । जोत लख आरत गुरु करती ॥८॥	प्रेम नित्यं हृदये पूरयामि । ज्योतिं वीक्ष्य गुरो: आरतिं करोमि ॥८॥
गगन चढ़ गुरु मूरत लखती । काल की कला यहाँ थकती ॥९॥	गगने आरुहय गुरो: स्वरूपं पश्यामि । कालकला अत्र श्रान्ता भवति ॥९॥
सुन्न में तिरबेनी न्हाती । रागनी सारँग सँग गाती ॥१०॥	सुन्ने त्रिवेण्यां स्नानं करोमि। सारङ्गवाद्येन सह रागिनीं गायामि ॥१०॥
भँवर में गई सोहँग धुन हेर । गुरु बल महाकाल हुआ ज़ेर ॥११॥	सोहंगध्वनिं श्रुत्वा भंवरपदे अगच्छम् । गुरो: बलात् महाकालः पराजितोऽभूत् ॥११॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय । नूर सत निरखा बीन बजाय ॥१२॥	अमरपुरे सत्तपुरुषस्य दर्शनं प्राप्य । अहितुण्डवाद्यं नदित्वा सन्तपुरुषस्य प्रकाशं दृष्टम् ॥१२॥
अधर चढ़ देखा अलख पसार । अगम में पहुंची सुरत सम्हार ॥ १३॥	अधरे आरुहय अलखविस्तारम् अपश्यम्। आत्मावधानेन सह अगमपुरे प्रविष्टः॥१३॥
परे तिस निरखा राधास्वामी देस।	तत: परे रा धा/ध: स्व आ मी-देशं ईक्षितम् ।

सुरत ने धारा अचरज भेस ॥ १४॥	आत्मा विलक्षण वेशं धृतवान् ॥१४॥
आरती पूरन कीन्ही आय । परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥१५॥	आरति: पूर्णा कृता आगत्य । परमगुरु-रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुं प्रसन्नं कृतवान् ॥१५॥

॥शब्द ४७॥ चरन गुरु प्रीति बढ़ाय रही	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु प्रीति बढ़ाय रही। नाम गुरु छिन छिन गाय रही ॥१॥	गुरुचरणयोः प्रीतिं वर्धे । गुरो: नाम प्रतिक्षणं गायामि ॥१॥
दरश गुरु तड़प रहा मन मोर । बिरह ने डाला घट में शोर ॥२॥	गुरुदर्शनाय मम मन: व्याकुलं भवति। विरह: घटे शब्दम् अकरोत्॥२॥
चरन गुरु नित विनती धारी । करो मोहि भौजल से पारी ॥३॥	गुरुचरणयो: नित्यं प्रार्थनां करोमि। माम् भवसागरात् पारं कुर्यात् ॥३॥
जगत की किरत रहा अटकाय । दरश बिन मन में रहा मुरझाय ॥४॥	जगतः विधानम् अवरोधयति । दर्शनं विना मनसि म्लानं भवामि ॥४॥
करो मोपै अस किरपा भारी । आरती गाऊँ सन्मुख आ री ॥५॥	मयि ईदृशीं महती कृपां कुर्यात्। अयि आरतिं गायामि समक्षमागत्य ॥५॥
सुरत मन लीजै आज सम्हार । शब्द सँग घट में करें बिहार ॥६॥	आत्मामनश्च रक्षेताम् अद्य । शब्देन साकं घटे विहारं कुरुताम्॥६॥
काल के दूत सतावें आय । लेव मोहि इन से बेग बचाय ॥७॥	कालदूताः आगत्य त्रासयन्ति। माम् एतेभ्यः शीघ्रं रक्षेत्॥७॥
रहे मन नाम संग लौलीन । होय नहिं माया का आधीन ॥८॥	मन: नाम्ना सह लयलीनं भवेत् । न भवेत् मायाधीनम् ॥८॥
चरन गुरु याद बढ़े दिन रात । प्रेम रस हिये में छिन छिन पात ॥९॥	अहर्निशं गुरुचरणयो: स्मरणं वर्धेत । प्रतिक्षणं हृदये प्रेमरसं प्राप्नुयाम् ॥९॥
धरूँ हिये अंतर गुरु परतीत । गहूँ मन चित से भक्ती रीत ॥१०॥	हृदन्तसि गुरो: प्रतीतिं धरामि। मनसा चित्तेन च सह भक्तिरीतिं गृहणामि॥१०॥
सरन दे कीजै पूरा काम । होय घट परघट राधास्वामी नाम ॥११॥	शरणं दत्वा कार्यं पूर्णं कुर्यात्। घटे रा धा/ध: स्व आ मी नाम प्रकटितं भवेत्॥११॥
रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय। भजन में नित नया आनँद पाय ॥१२॥	नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: स्तुतिं गायेयम् । भजने नित्यनवीनं आनंदं प्राप्नुयाम् ॥१२॥

प्रेम बानी भाग १ ॥शब्द ४८॥ हुआ घट परघट आज बिबेक	
हिंदी	संस्कृत
हुआ घट परघट आज बिबेक । गुरु की धारी दृढ़ कर टेक ॥१॥	अद्य घटे विवेकः प्रकटित: । गुरोः आश्रयं दार्ढ्येन धृतम्॥१॥
भेख में बहु दिन भटका खाय । मिला नहिं सार रहा पछताय ॥२॥	आडम्बरे बहुदिनपर्यंतं भ्रमितम् अभवम् । सारं न प्राप्तं पश्चातापं अकरवम् ॥२॥
करम मेरा धुर का जागा आय। चरन में राधास्वामी आया धाय ॥३॥	मम सर्वोच्चपदस्य भाग्यं जागरितवान् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: धावन् आगतवान् ॥३॥
बचन राधास्वामी सुने अथाह । सुरत मन वोहीं गए लुभाय ॥४॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: अगाधवचनानि अश्रृण्वम् । आत्मामनश्च हर्षितवन्तौ तदैव ॥४॥
समझ तब आाई करत बिचार । नहीं कोई सतगुरु सम संसार ॥५॥	तदा विचारं कुर्वन् अवबोधितवान् । न कोऽप्यन्य: सद्गुरो: समं संसारे ॥५॥
सरन राधास्वामी चित में धार । लिया मैं गुरु उपदेश सम्हार ॥६॥	रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं चेतसि धार्य । मयावधानेन गुरो: उपदेश: प्राप्त: ॥६॥
भजन नित करता सुरत सम्हार । निरखता घट में गुरु दीदार ॥७॥	नित्यं आत्मानं एकाग्रं कृत्वा भजामि । घटे गुरो: दर्शनं निरीक्षे॥७॥
सराहूँ नित नित भाग अपना । गुरू ने मेट दिया तपना ॥८॥	प्रतिदिनं निजभाग्यं प्रशंसामि। गुरु: तापं शान्तं कृतवान् ॥८॥
करम और भरम उड़ाय दिए । सुरत मन तुरत जगाय दिए ॥९॥	कर्मभ्रमाश्च उड्डयियता:। आत्मामनश्च शीघ्रम् उद्बोधितौ ॥९॥
भेष की रीत छुड़ाय दई । शब्द की प्रीति जगाय दई ॥१०॥	पाषण्डस्य सर्वरीतिभ्य: मुक्ति: प्रदत्ता। शब्दस्य प्रीतिः अजागरत् ॥१०॥
दई सब पाखँड कृत अब छोड़ । चरन गुरु ध्याता मन को जोड़ ॥११॥	अधुना सर्वपाषण्डस्य विधानानि त्यक्तानि । मन: संयोज्य गुरुचरणयोः ध्यायामि ॥११॥
जगत के भोग लगे खारी । चरन गुरु आसा मन धारी ॥१२॥	जगतः भोगाः कटु : अनुभूयन्ते। गुरुचरणयो आशा मनसि धृता ॥१२॥
पदारथ माया के न सुहायँ । नाम रस पीता अब घट माहिं ॥१३॥	मायया: पदार्थाः न रोचन्ते । अधुना घटे नाम्न: रसं पिबामि ॥१३॥

मेहर से गुरु ने दीन्ही दात । जाय नहिं महिमा उनकी गात ॥१४॥	गुरु: कृपया दानस्य उपहारं दत्तवान्। तेषां महिमा गातुं न शक्नोमि॥१४॥
आरती हित चित से ठानी। सरन राधास्वामी मन मानी ॥१५॥	आरति: हितेन चित्तेन सह धृता। रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं मनसि अङ्गीकृतम् ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ४९ ॥ धरी मन राधास्वामी की परतीत	
हिंदी	संस्कृत
धरी मन राधास्वामी की परतीत । गही मन सुरत शब्द की रीत ॥१॥	मनसि रा धा/ध: स्व आ मी प्रतीतिः धृता। मनसा आत्मनः शब्दस्य च रीतिः गृहीता ॥१॥
नाम राधास्वामी नित गाऊँ । रूप राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥२॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम नित्यं गायामि। रा धा/ध: स्व आ मी-स्वरूपं नित्यं ध्यायामि ॥२॥
चरन राधास्वामी हिये धरती । खोज धुन नित घट में करती ॥३॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदये धरामि । नित्यं घटे नादम् अन्वेषयामि ॥३॥
गुरू का निश्चय मन में धार । ऊपरी बरतूँ जग ब्यौहार ॥४॥	गुरोः निश्चयं मनसि धृत्वा । जगव्यवहारं करोमि बाह्यत: ॥४॥
टेक राधास्वामी चरन सम्हार । करम और भरम दिए सब टार ॥५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः आश्रयं धृत्वा । कर्मभ्रमाश्च सर्वे अपसारिता: ॥५॥
जगत जिव भरमों में अटके । भूल कर माया सँग भटके ॥६॥	जगत: जीवा : भ्रमेषु संलग्ना: । विस्मृत्य मायया साकं भ्रमिता: ॥६॥
सुनाऊँ गुरु महिमा उनको । जताऊँ प्रेम रीत सब को ॥७॥	तान् गुरुमहिमां श्रावयामि। सर्वान् प्रेम्ण: रीतिं बोधयामि॥७॥
न मानें भागहीन यह बात । नहीं जग लज्जा छोड़ी जात ॥८॥	भाग्यहीनाः न विश्वसन्ति अस्मिन् । जगत: लज्जां त्यक्तुं न क्षमा: ॥८॥
दया मोपै राधास्वामी धुर से कीन । चरन में प्रेम प्रीति मोहि दीन ॥९॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: मयि आदिपदात् दयां कृतवान्। चरणयोः मह्यं प्रेमप्रीतिं च दत्तवान् ॥९॥
दिया मोहि ऐसा अगम बिचार । गुरू और शब्द से होय उबार ॥१०॥	मह्यम् ईदृग् अगम विचारं दत्तवान् । गुरुणा शब्देन च भवति मुक्ति: ॥१०॥
धार यह समझ गहे चरना । संग जग जीवन नहिं करना ॥११॥	इदम् अवगम्य चरणयो:विश्वासं धृतम् । जगत: जीवानां संगं न करोमि ॥११॥
चाह सतसँग की नित उठती । बिरह दरशन की नित बढ़ती ॥१२॥	सत्संगस्य इच्छा नित्यं भवति। दर्शनस्य तपनं नित्यं वर्धते ॥१२॥
गुरू से करती यही पुकार । मिलै मोहि दरशन बारम्बार ॥१३॥	सद्गुरुं इयमेव याचना अस्ति। भूयोभूयः दर्शनं आप्नुयाम् ॥१३॥

बिघन नहिं रोकें मुझको आय । हिये में नित नई प्रीति जगाय ॥१४॥	विघ्नाः मां न अवरोधयन्तु। हृदये नित्यनवा प्रीतिः जागृयात् ॥१४॥
आरती गुरु सन्मुख धारूँ । कुटँब को अपने अब तारूँ ॥१५॥	गुरोः समक्षम् आरतिं धारयामि। स्वकुटुम्बम् अधुना तारयामि ॥१५॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय । रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय ॥१६॥	रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां प्रतिक्षणं प्राप्य । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: स्तुतिं गायामि ॥१६॥
भाग जग जीवन देव बढ़ाय । सरन राधास्वामी धारें आय ॥१७॥	जगत: जीवानां भाग्यानि वर्धेरन् । आगत्य रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं धरेयु:॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५० ॥ हिये में प्रीति नई जागी	
हिंदी	संस्कृत
हिये में प्रीति नई जागी । चरन गुरु आरत नई साजी ॥ १ ॥	हृदये नूतना प्रीतिः जागरिता । गुरुचरणयो: नवीना आरतिः सज्जिता ॥१॥
प्रेम की थाली हाथ लई । जुगत की जोत जगाय दई ॥ २ ॥	प्रेम्ण: स्थाली हस्तौ धृता । युक्त्या: ज्योतिः जागरिता ॥२॥
कुटँब सँग आरत गुरु धारी । हरख मन चित चरनन वारी ॥ ३ ॥	कुटुम्बेन सह गुरो: आरतिः धृता । हर्षितं भूत्वा मन: चित्तं च चरणाभ्याम् अर्पितौ ॥३॥
बचन गुरु नित्त सम्हारूँ आय । हिये में निस दिन प्रेम जगाय ॥ ४ ॥	गुरो: प्रवचनानि नित्यं संरक्षामि आगत्य। हृदये प्रतिदिनं प्रीतिं जागरयामि ॥४॥
संत मत महिमा नित गाता । सुरत और शब्द जुगत राता ॥ ५ ॥	संतमतमहिमां नित्यं गायामि । आत्माशब्दस्य च योगे लयलीन: भवामि ॥ ५॥
जगत में रहा तमोगुन छाय। जीव सब माया जाल फँसाय ॥ ६ ॥	जगति तमोगुणं व्याप्तम् अस्ति। सर्वे जीवा: मायापाशे आबद्धाः सन्ति॥६॥
संत मत भेद नहीं पावें । करम बस चौरासी धावें ॥ ७ ॥	संतमतस्य भेदं न आप्नुवन्ति । कर्मवशात् चतुरशीत्यां धावन्ति ॥७॥
मिले मोहि राधास्वामी गुरु पूरे । हुआ मैं उन चरनन धूरे ॥ ८ ॥	मया रा धा/ध: स्व आ मीपूर्णगुरुः प्राप्त: । अहं तस्य चरणयो: रेणु: संजात: ॥८॥
दया कर लीन्हा मोहि बचाय चरन में दीन्हीं प्रीति जगाय ॥ ९॥	दयां कृत्वा मां रक्षितवान् । चरणयोः प्रीतिं जागरितवान् ॥ ९॥
भरम और संशय दीन्हे खोय । मेहर से चरन सरन दई मोहि ॥ १० ॥	भ्रमसंशया; अपसारितवान्। कृपया माम् चरणशरणं दत्तवान् ॥१०॥
भाग मेरा जागा हुआ उजियार । दूर किया घट का सब अँधियार ॥ ११ ॥	मम भाग्यं जागरितं प्रकाशितं च। समस्त घटान्धकारं दूरं कृतवान् ॥११॥
रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय । जिऊँ नित राधास्वामी राधास्वामी गाय ॥१२॥	नित्यं रा धा/ध: स्व आ मीदयालो: गुणान् गायामि । नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी इति गीत्वा जीवामि ॥१२॥

॥ शब्द ५१ ॥ संत का परमारथ भारी	
हिंदी	संस्कृत
संत का परमारथ भारी । सुरत और शब्द जुगत न्यारी॥१॥	संतपुरुषाणां परमार्थ: महान् । आत्मन : शब्दस्य च युक्तिः पृथक् ॥१॥
दया राधास्वामी लीनी चीन्ह । हुई मैं हित चित्त से आधीन ॥२॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दया अभिज्ञाता। अहं हितचित्तेन च अधीना अभवम्॥२॥
बचन सुन प्रीति बढ़ाय रही । हिये में उमँग जगाय रही ॥३॥	प्रवचनं श्रुत्वा प्रीतिं वर्धे । हृदये उत्साहं जागरयामि ॥३॥
उठत नित चाहत दरशन की । टेक तजी देवी देवन की ॥४॥	नित्यं दर्शनस्य इच्छा जायते । देवीदेवानां आश्रयं त्यक्तम् ॥४॥
निरख माया का रँग मैला । छोड़ दई भोगन सँग केला ॥५॥	मायायाः मलिनं वर्णं पश्य । त्यक्तं भोगै: साकं विलासम् ॥५॥
चित्त में बस गया राधास्वामी नाम। इष्ट मैं धारा राधास्वामी धाम ॥६॥	चित्ते रा धा/ध: स्व आ मी-नाम समाहितम्। ममाभीष्ट: रा धा/ध: स्व आ मी-धाम: (धाम)॥६॥
जगत त्रिय तापन में तपता। करम बस माया सँग खपता ॥७॥	जगत् त्रयतापेषु तपति । कर्मवशात् मायया साकम् उद्विग्नं भवति ॥७॥
लगे नहिं कुछ भी उनके हाथ। विपत नित भोगें माया साथ ॥८॥	तेभ्य: न किमपि हस्तगतम् । मायया साकम् नित्यं विपत्तिम् अनुभवन्ति॥८॥
चरण में गुरु के जब आई। समझ मैं निरमल तब पाई॥९॥	यदा गुरुचरणयो: आगच्छम् । तदा अहं निर्मलबोधं आप्नवम् ॥९॥
शब्द का भेद सुना सारा। चित्त से सुरत जोग धारा ॥१०॥	शब्दस्य विशुद्धं भेदम् अश्रृण्वम् । चित्तेन सुरतयुक्तिम् अधारयम् ॥१०॥
भजन और सुमिरन नित करती। ध्यान गुरु चरनन में धरती ॥११॥	भजनस्मरणं च नित्यं करोमि । गुरुचरणयो: ध्यानं धारयामि॥११॥
सहज मन चरनन में लौलीन। बासना जग की सब तज दीन ॥१२॥	सहजमनः चरणयो: संलग्नं जातम् । जगतः सर्वाः वासना: त्यक्ताः ॥१२॥
उमँग कर गुरु आरत गाती। शब्द सँग सुरत गगन जाती॥१३॥	उत्साहेन गुरु आरतिं गायामि । शब्देन सह आत्मा गगनं याति ॥१३॥
सुनूँ नित घट में अनहद घोर ।	घटे नित्यं अनाहतघोषं श्रृणोमि ।

काल और माया बल दिया तोड़ ॥१४॥	कालमायायाश्च बलमनश्यम् ॥१४॥
मेहर अस राधास्वामी मोपै कीन । दई निज सरन देख मोहि दीन ॥१५॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालु मयि ईदृशी कृपां कृतवान् । माम् दीनं दृष्ट्वा निजशरणं दत्तवान् ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५२ ॥ हुई घट परमारथ की लाग	
हिंदी	संस्कृत
हुई घट परमारथ की लाग । सरन गुरु आया जग से भाग ॥१॥	घटे परमार्थस्य लगनं जातम् । गुरुशरणम् आयातः जगतः पलायनं कृत्वा॥१॥
भरमता जग में रहा बहु भाँत । ज़रा भी नहिं आई मन शांत ॥२॥	जगति नानाविधिभिः भ्रमितवान् । मनसि मनागपि शान्तिः न आगता ॥२॥
सुक्ख दुख सहता रहा दिन रात । चैन नहिं पाया जग जिव साथ ॥३॥	अहर्निशं सुखं दुःखं च असहे । जगद्जीवैः सह शान्तिं न आप्नवम्॥३॥
भाग से पाया पता निशान । मिला राधास्वामी संगत आन ॥४॥	प्रारब्धेन प्रभुसंकेतं प्राप्नवम् । रा धा/धः स्व आ मी-संगत्या सह अमिलेम् आगत्य॥४॥
बचन राधास्वामी सुन हरखाय । संत मत गुप्त भेद परखाय ॥५॥	रा धा/धः स्व आ मी-वचनं श्रुत्वा हर्षितवान् । संतमतस्य गुप्तभेदं ज्ञातवान् ॥५॥
चरन राधास्वामी धारी आस । हुआ मन जग से आज निरास ॥६॥	रा धा/धः स्व आ मी-चरणयोः आशां धृतवान् । मनः जगतः घोरनिराशां प्राप्तवान्॥६॥
कहूँ क्या राधास्वामी गुरु महिमा। शब्द की सिफ़ती क्या कहना ॥७॥	रा धा/धः स्व आ मी-गुरोः महिमां कथं वच्मि । शब्दगुणस्य कथनम् अनिर्वचनीयम् ॥७॥
नहीं कोइ जतन और संसार। होय जासे परघट जीव उधार ॥८॥	न काऽपि अन्या युक्तिः संसारे । यया स्पष्टतः जीवोद्धारं भवेत्॥८॥
शब्द धुन घट में होत सदा। सुनत ताहि होवत शाह गदा ॥९॥	घटे नित्यं शब्दध्वनिः भवति । यं श्रुत्वा राजा रंकः भवति ॥९॥
रूह की धार कहो उसको। नूर की बाढ़ कहो उसको ॥१०॥	सैवास्ति आत्मनः धारा । सैवास्ति प्रकाशस्य प्लावनवम्॥१०॥
सुरत से पकड़ चढ़ै कोई । अरश पर चढ़ जावे सोई ॥११॥	यो कोऽपि आत्मना आरुहयात्। गगने आरोहति सैव ॥११॥
गुरु की मेहर बिना यह भेद। न पावे सहे करम के खेद ॥१२॥	गुरोः कृपां विना एषः भेदः । नाप्नोति सहते कर्मसंतापं च॥१२॥
दया मोपै राधास्वामी करी अपार। जगत से लीना मोहि निकार ॥१३॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः मयि अपारदयां कृतवान्। जगतः माम् निस्तारितवान् ॥१३॥

चरण में अपने लिया लगाय। शब्द की जुक्ती दई बताय ॥१४॥	स्वचरणयो: संलग्नं कृतवान्। शब्दयुक्ते: कथनं कृतवान्॥१४॥
करूँ मैं निस दिन यह अभ्यास । चरन में राधास्वामी पाऊँ बास ॥१५॥	अहं प्रतिदिनं एतद् अभ्यासं करोमि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: निवासम् आप्नुयाम् ॥१५॥
नित्त गुरु आरत करूॅं सजाय। नाम राधास्वामी छिन छिन गाय ॥१६॥	नित्यं गुरो: आरतिं करोमि सज्जीकृत्य। रा धा/ध: स्व आ मी-नाम प्रतिक्षणं गायामि ॥१६॥
चरन में प्रेम भाव बढ़ता। सरन राधास्वामी दृढ़ करता ॥१७॥	चरणयो: प्रेमभाव: वर्धते । रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं सुदृढं करोमि ॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५३ ॥ दरस गुरु मन में होत हुलास	
हिंदी	संस्कृत
दरस गुरु मन में होत हुलास । चरन गुरु बढ़त नित्त बिस्वास ॥१॥	गुरुदर्शनेन मनसि उल्लासः भवति। गुरुचरणयोः विश्वासः वर्धते नित्यम्।।१।।
बचन सुन हिये मस्ती छाई। रूप गुरु चित्त में अति भाई ॥२॥	प्रवचनानि श्रुत्वा हृदये आनन्दं व्याप्तम्। गुरुस्वरुपं चित्ताय अति रोचते ।।२।।
देह से दूर देस रहती। सुरत से दरशन रस लेती ॥३॥	देहात् दूरदेशे वसामि। आत्मना दर्शनरसं प्राप्नोमि ।।३।।
छोट मुख क्या महिमा गाऊँ। चरन पर नित बल बल जाऊँ ॥४॥	कृपणमुखात् काम् महिमां गायेयम्। चरणयोः नित्यं समर्पयामि ।।४।।
मेहर की रीत कहूँ कस गाय। लिया मोहि आपहि चरन लगाय ॥५॥	कृपायाः रीतिं कथं कथयामि गीत्वा। भवान् स्वयमेव चरणयोः अयुङ्क्त ।।५।।
सुरत मन धुन भींज रहे। चरन गुरु अमृत पीव रहे ॥६॥	आत्मामनश्च ध्वनिरसे क्लिद्यतः। गुरुचरणयोः अमृतपानं कुरुतः ।।६।।
सुरत अस घट में चढ़ती नित्त । शब्द में अटक रहा मम चित्त ॥७॥	आत्मा एवं घटे आरोहति नित्यम्। मम चित्तं शब्दे संलग्नम् ।।७।।
देह की सुध बुध बिसरत जाय। भोग माया के गए भुलाए ॥८॥	देहस्य चेतना विस्मरति। मायायाः भोगाः विस्मृताः अभवन् ।।८।।
गुरु पै तन मन वार रही । सरन गुरु चित में धार रही ॥९॥	गुरौ तनुमनसी समर्पयामि। गुरुशरणं चित्ते धारयामि ।।९।।
जगत से रहा न कोई काम । बसा अब मन में राधास्वामी नाम ॥१०॥	अधुना जगतः न कोऽपि प्रयोजनम् । अधुना मनसि रा धा/धः स्व आ मी-नाम वसति।।१०।।
करम और भरम दिये सब छोड़। जगत से दीना नाता तोड़ ॥११॥	कर्मभ्रमाश्च सर्वे त्यक्ताः। जगतः संबंधं विच्छेदितम् ।।११।।
प्रीति गुरु नित्त बढ़ाऊँ आय। प्रेम अंग आरत करूँ बनाय ॥१२॥	गुरुप्रीतिं नित्यं वर्धे आगत्य। प्रेमाङ्गेन आरतिं करोमि ।।१२।।
थाल गुरु भक्ति लेकर हाथ । बिरह की जोत जगाऊँ साथ ॥१३॥	गुरुभक्तेः स्थालीं करौ गृहीत्वा। विरहस्य ज्योतिं प्रज्ज्वालयामि सहैव ।।१३।।
नित्त गुरु आरत गाती।	नित्यं गुरोआरतिं गायामि।

प्रेम रस होत सुरत माती ॥१४॥	प्रेमरसे आत्मा प्रमत्त: भवति।।१४।।
दया राधास्वामी पूरी कीन। मेहर से चरन सरन मोहि दीन ॥१५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: पूर्णदयां कृतवान्। कृपया चरणयोः शरणं मां दत्तवान् ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५४॥ परम पुर्ष राधास्वामी गुरु भारी	
हिंदी	संस्कृत
परम पुर्ष राधास्वामी गुरु भारी । चरन पर चार लोक वारी ॥१॥	परमपुरुष: रा धा/ध: स्व आ मी-गुरु: महान् । चरणयोः चतुर्लोका: समर्पिता: ॥१॥
सुनत गुरु महिमा उमँगा प्यार । करूँ कस दरशन गुरु दरबार ॥२॥	गुरोर्महिमा श्रृण्वन् प्रीतिः वर्धिता। गुरोः सदनस्य दर्शनं कथं करोमि ॥२॥
चरन में बिनती नित करता । भक्ति और भाव हिये बढ़ता ॥३॥	चरणयोः नित्यं प्रार्थनां करोमि । भक्ति: भावश्च हृदये वर्धते ॥३॥
परम गुरु राधास्वामी मेहर करी । चरन में सूरत मोड़ धरी ॥४॥	रा धा/ध: स्व आ मी परमगुरु: कृपां कृतवान् । आत्मानं प्रत्यावर्त्य चरणयो: धृतवान् ॥४॥
मिला तब अति सुन्दर औसर । चरन मे खैंचा किरपा कर ॥५॥	ततः अतिशोभनमवसरं प्राप्तम्। कृपां कृत्वा चरणयोः आकृष्टम् ॥५॥
दरश राधास्वामी जब कीना । सुरत मन हुए चरनन लीना ॥६॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दर्शनं यदा कृतम् । आत्मामनश्च चरणयो: संलीनौ जातौ॥६॥
करूँ नित आरत चित्त सम्हार । चरन में धर धर हित से प्यार ॥७॥	नित्यं चित्तेन आरतिं करोमि। चरणयो: हितेन प्रीतिं धार्य ॥७॥
भाव की थाली कर धारी । भक्ति की जोत जगी न्यारी ॥८॥	श्रद्धाया: स्थालिका हस्तयोः धृता । भक्ते अनुपमज्योति: जागरिता पृथक्॥८॥
उमँग कर आरत राधास्वामी गाय । लिया मैं अपना भाग जगाय ॥९॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: आरतिम् उल्लासेन गायामि। अहं निजभाग्यं अजागरयम् ॥९॥
काल से नाता तोड़ा झाड़ । हुआ गुरु चरनन मोर अधार ॥१०॥	कालत: सम्बन्धविच्छेदं कृतवान् पूर्णतः । गुरुचरणौ मम आश्रयम् अभूताम् ॥१०॥
सरन राधास्वामी धर कर चीत । जाऊँ घर काल करम को जीत ॥११॥	रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं चित्ते धार्य । कालकर्म च विजित्य गृहं गच्छामि ॥११॥
रहूँ मैं राधास्वामी के गुन गाय । नाम राधास्वामी नित्त जपाय ॥१२॥	अहं रा धा/ध: स्व आ मी-गुणान् गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-नाम नित्यं जपामि ॥१२॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५५ ॥ सहज में पाये गुरु दर्शन	
हिंदी	संस्कृत
सहज में पाये गुरु दर्शन। निरख गुरु लीला हरखा मन ॥ १ ॥	गुरुदर्शनं सहजे प्राप्तम्। गुरुलीलां संपश्य मन: हर्षितम्॥१॥
देख गुरु संगत अचरज प्रीति। हिये में धारी भक्ती रीति ॥ २ ॥	गुरोः संगतिं पश्य जायते अद्भुतप्रीति:। हृदये भक्तिरीतिः धृता ॥२॥
जुगत गुरु लागी अति प्यारी। प्रेम सँग सुरत शब्द धारी ॥ ३ ॥	गुरो: युक्ति: अति रोचते। प्रेम्णा सुरतशब्दं धृतम् ॥३॥
हुई मोहि अस हिरदे परतीत। नहीं कोई गुरु सम जग में मीत ॥ ४ ॥	मम हृदये ईदृशी प्रतीतिः जाता । गुरुसमं कोऽपि न मित्रं जगति ॥४॥
गुरू बिन जग जिव ग़ोता खाय। गये सब भौजल धार बहाय ॥ ५ ॥	गुरुं विना जगज्जीवा: निमज्जन्ति । सर्वे भवसागरस्य धारायां अप्रवहन् ॥५॥
नेम से गुरु बानी पढ़ते। चरन गुरु प्रीति नहीं धरते ॥ ६ ॥	नियमेन गुरुवाणीं पठन्ति । गुरुचरणयो: प्रीतिं न धारयन्ति ॥६॥
मोह और मान संग लिपटाय। जन्म सब बिरथा देत बहाय ॥ ७ ॥	मोहदंभेन च सह युञ्जन्ति। सर्वं जन्म वृथा यापयन्ति ॥७॥
गुरू ने कीनी मुझ पै मेहर। छुटाया काल करम का क़हर ॥ ८ ॥	गुरु: मयि कृपां कृतवान्। कालकर्मणो: संकटम् अमोचयत् ॥८॥
लिया मोहि सन्मुख आप बुलाय। सरन दे अचरज भाग जगाय ॥ ९॥	मां सम्मुखम् आह्वानितवान् भवान्। शरणं दत्वा अद्भुतभाग्यं जागरितवान्॥९॥
करूँ कस शुकराना गुरु का। भेद मोहि दीना धुर घर का ॥ १० ॥	कथं गुरुं प्रति कृतज्ञतां ज्ञापयामि । माम् सर्वोच्चपदस्य भेदं दत्तवान् ॥१०॥
उमँग की थाली लई सजाय। प्रेम की जोती दई जगाय ॥ ११ ॥	उत्साहस्य स्थाली सज्जिता । प्रेम्ण: ज्योतिं अजागरयत् ॥ ११ ॥
गुरू के सन्मुख आरत फेर। लिया मैं तन मन अपना घेर ॥ १२ ॥	गुरो: समक्षम् आरतिं कृत्वा । अहं स्वदेहं आत्मानं च परिक्राम्यत: ॥१२॥
नाम राधास्वामी हिये बसाय। रहूँ मैं छिन छिन याद बढ़ाय ॥ १३ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम हृदये धार्य । प्रतिपलं स्मरणं वर्धे ॥ १३॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५६ ॥ संत मत भेद सुनत मन जाग	
हिंदी	संस्कृत
संत मत भेद सुनत मन जाग । चरन में राधास्वामी के रहा लाग ॥१॥	संतमतस्य भेदं श्रुत्वा मन: जागरितवान्। रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: युनक्ति ॥१॥
जगत में भूल पड़ी चहुँ ओर । रहे सब करम भरम चित जोड़ ॥२॥	जगति सर्वत्र विभ्रमा: व्याप्यन्ते । सर्वे कर्मभ्रमेषु चित्तं संलग्नं कुर्वन्ति॥२॥
देव और देवी पूजें धाय । ख़बर निज घर की कोइ नहिं पाय॥ ३॥	धावित्वा देवीदेवानां च पूजां कुर्वन्ति । निजगृहस्य सङ्केतं केनापि न प्राप्तम् ॥३॥
साध सँग महिमा नहिं जानें। टेक पिछलों की मन ठानें ॥ ४ ॥	साधसंगते: महिमां न जानन्ति । मनसि पूर्वपरम्परा: धारयन्ति ॥४॥
भरमते तीरथ मंदिर में । खोज नहिं करते सुन दर में ॥ ५ ॥	तीर्थेषु देवालयेषु च भ्रमन्ति। सुन्नस्थले अन्वेषणं न कुर्वन्ति ॥५॥
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी गाय । लिया मोहि सन्मुख आप बुलाय ॥ ६ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-महिमागानं कथं करोमि । स्वयमेव मां सम्मुखं आहूतवान् ॥६॥
दया कर शब्द भेद दीना। सुरत मन हुए चरनन लीना ॥ ७ ॥	दयां कृत्वा शब्दभेदं प्रदत्तम् । आत्मामनश्च चरणयोः संलीनौ जातौ ॥७॥
नाम की महिमा गाई सार । दिया मोहि घट का भेद अपार ॥ ८ ॥	नाम्न: महिमासारं अगायत् । मह्यं घटस्य अपारभेदं दत्तम् ॥८॥
सरन राधास्वामी हिये धारी । करम और भरम कटे भारी ॥ ९ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं हृदये धृतम् । कर्मभ्रमा: छिन्नाधिका: ॥९॥
रहूँ नित संतन महिमा गाय । चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥१०॥	सतां महिमां नित्यं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदये धृतौ॥१०॥
जपूँ नित राधास्वामी सतगुरु नाम । नहीं कुछ और पूजन से काम ॥११॥	रा धा/ध: स्व आ मी-सद्गुरोः नाम नित्यं जपामि। न कोऽपि प्रयोजनम् अन्य पूजनेन ॥११॥
प्रेम सँग आरत गाता नित्त । चरन में राधास्वामी धरता चित ॥१२॥	प्रेम्णा सह नित्यं आरतिं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: चित्तं धारयामि ॥१२॥
करें राधास्वामी मेरी सार । दया कर देवें पार उतार ॥१३॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु : मम रक्षां कुर्यात् । दयां कृत्वा मां भवसागरात् तरेत् ॥१३॥

प्रीति रहे चरनन में बढ़ती । सुरत रहे नित घट में चढ़ती ॥१४॥	नित्यं चरणयोः प्रीतिः वर्धेत । नित्यम् आत्मा घटे आरोहणं कुर्यात् ॥१४॥
हुई मम हिरदे अस परतीत । जाऊँ मैं निज घर भौजल जीत ॥१५॥	मम हृदये ईदृशी प्रतीतिः जाता। भवसागरं जित्वा निजगृहं गच्छामि अहम् ॥१५॥
मेहर कर पकड़ा राधास्वामी हाथ । तजूँ नहिं अब मैं उनका साथ ॥१६॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः कृपया हस्तं गृहीतवान्। अधुना अहं तेषां सान्निध्यं न त्यजामि ॥१६॥
भाग मेरा जागा सरसा मन । पड़ी आय राधास्वामी गुरु चरनन ॥ १७॥	मम भाग्यं जागरितं मनः प्रफुल्लितम् । रा धा/धः स्व आ मी-गुरुचरणयोः समर्पिता अभवम्॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५७॥ आज मेरा जागा भाग	
हिंदी	संस्कृत
आज मेरा जागा भाग सही । उमँग मन राधास्वामी सरन गही ॥ १ ॥	अद्य मम भाग्यं जागरितं सम्यक्। उत्साहितमनसा रा धा/ध: स्व आ मी शरणं गृहीतम् ॥१॥
चरन राधास्वामी पकड़े आय। करम जुग जुग के लीन कटाय ॥ २ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ गृहीतौ आगत्य। युगयुगानां कर्माणि अच्छिन्दयन् ॥२॥
सरस मन राधास्वामी दरशन पाय । बिगस तन राधास्वामी महिमा गाय ॥३॥	प्रसन्नमनसा रा धा/ध: स्व आ मी-दर्शनं प्राप्नुवम्। प्रफुल्लितं भूत्वा रा धा/ध: स्व आ मी-महिमां अगायम् ॥३॥
काल का जाल बड़ा भारी । जीव सब घेर लिये सारी ॥ ४ ॥	कालस्य जालं अतिबृहद्। सर्वे जीवाः परिक्रामिता: पूर्णतः ॥४॥
भोग बहु माया लीन उपाय । लिया सब जीवन सहज फँसाय ॥ ५ ॥	मायया बहुभोगा: उत्पादिता:। सर्वे जीवाः सहजतया अपाशयन् ॥ ५ ॥
मेहर हुई मुझ पै राधास्वामी की । पाई मैं सुध बुध निज घर की ॥ ६ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालोः कृपा मयि अभवत्। अहं निजपदस्य परिचयं प्राप्नुवम्॥ ६ ॥
गुरू ने दीनी जुगत बताय । शब्द में छिन छिन सुरत लगाय ॥ ७ ॥	गुरुः युक्तिं कथितवान् । प्रतिपलं शब्दे आत्मानम् युङ्ग्धि ॥ ७ ॥
प्रेम सँग चालो गुरु की लार । होय तब झूठा जगत असार ॥ ८ ॥	प्रेम्णा गुरुणा सह चल । तदा जगत् मिथ्या नि:सारं च प्रतीतं भविष्यति ॥ ८ ॥
काल के फंदे अस तोड़ो। चरन में राधास्वामी मन जोड़ो ॥ ९ ॥	एवं कालस्य पाशं छिन्नं कुरु। रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः मनः युङ्ग्धि ॥ ९ ॥
उमँग मन जुगती लई सम्हार । चलूँ मैं गुरु सँग पंथ निहार ॥१०॥	उत्साहितमनसा युक्तिः संरक्षिता । अहं गुरुणा साकं पथं वीक्ष्य चलामि ॥१०॥
दया गुरु छूटें लोभ और काम । पाऊँ मैं एक दिन सतगुरु धाम ॥११॥	गुरोः दयया लोभकामौ मुञ्चेताम् । एकदिने सद्गुरोः धामं(धाम) प्राप्नुयाम् ॥११॥
नित्त गुरु चरन बढ़ाऊँ प्रीति ।	नित्यं गुरुचरणयोः प्रीतिं वर्धे।

बसाऊँ हिये में दृढ़ परतीत ॥१२॥	हृदये दृढ़ प्रतीतिं धारयामि ॥१२॥
करूँ गुरु आरत चित्त सम्हार । चढ़ाऊँ सूरत धुन की लार ॥ १३॥	नित्यं सुचित्तेन गुरो आरतिं करोमि। नादेन सह आत्मानम् आरोहयामि ॥ १३॥
सहसदल लखूँ जोत उजियार । शब्द धुन घंटा शंख सम्हार ॥१४॥	सहस्रदलपदे उज्ज्वला ज्योतिम् ईक्षे । घंटाशंखयो: शब्दध्वनिं अवधानेन शृणोमि॥१४॥
वहाँ से त्रिकुटी पहुँचूँ धाय । ओअँग सँग धुन मिरदंग बजाय ॥१५॥	तत्रत: त्रिकुटीपदं प्राप्नोमि धावित्वा। ओंकारनादेन सह मृदंगध्वने: वादनम् ॥१५॥
सुन्न में मानसरोवर न्हाय । गुफा धुन मुरली सुनिया जाय ॥१६॥	सुन्नपदे मानसरोवरे स्नात्वा। गुहां गत्वा वेणुनादम् अश्रृण्वम् ॥१६॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय । चरन में राधास्वामी रहूँ लिपटाय ॥१७॥	अमरपुरे सत्पुरुषस्य दर्शनं प्राप्तम्। रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः लिप्लिम्पामि ॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५८ ॥ चरन गुरु निश्चय धारा री	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु निश्चय धारा री। सरन पर तन मन वारा री ॥ १ ॥	अयि गुरुचरणयोः निश्चयं धृतम् । अयि शरणे कायामनश्च समर्पितौ॥ १ ॥
दया गुरु मोहि सँवारा री । सीस उन चरनन डारा री ॥ २ ॥	अयि गुरोः दया मां परिष्कृतवान् । अयि तेषां चरणयोः शिरः अर्पितः ॥ २ ॥
लगा मोहि सतसँग प्यारा री । बचन सुन भरम बिडारा री ॥ ३ ॥	अयि सतसंगः मां प्रियः प्रतीतः । अयि वचनं श्रुत्वा भ्रमम् अपसारितम्॥ ३ ॥
प्रीति गुरु लीन सम्हारा री । शब्द गुरु मिला सहारा री ॥ ४ ॥	अयि गुरोः प्रीतिः मया संरक्षिता। अयि शब्दगुरोः आश्रयः प्राप्तः॥ ४ ॥
मेहर गुरु काल निकारा री । गया तम हुआ उजियारा री ॥ ५ ॥	अयि गुरोः कृपया कालं अपसारितम्। अयि तमः गतं प्रकाशः अभूत् ॥ ५ ॥
लखा घट अंतर तारा री । शब्द नभ माहिं पुकारा री ॥ ६ ॥	अयि घटान्तसि प्रकाशकेन्द्रं दृष्टम् । अयि नभमध्ये शब्दाह्वानं कृतम् ॥ ६ ॥
जोति का रूप निहारा री । सुनी धुन घंटा सारा री ॥ ७ ॥	अयि ज्योतिरूपं निरीक्षितम्। अयि घंटास्वरस्य सारम् अश्रृण्वम् ॥ ७ ॥
गई चढ़ त्रिकुटी पारा री । धुनन सँग कीन बिहारा री ॥ ८ ॥	अयि त्रिकुटीपारमारोहणं कृतम्। अयि ध्वनिभिः सह विहारं कृतम् ॥ ८ ॥
सुन्न में बेनी न्हाई री । ररँग धुन सहज बजाई री ॥ ६ ॥	अयि सुन्नपदे त्रिवेण्यां स्नानं कृतम् । अयि रारंगध्वनेः वादनं कृतं सहजे ॥ ९॥
गुफा धुन मुरली गाई री । बीन सुन सतपुर आई री ॥ १० ॥	अयि गुहायां वेणोः गानं कृतम्। अयि अहितुण्डवाद्यं श्रुत्वा सत्तपुरमागतः ॥ १० ॥
आरती सतगुरु गाई री । चरन में राधास्वामी धाई री ॥ ११ ॥	अयि सद्गुरोः आरतेः गानं कृतम् । अयि रा धा/धः स्व आ मीचरणयोः धावितः ॥ ११ ॥
मेहर गुरु काज बनाई री । हुए स्वामी आप सहाई री ॥ १२ ॥	अयि गुरोः कृपया कार्यं सिद्धम् । अयि रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः स्वयमेव साहायकः अभूत् ॥१२ ॥
लिया गुरु आज रिझाई री । दया अब पूरी पाई री ॥ १३ ॥	अयि गुरुम् अद्य प्रसन्नं कृतवान्। अयि अधुना पूर्णदयां प्राप्तवान् ॥ १३ ॥
भेद सब दिया जनाई री । संत मत कहूँ बड़ाई री ॥ १४ ॥	अयि सर्वे भेदाः प्रकटिताः । अयि संतमतस्य प्रशंसां करोमि ॥१४॥
दास राधास्वामी कहाई री। सदा गुन राधास्वामी गाई री ॥१५॥	अयि रा धा/धः स्व आ मीदयालोः दासः अकथयत् ।

	अयि सदैव रा धा/धः स्व आ मी गुणान् अगायम् ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ५९ ॥ सरन गुरु आया बाल समान	
हिंदी	संस्कृत
सरन गुरु आया बाल समान। रूप गुरु देखत देह भुलान ॥ १ ॥	बालसमं गुरुशरणं आगतवान्। गुरूरूपमालोक्य देहं विस्मृतवान् ॥ १ ॥
चित्त दे सुनता धुन घम घम। निरखता जोति रूप चम चम ॥ २ ॥	चित्तेन घुमघुमेति घोषं श्रृणोमि । प्रकाशमानं ज्योतिस्वरूपं संपश्यामि॥ २ ॥
मगन होय खेलत गुरु के पास । चरन में हियरे बढ़त हुलास ॥ ३ ॥	तन्मयीभूय गुरोः समीपं क्रीडामि। चरणयो:युज्य हृदये उल्लास: वर्धते॥ ३ ॥
बाज रही जहाँ नित धुन मिरदंग । गरज सँग गाजत धुन ओअंग ॥ ४ ॥	यत्र नित्यं मृदंगस्य नादं वाद्यते। गर्जनेन साकं ओंकारध्वनि: नदति ॥ ४ ॥
देख रहा सुन में चन्द्र उजास । धुनन सँग खेलत हंसन पास ॥ ५ ॥	सुन्नपदे चंद्रप्रकाशम् ईक्षे। ध्वनिभि: साकं हंसानां समीपं क्रीडामि ॥ ५ ॥
महासुन घाटी चढ़ भागा। गुरु के चरन लार लागा ॥ ६ ॥	महासुन्नस्य उपत्यकामारुह्य धावितवान्। गुरुचरणाभ्यां सह अयुनजम् ॥ ६ ॥
भँवर में जागी धुन सोहंग। बाँसरी सुनता चित्त उमंग ॥ ७ ॥	भंवरपदे सोहंगनादं जागरितम्। उत्साहितचित्तेन वेणुनादं श्रृणोमि ॥ ७ ॥
सत्तपुर बाजत धुन बीना। अमी रस पुरुष दरश पीना ॥ ८ ॥	सत्तपुरे वीणाध्वनि: नदति। पुरुषदर्शनस्य अमृतरसं पिबामि ॥ ८ ॥
अलख और अगम रूप देखा। कहूँ कस मैं वहाँ का लेखा ॥ ९॥	अलखागमयो: स्वरूपम् अपश्यम् । तस्य स्थलस्य वृत्तान्तं कथं वच्मि ॥ ९॥
चरन राधास्वामी लागा धाय। भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥ १० ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो अयुनजं धावित्वा । युगयुगान्तरस्य भाग्यानि अजागरयन् ॥ १० ॥
मेहर राधास्वामी हुई भारी। चरन पर उनके बलिहारी ॥ ११ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो अतिकृपा जाता। तेषां चरणयोः समर्पयामि ॥ ११ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६० ॥ दास गुरु चेतन सँग चेता	
हिंदी	संस्कृत
दास गुरु चेतन सँग चेता। चरन राधास्वामी रस लेता ॥ १ ॥	गुरोः दासः चेतनैः सह चैतन्यमभवत् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः रसमनुभवति ॥१॥
सेव सतसँग की करता नित्त । बचन गुरु सुन कर उमँगत चित्त ॥ २ ॥	सतसंगस्य सेवां नित्यं करोति । गुरुवचनं श्रुत्वा चित्तम् उल्लसति ॥ २॥
सुरत और शब्द रीत धारी । करत मन नित करनी सारी ॥ ३ ॥	सुरतशब्दयो रीतिः धृता । मनः नित्यं पूर्णकृत्यानि करोति ॥३॥
उमँग कर जाती घट के कूप । अमी जल भरत गगरिया खूब ॥ ४ ॥	उल्लसितं भूत्वा घटस्य कूपे गच्छति। अमृतजलेन लघुघटं पूर्णं पूरयति पर्याप्तम् ॥ ४ ॥
चरन गुरु अमृत रस पीती । करम की मटकी हुई रीती ॥ ५ ॥	गुरुचरणयो: अमृतरसं पिबति । कर्मणां घट: रिक्तम् अभूत् ॥५॥
जगत से बढ़ता नित बैराग । धावता अंतर सहित अनुराग ॥ ६ ॥	जगत: नित्यं विराग: वर्धते । अनुरागेण सह अन्तः धावति ॥ ६ ॥
भरमते जग जिव माया संग । क़दर नहिं जानें संतन संग ॥ ७ ॥	जगज्जीवा: मायया सह भ्रमन्ति । संतपुरुषाणां संगते: मानं न जानन्ति ॥७॥
गुरू ने पलट दिया मेरा भाग। उठा अब सोता मनुआँ जाग ॥ ८ ॥	गुरु: मम भाग्यं विपरीतं कृतम् । अधुना सुप्तं मन: अजाग:॥ ८ ॥
करूँ नित सतसँग धर कर धीर । छाँटता रहूँ मैं नीर और छीर ॥ ९ ॥	धैर्यं धार्य नित्यं सतसंगं करोमि। पृथग्करोमि अहं जलं दुग्धञ्च ॥ ९ ॥
चरन गुरु हिये परतीत सम्हार । सरन दृढ़ करता तन मन वार ॥१०॥	गुरुचरणयोः प्रतीतिं हृदये संरक्ष्य। शरणे तनुमनसी समर्प्य दृढामि ॥१०॥
करूँ नित आरत गुरु चरना। प्रेम निज हिये अंतर भरना ॥ ११ ॥	गुरुचरणयो: आरतिं नित्यं करोमि। निजहृदन्तसि प्रेम पूरयामि ॥११ ॥
करें राधास्वामी मेरी सार । गाऊँ गुन उनका बारम्बार ॥१२॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: मां रक्षेत् । तेषां गुणान् वारं वारं गायामि ॥१२॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६१ ॥ सरन राधास्वामी जब आई	
हिंदी	संस्कृत
सरन राधास्वामी जब आई। चरन गुरु प्रीति हिये छाई ॥ १ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं आगता यदा। गुरुचरणयोः प्रीतिः हृदये व्याप्ता ॥ १॥
भूलने लागी जग ब्योहार। छोड़ दई माया सँग तकरार ॥ २ ॥	जगत: व्यवहारं विस्मरामि। मायया साकं कलहं त्यक्तम् ॥२॥
जगत सँग बहत रहा यह मन। उलट घर चाला सँग सज्जन ॥ ३ ॥	इदं मन: जगता साकं प्रवहति । सद्गुरुणा साकं उल्लुण्ट्य गृहम् अगच्छम् ॥३॥
सीख उन हिरदे में धारी। भक्ति की रीति लगी प्यारी ॥ ४ ॥	तेषां शिक्षा हृदि धृता । भक्त्याः रीतिः रुचिकरा प्रतीता ॥४॥
गुरू का सतसँग मन भाया। शब्द सँग घट भीतर धाया ॥ ५ ॥	गुरो : सत्संग: मनसि अरमत्। शब्देन साकं घटे अधावम् ॥ ५॥
सुनी जब महिमा सतगुरु देस। दूर हुए घट से काल कलेश ॥ ६ ॥	यदा सद्गुरुदेशस्य महिमां अश्रृण्वम् । घटात् कालक्लेशा:अपसरिता: ॥६॥
संत का परमारथ चित धार। चलूँ मैं सतगुरु मारग सार ॥ ७ ॥	संतपरमार्थं चेतसि धार्य । अहं सद्गुरोः सत्यमार्गे चलामि॥७॥
रोग और सोग सहे भारी। जगत सँग रहती दुखियारी ॥ ८ ॥	अति रोगशोकौ असहे । जगता साकं व्यथिता जाता॥ ८॥
नहीं कुछ पाया सुख जग में। भटक में गये दिन या मग में ॥ ९॥	जगति किमपि सुखं न प्राप्तम्। अस्मिन् पथि भ्रमन् दिनानि व्यतीतानि॥९॥
मिला मोहि जब से गुरु का संग । भींज रही सहज नाम के रंग ॥ १० ॥	यदात: गुरुसङ्गं प्राप्तं मया। नाम्न: रङ्गे क्लिद्यामि सहजे ॥१० ॥
सराहूँ नित नित भाग अपना। नाम राधास्वामी हिये जपना ॥ ११ ॥	नित्यं स्वभाग्यं प्रशंसामि। रा धा/ध: स्व आ मी-नाम हृदये जपामि॥११॥
करूँ नित आरत गुरु के पास। सुखी होय करती चरन निवास ॥ १२ ॥	नित्यं गुरोः समक्षं आरतिं करोमि। सुखीभूय चरणनिवासं करोमि॥१२॥
प्रेम से गुरु सेवा करती। उमँग हिये छिन छिन नई धरती ॥ १३ ॥	प्रेम्णा गुरो: सेवां करोमि। प्रतिपलं हृदये नवोत्साहं धारयामि ॥१३॥
दया राधास्वामी लेकर संग। शब्द में लगती सहित उमंग ॥१४॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: कृपया सह । उत्साहेन शब्दे युञ्जे॥१४॥

रहूँ अस निश्चय मन में धार। करें राधास्वामी मोर उधार ॥१५॥	इदं निश्चयं मनसि धारयामि। रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: माम् उद्धरेत् ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६२ ॥ पदम गुरु चरन हुआ मन दास	
हिंदी	
पदम गुरु चरन हुआ मन दास। शब्द सँग सूरत करत बिलास ॥ १ ॥	मन: गुरुचरणकमलयो: दासम् अभूत् । शब्देन सह आत्मा विलसति ॥ १ ॥
चरन गुरु प्रीति बढ़ी भारी। छोड़ दई मन कृत संसारी ॥ २ ॥	गुरुचरणयो: प्रीतिः अतिवर्धिता। मन: जगत: व्यापारं त्यक्तम् ॥ २ ॥
कुटुंब परिवार संग तज दीन। हुआ मन चरनन में लौलीन ॥ ३ ॥	कुटुम्ब परिवारेण सह अत्यजत्। मन: चरणयो: लीनं जातम् ॥ ३ ॥
राग रँग माया फीके लाग। चाह भोगन की दीनी त्याग ॥ ४ ॥	मायाया: रागरङ्गा: नीरसा: प्रतीयन्ते। भोगानाम् इच्छा त्यक्ता ॥ ४ ॥
संग राधास्वामी चित भाया। छोड़ जग चरनन में धाया ॥ ५ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-संग: चित्ताय रोचते। जगत् त्यक्त्वा चरणयो: अधावत्॥ ५ ॥
बचन गुरु सुनता दिन और रात। काल सँग जूझत मन कर हाथ ॥ ६ ॥	गुरोर्वचनं अहर्निशं श्रृणोमि। मनः वशं कृत्य कालेनसह संघर्षामि ॥ ६ ॥
शब्द धुन लागी घट प्यारी। चरन गुरु प्रीति लगी सारी ॥ ७ ॥	शब्दध्वनि: घटाय रोचते। गुरुचरणयो: प्रीति दार्ढ्येन संलग्ना ॥ ७ ॥
दरश गुरु देता तन मन वार। देखता घट में अजब बहार ॥ ८ ॥	गुरुदर्शने तनुमनश्च समर्पयामि। घटे अद्भुतशोभां पश्यामि॥ ८ ॥
सुरत रहे लागी दिन और रैन। भजन बिन नहिं पावत मन चैन ॥ ९॥	आत्मा अहर्निशं तल्लीन: भवति। मनः भजनं विना शान्तिं न प्राप्नोति ॥ ९॥
सरकती छिन छिन नभ की ओर। संख धुन घंटा डाला शोर ॥ १० ॥	प्रतिक्षणं नभं प्रति सरणं भवति। शंङ्खध्वनिः घंटा च कोलाहलं कुरुत: ॥ १० ॥
निरखता झिलमिल जोत अपार। बंक धस लखता गगन उजार ॥ ११ ॥	कंपमाना अपारज्योतिं निरीक्षे। बंकनालं प्रविश्य गगने प्रकाशम् ईक्षे ॥ ११ ॥
सुन्न में देखी हंसन भीड़। धोये सब कलमल बेनी तीर ॥ १२ ॥	सुन्नपदे हंसानां सम्मर्दः दृष्टः।

	त्रिवेणीतटे सर्वं कालुष्यं प्रक्षालितम् ॥ १२ ॥
महासुन घाटी चढ़ भागा। भँवर में नूर सूर जागा ॥ १३ ॥	महासुन्नोपत्यकायाम् आरुह्य अधावम्। भंवरगुहायां सूर्यप्रकाशः प्रसारितः ॥ १३ ॥
निरख अमरापुर पुरुष बिलास। पदम गुरु पाया चरन निवास ॥१४॥	सत्तलोके पुरुषस्य विलासं वीक्ष्य । गुरुचरणकमलयोः निवासं प्राप्तम् ॥१४॥
करी मोपै सतगुरु दया नवीन। भेद फिर आगे का मोहि दीन ॥१५॥	सद्गुरुणा मयि नवा दया कृता। पुनः तस्याग्रे लोकानां भेदं दत्तम् ॥१५॥
चढ़ाई सूरत उलटी धार। अलख लख किया अगम दरबार ॥१६॥	आत्मा विपरीतधारायाम् आरोहयितवान् । अलखं वीक्ष्य अगमसदने प्रविष्टः॥१६॥
भेद राधास्वामी पाया सार। हुई मैं उन चरनन बलिहार ॥१७॥	रा धा/धः स्व आ मी-सारस्य रहस्यं प्राप्तम्। अहं तेषां चरणौ बलिहारः अस्मि ॥१७॥
कहूँ क्या महिमा मेहर अपार। सरन दे लीना मोहि उबार ॥१८॥	अपारदयायाः महिमां कथं वच्मि। शरणं दत्त्वा मां उद्धारं कृतवान् ॥१८॥
भाग बड़ अपना क्या गाऊँ। चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥१९॥	निजसौभाग्यं कथं गायामि। रा धा/धः स्व आ मी-चरणौ नित्यं ध्यायामि ॥१९॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६३ ॥ शब्द गुरु सुन्दर रूप निहार	
हिंदी	संस्कृत
शब्द गुरु सुन्दर रूप निहार। दास घट अंतर जागा प्यार ॥ १ ॥	शब्दगुरोः शोभनं स्वरूपमवलोक्य। दासस्य घटान्तसि प्रेम जागरितम् ॥ १ ॥
भरमता जग में रहा चहुँ देस। भोगिया जहाँ तहाँ करम कलेश ॥ २ ॥	जगति चतुर्दिक्षु अभ्रमत्। यत्र तत्र कर्मक्लेशान् अभुङ्क्त ॥ २ ॥
भरम सँग लिपट रहे सब जीव। संत बिन नहिं पावें निज पीव ॥ ३ ॥	सर्वे जीवाः भ्रमेण सह लिप्लिम्पन्ति। संतं विना निजप्रियं न प्राप्नुवन्ति।॥ ३ ॥
खोजता आया गुरु दरबार। सुने राधास्वामी बचन अपार ॥ ४ ॥	अन्वेषयन् गुरोः सदनम् आगतवान्। रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो अपारवचनानि श्रुतानि॥ ४ ॥
सुनत हुआ महिमा देश मगन। खिला मानो घट में आज चमन ॥ ५ ॥	देशस्य महिमां संश्रुत्य मग्नः जात:। यथा घटे उपवनं विकसितम् ॥ ५ ॥
प्रीति मेरी गुरु चरनन बाढ़ी। आस सतपुर की मन धारी ॥ ६ ॥	मम प्रीतिः गुरुचरणयोः अवर्धत। सत्तपुरस्य आशा मनसि धृता ॥ ६ ॥
चरन राधास्वामी हिये वसाय। नाम उन जपत रहूँ गुन गाय ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदये धार्य। तेषां नाम जपामि गुणगानं कृत्वा ॥ ७ ॥
सुरत और शब्द जुगत ले सार। चढ़ाऊँ मन को धुन की लार ॥ ८ ॥	आत्माशब्दयो: युक्ते: सारं गृहीत्वा। मनः नादेन सह आरोहयामि ॥ ८ ॥
धरूँ गुरु मूरत हिरदे ध्यान। शब्द नभ धारूँ जोत निशान ॥ ९॥	गुरुस्वरूपं हृदये ध्यायामि। गगने ज्योतिचिह्ने शब्दं धारयामि ॥ ९॥
नित्त गुरु सतसँग करूँ बिलास। हिये में छिन छिन बढ़त हुलास ॥ १० ॥	नित्यगुरोः सत्संगे विलासं करोमि । हृदये प्रतिक्षणं उल्लास: वर्धते॥ १० ॥
आरती गाऊँ बिरह सम्हार। चरन गुरु उपजत नया पियार ॥ ११ ॥	विरहं संरक्ष्य आरतिं गायामि। गुरुचरणयोः नवप्रेम उद्भवति॥ ११ ॥
दया राधास्वामी नित चाहूँ। जीत मन माया घर जाऊँ ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां नित्यं वाञ्छामि। मनमायां जित्वा गृहं गच्छामि ॥ १२ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६४ ॥ भक्ति गुरु जागी कर सतसंग	
हिंदी	संस्कृत
भक्ति गुरु जागी कर सतसंग। छोड़ दई मन ने सभी उचंग ॥१॥	सत्संगं कृत्वा गुरुभक्तिः जागरिता। मनसा सर्वे विकारा: त्यक्ताः ॥१॥
भाव नित बढ़ता गुरु चरना । प्रीति नई घट अंतर भरना ॥२॥	गुरुचरणयोः भक्तिभावं नित्यं वर्धते । घटान्तसि नूतना प्रीतिं पूरयेत् ॥२॥
तोलता सतसँग बचन बिचार । खोलता जड़ सँग गाँठ सम्हार ॥३॥	सतसंगवचनान् विचार्य तोलयामि । जडेन सह ग्रन्थिं उद्घाटयामि अवधानेन॥३॥
रोलता नाम वस्तु हर बार। डोलता गुरु मूरत की लार ॥४॥	नाम्न: रटनं वारं वारं करोमि । गुरुमूर्तिं निकषा दोलयामि ॥४॥
जमा कर मन सूरत हिये माहिं । ध्यान में लाता *bg*सतगुरु पाँय ॥५॥	मन: आत्मानं च घटे एकाग्रं कृत्य । सद्गुरुचरणौ ध्याने आनयामि ॥५॥
सुना कर परमारथ बचना । कुटुंब को लाता गुरु सरना ॥६॥	परमार्थस्य वचनानि श्रावयित्वा। कुटुम्बं गुरुशरणे आनयामि ॥६॥
भरम में सब जग ग़ोता खाय । करम सँग गये कल धार बहाय ॥७॥	सर्वजगत् भ्रमे निमज्जनं करोति । कर्मणा सह कालधारायां अप्रवहन् ॥७॥
संग उन बहु दिन मोहि बीते । नफ़ा नहिं पाया रहे रीते ॥८॥	तैः साकं मम बहुदिनानि व्यतीतानि । लाभः न लब्धः रिक्तहस्तं आसम् ॥८॥
भाग बढ़ धुर का अब जागा । चरन राधास्वामी मन लागा ॥९॥	अधुना आदिपदस्य उत्तमभाग्यं जागरितम् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: मन: संलग्नम॥९॥
दया राधास्वामी अब पाई । प्रीति निज चरनन में आई ॥१०॥	सम्प्रति रा धा/ध: स्व आ मी-दया प्राप्ता । निजचरणयो: प्रीतिः आगता ॥१०॥
नाम रस मीठा लागा आय। काल कड़वाई दूर कराय ॥११॥	नामरस: मधुर : प्रतीत: आगत्य। कालस्य कटुतां दूरं अकारयत् ॥११॥

सुरत और शब्द लिया उपदेश । सुनी अब महिमा सतगुरु देश ॥१२॥	सुरतशब्दयो: उपदेशं गृहीतम्। सद्गुरुदेशस्य महिमा श्रुता अधुना ॥१२॥
करूँ नित गुरु मारग अभ्यास । चरन राधास्वामी धर बिस्वास ॥१३॥	नित्यं गुरो: मार्गस्य अभ्यासं करोमि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: विश्वासं धृत्वा ॥१३॥
भाव और भक्ति भोग लाई । आरती गुरु सन्मुख गाई ॥१४॥	भावभक्तेश्च भोगम् आनीता । गुरुसमक्षम् आरति: गीता ॥१४॥
चरन राधास्वामी हिये धारूँ । दया पर छिन छिन मन वारूँ ॥१५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदि धारयामि । दयायां प्रतिक्षणं मनः समर्पयामि॥१५॥

॥ शब्द ६५ ॥ खिली घट कँवलन की फुलवार	
हिन्दी	संस्कृत
खिली घट कँवलन की फुलवार । सुनत रही सूरत धुन झनकार ॥ १ ॥	घटे कमलोद्यानं विकसितम् । आत्मा झञ्कारस्य ध्वनिं श्रृणोति॥१॥
प्रेम की सींचत नित क्यारी । शब्द धुन लागी फुलवारी ॥ २ ॥	नित्यं प्रेम्णः पुष्पपंक्तिं सिंचति। शब्दध्वनेः उपवनं संजातम्॥२॥
बाड़ दृढ़ परतीत की साजी । घाट तज माया रही लाजी ॥ ३ ॥	दृढ़प्रतीत्याः प्राकारः सज्जितः । घट्टं त्यक्त्वा माया लज्जिता अभूत् ॥३॥
बचन की पौद रखाऊँ झाड़ । रहित 'के फल औ फूल सम्हार ॥ ४ ॥	प्रवचनस्य लघुपादपं स्थापयामि पूर्णतः। वैराग्यस्य फलपुष्पाणि संरक्षामि ॥४॥
करत मन माली सेवा नित्त । शब्द की डोरी सँग रहे चित्त ॥ ५ ॥	मनमाली नित्यं सेवां करोति। शब्दस्य वटितसूत्रं चित्तेन सह संसिक्तम्॥५॥
सुरत की बेल चढ़ी आकाश । सहसदलकँवल फोड़ किया बास ॥ ६ ॥	आत्मनः लता आकाशे अरोहत्। सहस्रदलपदं भेद्य न्यवसत् ॥६॥
गगन में सूरज गुल फूला । करम के कट गये सब सूला ॥ ७ ॥	गगने सूर्यपुष्पम् अविकसत्। कर्मणां सर्वशूलानि छिन्नानि ॥७॥
सुन्न में खिली चाँदनी सार । बजत रही जहाँ धुन रारंकार ॥ ८ ॥	सुन्नपदे उत्तमा चंद्रिका विकसिता। यत्र रारंगनादः अनदत् ॥८॥
भँवर मन बैठा जाय हुशियार । बाँसरी सोहँग संग सम्हार ॥ ६ ॥	भँवरपदे चतुरमनः स्थितम् । सोहंनादेन सह वेणुः संरक्षितः ॥९॥
अमरपुर अचरज धुन बाजी । हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी ॥१०॥	अमरपुरे अद्भुतध्वनिः अनदत्। सत्तपुरुषगुरुः प्रसन्नः अभूत् ॥१०॥
अलख में पहुँची धर कर प्यार । अगमपुर देखा वार और पार ॥११ ॥	अलखपदं प्राप्तं प्रेम धारयित्वा । अगमपुरं पूर्णतः अवलोकितम् ॥११॥
चरन में राधास्वामी पहुँची धाय । लई वहाँ आरत प्रेम सजाय ॥१२॥	रा धा/धः स्व आ मी-चरणयोः गतवान् धावित्वा । तत्र प्रेम्णा सज्जिता आरतिः कृताः॥१२॥
मगन हुई अचरज दरशन पाय । भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥१३॥	अद्भुद्दर्शनं प्राप्य तन्मयीभूता । युगयुगान्तरस्य भाग्यानि अजागरयन् ॥१३॥
अमी का सागर प्रेम सरूप । सुरत अब निरखा अद्भुत रूप ॥१४॥	अमृतस्य समुद्रं प्रेमस्वरूपम् । आत्मा अद्भुतरूपम् अपश्यत् अधुना ॥१४॥
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी धाम । गाऊँ मैं छिन छिन राधास्वामी नाम १५।	रा धा/धः स्व आ मी-धामस्य(धाम्नः) महिमां किं कथयामि। प्रतिक्षणं रा धा/धः स्व आ मी-नाम गायामि ॥१५॥
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी । सुरत हुई चरन सरन लीनी ॥१६॥	मयि रा धा/धः स्व आ मी-दयालु ईदृशी दयां कृतवान्। आत्मा चरणशरणे लीनः जातः ॥१६॥

॥ शब्द ६५ ॥ खिली घट कँवलन की फुलवार	
हिन्दी	संस्कृत
खिली घट कँवलन की फुलवार । सुनत रही सूरत धुन झनकार ॥ १ ॥	घटे कमलोद्यानं विकसितम् । आत्मा झञ्कारस्य ध्वनिं श्रृणोति॥१॥
प्रेम की सींचत नित क्यारी । शब्द धुन लागी फुलवारी ॥ २ ॥	नित्यं प्रेम्णः पुष्पपंक्तिं सिंचति। शब्दध्वनेः उपवनं संजातम्॥२॥
बाड़ दृढ़ परतीत की साजी । घाट तज माया रही लाजी ॥ ३ ॥	दृढ़प्रतीत्याः प्राकारः सज्जितः । घट्टं त्यक्त्वा माया लज्जिता अभूत् ॥३॥
बचन की पौद रखाऊँ झाड़ । रहित 'के फल औ फूल सम्हार ॥ ४ ॥	प्रवचनस्य लघुपादपं स्थापयामि पूर्णतः। वैराग्यस्य फलपुष्पाणि संरक्षामि ॥४॥
करत मन माली सेवा नित्त । शब्द की डोरी सँग रहे चित्त ॥ ५ ॥	मनमाली नित्यं सेवां करोति। शब्दस्य वटितसूत्रं चित्तेन सह संसिक्तम्॥५॥
सुरत की बेल चढ़ी आकाश । सहसदलकँवल फोड़ किया बास ॥ ६ ॥	आत्मनः लता आकाशे अरोहत्। सहस्रदलपदं भेद्य न्यवसत् ॥६॥
गगन में सूरज गुल फूला । करम के कट गये सब सूला ॥ ७ ॥	गगने सूर्यपुष्पम् अविकसत्। कर्मणां सर्वशूलानि छिन्नानि ॥७॥
सुन्न में खिली चाँदनी सार । बजत रही जहाँ धुन रारंकार ॥ ८ ॥	सुन्नपदे उत्तमा चंद्रिका विकसिता। यत्र रारंगनादः अनदत् ॥८॥
भँवर मन बैठा जाय हुशियार । बाँसरी सोहँग संग सम्हार ॥ ६ ॥	भँवरपदे चतुरमनः स्थितम् । सोहंनादेन सह वेणुः संरक्षितः ॥९॥
अमरपुर अचरज धुन बाजी । हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी ॥१०॥	अमरपुरे अद्भुतध्वनिः अनदत्। सत्तपुरुषगुरुः प्रसन्नः अभूत् ॥१०॥
अलख में पहुँची धर कर प्यार । अगमपुर देखा वार और पार ॥११ ॥	अलखपदं प्राप्तं प्रेम धारयित्वा । अगमपुरं पूर्णतः अवलोकितम् ॥११॥
चरन में राधास्वामी पहुँची धाय । लई वहाँ आरत प्रेम सजाय ॥१२॥	रा धा/धः स्व आ मी-चरणयोः गतवान् धावित्वा । तत्र प्रेम्णा सज्जिता आरतिः कृताः॥१२॥
मगन हुई अचरज दरशन पाय । भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥१३॥	अद्भुद्दर्शनं प्राप्य तन्मयीभूता । युगयुगान्तरस्य भाग्यानि अजागरयन् ॥१३॥
अमी का सागर प्रेम सरूप । सुरत अब निरखा अद्भुत रूप ॥१४॥	अमृतस्य समुद्रं प्रेमस्वरूपम् । आत्मा अद्भुतरूपम् अपश्यत् अधुना ॥१४॥
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी धाम । गाऊँ मैं छिन छिन राधास्वामी नाम १५।	रा धा/धः स्व आ मी-धामस्य(धाम्नः) महिमां किं कथयामि। प्रतिक्षणं रा धा/धः स्व आ मी-नाम गायामि ॥१५॥
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी । सुरत हुई चरन सरन लीनी ॥१६॥	मयि रा धा/धः स्व आ मी-दयालु ईदृशी दयां कृतवान्। आत्मा चरणशरणे लीनः जातः ॥१६॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६६ ॥ भाग मेरा अचरज जाग रहा	
हिंदी	संस्कृत
भाग मेरा अचरज जाग रहा।श्र चरन गुरु मनुआँ लाग रहा ॥१॥	मम अद्भुतभाग्यं जागर्ति । गुरुचरणयोः मन: लयलीनं भवति ॥१॥
दीन चित चरनन में आई। वचन गुरु सुन अति हरषाई ॥२॥	दीनचित्तेन चरणयो: आगता। गुरुवचनं श्रुत्वा अतिहर्षिता ॥२॥
देख गुरु चरनन नित्त बिलास । हिये में निसदिन बढ़त हुलास ॥३॥	गुरुचरणयो: नित्यं विलासं वीक्ष्य। हृदि प्रतिदिनं हर्ष: वर्धते ॥३॥
भाव जग लागा अब घटने । लगा मन सतसँग में जगने ॥४॥	जगत: प्रीतिः न्यूना जाता अधुना। मन: सत्संगे जागर्ति ॥४॥
करम और भरम हुए सब दूर । बजत नित घट में अनहद तूर ॥५॥	सर्वकर्मभ्रमा: दूरं जाता: । घटे नित्यं अनाहतशब्द: वाद्यते ॥५॥
गुरु की महिमा क्या गाऊँ । सरन गहि चरनन में धाऊ ॥६॥	गुरुमहिमां किं गायामि । शरणं गृहीत्वा चरणयो: धावामि ॥६॥
जगत में भूल भरम भारी । चाह सब माया की धारी ॥७॥	जगति त्रुटिभ्रमा: जाताधिका: । सर्वे मायाया इच्छां अधारयन् ॥७॥
बिसर गये निज घर को सब जीव । मिलें कस बिन सतगुरु सच पीव ॥८॥	सर्वे जीवाः निजगृहं विस्मृतवान् । सतगुरुं विना सत्यस्वामी कथं प्राप्येत् ॥८॥
सराहूँ छिन छिन भाग अपना । दूर हुआ माया सँग तपना ॥९॥	प्रतिक्षणं निजभाग्यं प्रशंसामि । मायया सह तपनं दूरम् अभूत् ॥९॥
गुरू और सतसँग मोहि भावें । भोग जग अब नहिं भरमावें ॥१०॥	गुरुः सत्संगश्च मह्यं रोचेते । जगत: भोगाः सम्प्रति न भ्रमयन्ति ॥१०॥
शब्द सँग सुरत रहे लागी । प्रीति गुरु चरनन सँग पागी ॥११॥	आत्मा शब्देन सह तल्लीन: भूत:। गुरुचरणाभ्यां सह प्रीतिः संलग्ना ॥११॥
नहीं गुरु सम प्रीतम कोई । नहीं सतसँग सम सँग कोई ॥१२॥	गुरुसमं कश्चिद् प्रियतमः नास्ति । सत्संगसमं कश्चिद् सङ्गः नास्ति ॥१२॥
शब्द सम नहिं कोइ मेलनहार । दरद बिन नहीं चितावनहार ॥१३॥	शब्दसमं कश्चिद् योजकः नास्ति। पीडां विना कश्चिद् उद्बोधकः नास्ति॥१३॥
संग गुरु बड़भागी पावे। उलट घर सहजहि चढ़ जावे ॥१४॥	भाग्यवान् गुरो: सङ्गं प्राप्नोति। प्रत्यावर्त्य सहजे गृहं अधिरोहति ॥१४॥

करी गुरु मुझ पर दया अपार दिया मोहि राधास्वामी नाम दयार॥१५॥	गुरुः मयि अपारदयां कृतवान्। दयां कृत्य मह्यम् रा धा/ध: स्व आ मी-नाम प्रदत्तम् ॥१५॥
रहूँ मैं नित उन शुकरगुजार । दया ले राधास्वामी उतरूँ पार ॥१६॥	अहं नित्यं तेषां कृतज्ञताज्ञापनं करोमि । रा धा/ध: स्व आ मी-दयां धार्य पारं गच्छामि ॥१६॥
चरन राधास्वामी आरत धार । तराऊँ सकल कुटुँब परिवार ॥१७॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः आरतिं धार्य । सर्वकुटुम्बपरिवारं च तारयामि ॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६७ ॥ कौन बिधि आरत गुरु धारूँ	
हिंदी	संस्कृत
कौन बिधि आरत गुरु धारूँ। कौन बिधि तन मन धन वारूँ ॥ १ ॥	केन विधिना गुरोः आरतिं धारयामि। केन विधिना तनुमनधनञ्च वारयामि ॥१॥
कौन बिधि मन को लेऊँ समझाय। कौन बिधि गुरु को लेऊँ रिझाय ॥ २ ॥	केन विधिना मनः बोधयामि। केन विधिना गुरुं प्रसन्नः करोमि॥२॥
कौन बिधि चित सतसँग राखूँ। कौन बिधि गुरु मूरत ताकूँ ॥ ३ ॥	केन विधिना चित्तं सत्संगे युनज्मि । केन विधिना गुरुस्वरूपं ईक्षे॥३॥
कौन बिधि मन निश्चल होई। कौन बिधि चित निरमल होई ॥ ४ ॥	केन विधिना मनः निश्चलं भवेत्। केन विधिना चित्तं निर्मलं भवेत्॥४॥
कौन बिधि ध्यान हिये में लाय। कौन बिधि लीजे शब्द जगाय ॥ ५ ॥	केन विधिना ध्यानं हृदि धरेयम्। केन विधिना शब्दं जागृयाम ॥५॥
कौन बिधि नाम चित्त में आय। कौन बिधि धुन सँग सुरत लगाय ॥ ६ ॥	केन विधिना नाम चित्ते आगच्छेत्। केन विधिना आत्मा नादेन सह युञ्ज्यात्॥६॥
कौन बिधि माया दल जीतूँ। कौन बिधि सीस काल रेतूँ ॥ ७ ॥	केन विधिना मायादलं जयेयम्। केन विधिना कालस्य शिरं छिन्द्यामि ॥७॥
कौन बिधि करम धरम छुटकाये। कौन बिधि दीजे भरम बहाय ॥ ८ ॥	केन विधिना कर्मधर्मश्च मुञ्चेताम्। केन विधिना भ्रमाः प्रवहेयुः॥८॥
प्रेम राधास्वामी चरनन धार। सरन राधास्वामी हिये सम्हार ॥ ९॥	रा धा/धः स्व आ मी-चरणयोः प्रेम धार्य। रा धा/धः स्व आ मी-शरणं हृदि संरक्ष॥९॥
करें जब राधास्वामी मेहर अपार। देयँ सब छिन में काज सँवार ॥ १० ॥	यदा रा धा/धः स्व आ मी-दयालु अपारकृपां कुर्यात्। क्षणे सर्वे कार्याणि संपन्नं कुर्यात्॥१०॥
सूरत मन चढ़ें गगन की ओर। शब्द धुन घट में सुन घनघोर ॥ ११ ॥	आत्मामनश्च आकाशं प्रति आरोहेताम्। घटे घूर्णयन् शब्दध्वनिं श्रुत्वा॥११॥
सहसदल घंटा संख सुनें। गगन में धुन मिरदंग गुनें ॥ १२ ॥	सहस्रदलपदे घंटाशंखं च श्रृणुतः। गगने मृदंगध्वनिं स्वीकरोतिः ॥१२॥
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हावे। भँवर में धुन सोहँग गावे ॥ १३ ॥	सुन्नपदे आरुह्य त्रिवेण्यां स्नाति । भवँरपदे सोहंगनादं गायति॥१३॥
सत्तपुर दरश पुरुष पावे।	सत्तपुरे पुरुषस्य दर्शनं प्राप्नोति।

अलखपुर अगम को चढ़ जावे ॥१४॥	अलखपुरागमपदे च आरोहति॥१४॥
परे तिस राधास्वामी चरन निहार। करूँ मैं आरत जाउँ बलिहार ॥१५॥	तदतिक्रम्य रा धा/धः स्व आ मी-चरणौ निरीक्ष्य । अहम् आरतिं करोमि समर्पयामि च ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६८ ॥ दरश गुरु जब से मैं कीना	
हिंदी	संस्कृत
दरश गुरु जब से मैं कीना । हुआ मन प्रेम रंग भीना ॥१॥	गुरुदर्शनं यदात: कृतवान् अहम् । मन: प्रेमरङ्गे रङ्जितवान् ॥१॥
प्रीति गुरु चरनन लाग रही । सुरत सतसँग में जाग रही ॥२॥	गुरुचरणयो: प्रीतिः युनक्ति। आत्मा सत्संगे जागर्ति॥२॥
हुआ मन संगत में लौलीन । चरन में गुरु के दीन अधीन ॥३॥	मनः सङ्गते लयलीनम् अभूत् । गुरुचरणयो: दीनाधीनश्च॥३॥
जगत जिव भूले करमन में । बरत और तीरथ में भरमें ॥४॥	जगज्जीवाः कर्मसु विस्मृताः सन्ति । व्रतेषु तीर्थेषु च भ्रमिता: सन्ति ॥४॥
पूजते देवी और देवा । मिला नहिं सुरत शब्द भेवा ॥५॥	देवीदेवानाञ्च पूजां कुर्वन्ति । सुरतशब्दयो: भेदं न प्राप्नुवन् ॥५॥
क़दर सतसँग की नहिं जानें । बचन सतगुरु का नहिं मानें ॥६॥	सत्संगमहिमां न जानन्ति । सतगुरुवचनानि न अनुसरन्ति ॥६॥
करम बस जनमें बारम्बार । भरम कर बहें चौरासी धार ॥७॥	कर्मवशात् वारं वारं जन्म गृह्णन्ति। भ्रमित्वा प्रवहन्ति चतुरशीतिः धारासु ॥७॥
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी गाय । लिया मोहि अपने चरन लगाय ॥८॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: महिमां कथं गायेयम् । मां निजचरणयोः अयुनक् ॥८॥
भाग मेरा धुर का दिया जगाय । प्रीति मेरे हिये में दई बसाय ॥९॥	मम आदिपदस्य भाग्यं अजागरयत्। मम हृदि प्रीतिं दृढ़ं कृतवान् ॥९॥
शब्द का भेद दिया पूरा । लगा घट बजने धुन तूरा ॥१०॥	शब्दस्य पूर्णभेदं दत्तवान्। घटे तूर्यध्वनि: नदति॥१०॥
प्रेम अँग आरत राधास्वामी धार । रहूँ मैं निस दिन चरन सम्हार ॥११॥	प्रेमांगेन रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: आरतिं धार्य। अहं प्रतिदिनं चरणौ संरक्षामि॥११॥
ध्यान गुरु धरती नैनन ताक । सुनत रहुँ घट में नित गुरु वाक ॥१२॥	नेत्राभ्यां वीक्ष्य गुरुध्यानं करोमि। घटे नित्यं गुरुवचनानि श्रृणोमि ॥१२॥

सुहावन रूप जोत ताकूँ । गगन चढ़ सार बेद भाखूँ ॥१३॥	शोभनं रूपज्योतिं पश्यामि । गगने आरुह्य वेदसारं कथयामि ॥१३॥
चाँदनी खिल गई दसवें द्वार । बजत जहाँ किंगरी सारँग सार ॥१४॥	दशमद्वारे चन्द्रिका विकसिता। यत्र उत्तम किंगरीसारंगी च नदतः ॥१४॥
भँवर में बंसी गाज रही । सत्तपुर बीना बाज रही ॥१५॥	भंवरगुहायां वेणुनादं घूर्णति । सत्तपुरे अहितुण्डवाद्यं नदति ॥१५॥
अलख और अगम नगर देखा । मूल पद राधास्वामी अब पेखा ॥१६॥	अलखअगमनगरं च अपश्यम्। इदानीं मूलपदं रा धा/धः स्व आ मी-धामं(धाम) अपश्यम् ॥१६॥
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार । दिया मोहि भौजल पार उतार ॥१७॥	रा धा/धः स्व आ मी-गुणान् वारं वारं गायामि। मां भवजलात् तारितवान् ॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ६९ ॥ सुनत गुरु महिमा जागी प्रीत	
हिंदी	संस्कृत
सुनत गुरु महिमा जागी प्रीत । छोड़ दई मन ने जग की रीत ॥ १ ॥	गुरुमहिमां श्रृण्वन् प्रीति अजाग: । मन: जगतः रीतिं अत्यजत् ॥ १ ॥
भजत गुरु नाम मिला आनंद । सुनत गुरु शब्द कटे भौ फंद ॥ २ ॥	गुरोः नाम्न: स्मरणेन आनन्द: प्राप्त: । गुरुशब्दं श्रृण्वन् भवपाशाः विच्छेदिताः ॥२॥
भटक में बहु दिन गए बीते । बस्तु नहिं पाई रहे रीते ॥ ३ ॥	भ्रमे बहुदिनानि व्यतीतानि । नाधि गतं पदार्थं रिक्ताः अभवन् ॥ ३॥
भेख और पंडित डाला जाल । हुए सब माया सँग पामाल ॥ ४ ॥	पाषण्डीपण्डिताश्च पाशं प्रसारितौ । मायया साकं सर्वे व्याकुला: जाताः॥४ ॥
भरम रहे आप अँधेरे माहिं । अटक रहे काल करम की छाँह ॥ ५ ॥	स्वयं अंधकारे भ्रमन्ति। कालकर्मणो: छायायां परिलग्ना: सन्ति ॥५॥
पुजावें सब से नीर पखान । न पाई सतपद की पहिचान ॥ ६ ॥	सर्वै: नीरपाषाणां पूजां कारयन्ति । सत्तपदस्य ज्ञानं न प्राप्तवान् ॥६॥
भरमते सब जिव चौरासी । कटै नहिं कबहीं जम फाँसी ॥ ७ ॥	सर्वे जीवा: चतुरशीत्यां भ्रमन्ति। कदापि विच्छिन्नं न भवति यमपाश:॥७॥
घटाया उन सँग भाग अपना । सहें नित करमन सँग तपना ॥ ८ ॥	तैः साकं स्वभाग्यं अल्पं कृतवान्। कर्मभि: साकं कष्टान्यनुभवन्ति नित्यम् ॥८॥
हुई मौपै अचरज दया अपार । लिया मोहि राधास्वामी आप निकार ॥९॥	मयि अद्भुदपारदया जाता। रा धा/ध: स्व आ मी दयालु: स्वयं मां निष्कासितवान्॥९॥
भेद निज घर का समझाया । शब्द का मारग दरसाया ॥१०॥	निजगृहस्य भेदं बोधितवान्। शब्दस्य मार्गं दर्शितवान् ॥१०॥
सुनाए बचन गहिर गंभीर । छुटाई तन मन की अब पीर ॥११॥	गहनगंभीराश्च प्रवचनानि श्रावितवान् । तनुमनसो: कष्टानि अपाकृतवान्॥११॥
करम और भरम दिए छुटकाय । भक्ति गुरु दीनी हिये बसाय ॥१२॥	कर्मभ्रमा: अपाकृतवान्। गुरुभक्तिः हृदये धारयितवान्॥१२॥
चरन में गुरु के बढ़ती प्रीत । धार लई मन ने भक्ती रीत ॥१३॥	गुरुचरणयोः प्रीतिः वर्धते। मनः भक्तिरीतिम् अधारयत्॥१३॥

सुरत मन अटके गुरु चरना । गावती छिन छिन गुरु महिमा ॥१४॥	आत्मामनश्च गुरुचरणयोः संलग्नौ। प्रतिक्षणं गुरुमहिमां गायामि ॥ १४ ॥
सरन गुरु लागी अब प्यारी । उतर गई पोट करम भारी ॥१५॥	गुरुशरणमधुना मह्यम् रोचते। महती कर्मपोटलिका अपसरिता ॥१५॥
करूँ गुरु आरत चित्त सम्हार । चरन पर राधास्वामी जाउँ बलिहार॥१६॥	गुरोआरतिं चित्तं संरक्ष्य करोमि। रा धा/ध: स्व आ मीचरणयोः समर्पयामि ॥१६॥
हुआ मेरे चित में दृढ़ बिस्वास । करें गुरु पूरन मेरी आस ॥१७॥	मम चित्ते दृढ़विश्वासं जातम् । गुरु: ममाशां पूर्णां करिष्यन्ति ॥१७॥
दया कर देहैं चरन में बास । करूँ मैं उन सँग नित्त बिलास ॥१८॥	दयां कृत्वा चरणयोः वासं दास्यन्ति । अहं नित्यं तै: सह विलासं करोमि॥१८॥
परम गुरु राधास्वामी किरपा धार । सरन दे मोहि उतारा पार ॥१९॥	परमगुरु: रा धा/ध: स्व आ मीकृपां धार्य। शरणं दत्वा माम् तारितवान् ॥१९॥
सहसदल देखूँ जोत सरूप । निरखता त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप ॥२०॥	सहस्रदलपदे ज्योतिस्वरूपं पश्यामि । त्रिकुटीपदे आरुह्य गुरुस्वरूपं निरूपयामि ॥२०॥
सुन्न में सुनती सारँग सार । भँवर में मुरली धुन झनकार ॥२१॥	सुन्नपदे सारंगवाद्यस्य उत्तमध्वनिं श्रृणोमि। भंवरगुहायां वेणुझंकार:॥२१॥
सत्तपुर पहुँची लगन सुधार । पुरुष का दरशन किया सम्हार ॥ २२ ॥	प्रीतिं परिष्कृत्य सत्तपुरं प्राप्तवान्। पुरुषस्य दर्शनं कृतम् अवधानेन॥२२॥
गई फिर अलख अगम के धाम । परम गुरु मिले अरूप अनाम ॥२३॥	ततः अलखागमयो: धामम्(धाम) गतवान्। अरूपानाम च परमगुरुं प्राप्तवान् ॥२३॥
आरती उन चरनन में धार । लिया मैं अपना जनम सुधार ॥२४॥	तेषां चरणयोः आरतिं धार्य । मया स्वजन्मपरिष्कृतं कृतम् ॥२४॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय । दिया मोहि सहजहि पार लगाय ॥२५॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयां वर्णितुं न शक्यते । मां सहजे पारं कृतवान् ॥२५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७० ॥ सुरत हुई मगन चरन रस पाय	
हिंदी	संस्कृत
सुरत हुई मगन चरन रस पाय । ध्यान गुरु मूरत हिये बसाय ॥ १ ॥	चरणानन्दरसं प्राप्य आत्मा निमग्नः जातः । गुरुस्वरूपस्य ध्यानं हृदि धारयति॥ १ ॥
कहूँ क्या महिमा अचरज रूप । बिराजे अगम लोक कुल भूप ॥ २ ॥	अद्भुतरूपस्य महिमां किं कथयामि । अगमलोके कुलभूप: विराजति॥ २ ॥
पिता प्यारे राधास्वामी दीनदयाल । दरस दे मुझको किया निहाल ॥ ३ ॥	प्रियपिता रा धा/ध: स्व आ मीदीनदयालु: । दर्शनं दत्त्वा मां कृतार्थं कृतवान्॥ ३ ॥
शब्द का भेद अगम्म अपार । दया कर दीना मुझ को सार ॥ ४ ॥	शब्दभेद: अगमः अपारः च । दयां कृत्वा मह्यम् सारं दत्तवान्॥ ४ ॥
हुआ मन चरनन पर बलिहार । सुरत हुई प्रेम रंग सरशार ॥ ५ ॥	मनः चरणयोः समर्पितम् अभूत् । आत्मा प्रेमरङ्गे निमज्जितः अभूत्॥ ५ ॥
जगत का देखा रंग असार। दई गुरु ऐसी दृष्टी डार ॥ ६ ॥	जगत: असाररूपं दृष्टम् । गुरुणा ईदृशी दृष्टिः प्रक्षेपिता ॥ ६ ॥
हुआ मन भोगन से बेज़ार । गुरू अस कीनी मेहर अपार ॥ ७ ॥	मनः भोगेभ्य: विरक्तम् अभूत् । गुरु ईदृशी महती कृपां कृतवान् ॥ ७ ॥
संग गुरु बढ़ता नित्त पियार । प्रेम की बरखा होत अपार ॥ ८ ॥	गुरुणा सह प्रीतिः नित्यं वर्धते । प्रेम्ण: अपारवर्षा भवति ॥ ८ ॥
दरस गुरु चूअत अमृत धार । बचन गुरु पावत मन आधार ॥ ९ ॥	गुरुदर्शनेन अमृतधारा स्रवति । गुरोर्वचनात् मनः स्थिरतां प्राप्नोति ॥ ९ ॥
दीन दिल गावत महिमा सार । शुकर कर हिये से बारम्बार ॥ १० ॥	दीनचित्तेन महिमासारं गायति । हृदयेन वारं वारं धन्यवादं कृत्वा ॥ १० ॥
मिले मोहि प्रीतम गुरु दातार । मेहर कर लीना गोद बिठार ॥ ११ ॥	प्रियतम: गुरुदाता मया प्राप्त:। कृपां कृत्वा अङ्के स्थानं दत्तवान्॥ ११ ॥
सरन मोहि निज चरनन में दीन । हुआ मन सतगुरु मौज अधीन ॥ १२ ॥	निजचरणयो: मां शरणं दत्तवान् । मनः सद्गुरो इच्छाधीनमभूत् ॥ १२ ॥
शब्द सँग सुरत चढ़ी आकाश । निरखिया सहसकँवल परकाश ॥ १३ ॥	शब्देन सहात्मा आकाशे आरोहितः । सहस्त्रकमलानां प्रकाशमपश्यत् ॥ १३ ॥
सुनत धुन घंटा मगन भई । संख धुन सूरत खैंच लई ॥ १४ ॥	घंटाध्वनिं श्रुत्वा लयलीनम् अभूत् । शङ्खध्वनिना आत्माकृष्टः ॥ १४ ॥

परे तिस सुनियाँ धुन ओंकार । हुआ गुरु मूरत संग पियार ॥ १५ ॥	ततः परे ओंकारध्वनिम् अश्रृण्वम् । गुरुस्वरूपेण सह प्रीतिः अभूत् ॥ १५ ॥
वहाँ से पहुँची सुन्न मँझार । बजत जहाँ किंगरी सारँग सार ॥ १६ ॥	तत्रतः सुन्नपदम् गतवान् । यत्र किंगरीसारङ्गवाद्ययोः उत्तमध्वनिः नदति ॥ १६ ॥
मानसर किए जाय अश्नान । लगा फिर सोहँग धुन से ध्यान ॥ १७ ॥	मानसरोवरमासाद्य स्नानं कृतम् । तदा सोहंगध्वनिना सह ध्यानं जातम् ॥ १७ ॥
भँवर चढ़ गई अमरपुर में । बीन धुन सुनी मधुर सुर में ॥ १८ ॥	भंवरपदे आरुह्य अमरपुरे गतवान् । अहितुण्डवाद्यस्य मधुरध्वनिम् अश्रृण्वम् ॥ १८ ॥
अलखपुर गई पुरुष धर ध्यान । अगमपुर पाया नाम निधान ॥ १९ ॥	पुरुषध्यानं धार्य अलखपुरं गतवान् । अगमपुरे नाम्नः निधानं प्राप्तवान् ॥ १९ ॥
परे तिस लखिया पुरुष अनाम । चरन में राधास्वामी दिया बिसराम ॥ २० ॥	ततः परे अनामपुरुषं दृष्टवान् । रा धा/धः स्व आ मीदयालवः स्वचरणयोः आश्रयं दत्तवन्तः ॥२०॥
आरती अद्भुत लीन सजाय । लिए मैं राधास्वामी खूब रिझाय ॥ २१ ॥	अद्भुतारतिः सज्जीकृता । मया रा धा/धः स्व आ मीदयालवः प्रसन्नाः कृताः पर्याप्तम् ॥२१॥
मेहर से काज हुआ पूरा । हुआ मैं चरन सरन धूरा ॥ २२ ॥	कृपया कार्यं पूर्णमभूत् । अहं चरणशरणयोः धूलिः जातः ॥ २२ ॥
संत बिन नहिं पावे यह धाम । रहे सब माया नारि गुलाम ॥ २३ ॥	संतपुरूषं विना एषः धामः(धाम) अलभ्यः । सर्वे मायानार्याः दासाः अभवन् ॥ २३ ॥
जगत में जो मत हैं जारी । न जावें काल देस पारी ॥ २४ ॥	जगति यानि मतानि प्रचलितानि । कालदेशात् पारं न यान्ति ॥ २४ ॥
नहीं कोई जाने संतन भेद । सहें सब काल करम के खेद ॥ २५ ॥	सतां भेदं कोऽपि न जानाति । सर्वे कालकर्मणोः दुःखानि सहन्ते॥ २५ ॥
भाग मेरा धुर का जागा आय । भेद राधास्वामी मत का पाय ॥ २६ ॥	मम सर्वोच्चपदस्य भाग्यं जागरितम् । रा धा/धः स्व आ मीमतस्य भेदं लब्धम् ॥ २६ ॥
सहज राधास्वामी सरन मिली । सुरत मेरी राधास्वामी चरन रली ॥ २७ ॥	सहजे रा धा/धः स्व आ मीदयालवः शरणं प्राप्तवान्। ममात्मा रा धा/धः स्व आ मीचरणयोः लयलीनः जातः ॥ २७ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७१ ॥ दरस गुरु पाया जागा भाग	
हिंदी	संस्कृत
दरस गुरु पाया जागा भाग । बढ़ा गुरु चरनन में अनुराग ॥ १ ॥	गुरुदर्शनं प्राप्तं भाग्यं जागरितम् । गुरुचरणयो: प्रीतिः वर्धिता ॥१॥
देख गुरु लीला बिगसत मन । चरन गुरु मेलत फूलत तन ॥ २ ॥	गुरुलीलां दृष्ट्वा मन: प्रसन्नं जातम्। गुरुचरणाभ्यां मेलनं कृत्वा देह: प्रफुल्लति ॥२॥
खेलती गुरु सन्मुख बहु भाँत । चरन रस पीवत पाई शांति ॥ ३ ॥	नानाविधिना गुरुसमक्षं खेलति । चरणामृतं पिबन् शान्तिः प्राप्ता ॥३॥
खिलाड़ी मनुआँ रहे भरमाय । होत गुरु सन्मुख झट ठहराय ॥ ४ ॥	क्रीडक: मन: भ्रामयति । गुरुसमक्षं शीघ्रं स्थिरं भवति॥४॥
करूँ क्या गुरु किरपा बरनन । सरन में जीव लगे तरनन ॥ ५ ॥	गुरुकृपाया: वर्णनं कथं करोमि। शरणागता: जीवानां उद्धारं भवति॥५॥
अभागी जीव न आवें पास । रहें नित जम के संग उदास ॥ ६ ॥	भाग्यहीना: जीवा: समीपं न आगच्छन्ति । यमेन साकं नित्यं खिन्ना: भवन्ति ॥६॥
करम बस नित दुख सुख पावें । बहुर चौरासी भरमावें ॥ ७ ॥	कर्मवशात् नित्यं दुःखं च सुखं च प्राप्नुवन्ति । पुनः चतुरशीत्याम् भ्रमन्ति ॥७॥
कहूँ क्या मात पिता महिमा । लगाया मुझको गुरु चरना ॥८॥	पितरौ महिमां कथं वच्मि। मां गुरुचरणयो: अयुनक् ॥८॥
बिपत सब कीनी मेरी दूर । काल और करम रहे सब झूर ॥ ९ ॥	मम सर्वाणि कष्टानि अपाकृतानि। कालकर्माणि च सर्वे ईर्ष्यन्ति॥९॥
मगन होय गुरु आरत करती । नाम राधास्वामी हिये धरती ॥ १० ॥	मग्नं भूत्वा गुरो आरतिं करोमि। रा धा/ध: स्व आ मीइति नाम हृदि धारयामि ॥ १० ॥
करूँ मैं बिनती बारम्बार । दया कर दीजै चरन अधार ॥ ११ ॥	अहं भूयोभूय: प्रार्थनां करोमि। दयां कृत्वा चरणाधारं ददातु॥११॥
नाम राधास्वामी नित भाखूँ । चरन राधास्वामी हिये राखूँ ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीइति नाम नित्यं स्मरामि । रा धा/ध: स्व आ मीचरणौ हृदि धारयामि ॥ १२ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७२ ॥ चरन गुरु हुआ हिये विस्वास	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु हुआ हिये बिस्वास । शब्द सँग करता नित्त बिलास ॥१॥	गुरुचरणयोः हृदि विश्वासः जातः। शब्देन सह नित्यं विलसनं करोमि ॥१॥
दूर से आया गुरु दरबार । चरन गुरु उमँगा हिरदे प्यार ॥२॥	दूरादागतं गुरुसदनम् । गुरुचरणयोः हृदि उल्लासः जातः ॥२॥
बचन गुरु सुन सुन चित धारे । लोभ मोह मन से सब टारे ॥३॥	गुरुवचनानि श्रावं श्रावं चित्ते धृतानि । सर्वे लोभमोहाश्च मनसः निःसारिताः ॥३॥
शब्द गुरु महिमा चित्त समाय । दिये सब काम और क्रोध बहाय ॥४॥	शब्दगुरोः महिमा चित्ते समविश्य। सर्वे कामक्रोधाः प्रवाहिताः ॥४॥
हिये में जागी नई परतीत । चरन गुरु बढ़ती दिन दिन प्रीत ॥५॥	हृदये नूतनाप्रीतिः जागरिता। गुरुचरणयोः प्रतिदिनं प्रीतिः वर्धते ॥५॥
लिया अब राधास्वामी पंथ सम्हार । शब्द गुरु डारूँ तन मन वार ॥६॥	अधुना रा धा/धः स्व आ मीपन्थः संरक्षितः । शब्दगुरौ तनुमनसी समर्पयामि ॥६॥
सुरत और शब्द जुगत को धार । धुनन की सुनता घट झनकार ॥७॥	सुरतशब्दस्य च युक्तिं धृत्वा । घटे ध्वनीनां झङ्कारं श्रृणोमि ॥७॥
देख गुरु भक्ती रीत नई । चरन हिये ध्यावत मगन भई ॥८॥	गुरुभक्त्याः नवरीतिं वीक्ष्य । हृदि चरणौ ध्यायन् हर्षितः॥८॥
सुनत राधास्वामी महिमा सार। चरन पर जाउँ हिये से बलिहार ॥९॥	रा धा/धः स्व आ मीमहिमासारं श्रृण्वन्। चरणयोः हृदयेन समर्पयामि ॥ ९ ॥
सरन गुरु को सके महिमा गाय । वार मन कोई बड़भागी पाय ॥१०॥	गुरोः शरणस्य महिमां कः गातुं शक्नोति । कश्चिद् भाग्यवान् मनः समर्प्य आप्नोति॥१०॥
चरन गुरु हुआ मन दीन अधीन। दया राधास्वामी लीनी चीन्ह ॥११॥	गुरुचरणयोः मनः दीनाधीनञ्च जातम् । रा धा/धः स्व आ मीदयालोः दया अभिज्ञाता ॥११॥
सरन गुरु नित हिये दृढ़ करता । धरम और करम भरम तजता ॥१२॥	गुरुशरणं नित्यं हृदि दृढ़ं करोमि । धर्मं च कर्मभ्रमौ त्यजामि ॥१२॥
भाग मेरा जागा गहिर गँभीर । चरन गुरु पकड़े धारी धीर ॥१३॥	मम गूढ़गम्भीरञ्च भाग्यं जागरितम् । गुरुचरणौ गृहीतौ धैर्यं धृतम्॥१३॥

पकड़ धुन चढ़ते मन सूरत । निरखते घट में गुरु मूरत ॥१४॥	ध्वनिं गृहीत्वा मनः आत्मा च आरोहत:। घटे गुरुस्वरूपं निरीक्षेते ॥१४॥
आरती नई बिध घट साजी । हुए गुरु राधास्वामी अब राज़ी ॥१५॥	घटे नवरीत्या आरति: सज्जिता । अधुना रा धा/ध: स्व आ मीगुरुः प्रसन्नः जातः ॥१५॥
प्रेम अँग गावत मन हुआ लीन। रूप रस पाया ज्यों जल मीन ॥१६॥	प्रेमांगेन गायन् मनः लयलीनं जातम् । मत्स्येन नीरवत् रूपं रसञ्च प्राप्तम् ॥१६॥
गाउँ नित राधास्वामी गुरु महिमा। दया पर छिन छिन जाउँ क़ुरबाँ ॥१७॥	नित्यं रा धा/ध: स्व आ मीगुरो: महिमां गायामि। प्रतिक्षणं दयायां समर्पयामि॥१७॥

क

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७३ ॥ सुरत मेरी चरनन लाग रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरत मेरी चरनन लाग रही । सरस धुन घट में बाज रही ॥१॥	मम आत्मा गुरुचरणयोः संलग्नः । घटे सरसध्वनिः वाद्यते ॥ १ ॥
सरन गुरु मन हुआ मेरा लीन । मौज गुरु लागा घट में चीन्ह ॥२॥	गुरुशरणे मम मनः लीनं जातम्। गुरो इच्छां घटे अभिजानामि ॥ २ ॥
चरन में दिन दिन बढ़ता प्यार । बचन और दरशन मोर अधार ॥३॥	चरणयोः प्रतिदिनं प्रीतिः वर्धते। वचनं दर्शनं च ममाधारौ स्तः ॥ ३ ॥
करूँ मैं सतसँग सहित उमंग । त्याग दई मन से सबही उचंग ॥४॥	उत्साहेन सत्संगं करोम्यहम् । मनसः सर्वे व्यसनाः त्यक्ताः ॥ ४ ॥
प्रेम की धारा रहे जारी । लगत गुरु सेवा अति प्यारी ॥५॥	प्रेम्णः धारा प्रवाहिता भवेत् । गुरुसेवा अति रोचते ॥ ५ ॥
सुमिरता राधास्वामी नाम अपार । दरस गुरु देता तन मन वार ॥६॥	रा धा/धः स्व आ मी इति अपार नाम स्मरामि । गुरुदर्शने तनुमनसी वारयामि ॥ ६ ॥
सुरत की डोरी चरनन लाय । रहूँ मैं नित गुरु प्रेम जगाय ॥७॥	आत्मनः सूत्रं चरणयोः संयुज्य । नित्यमहं गुरवे प्रेम जागरयामि ॥ ७ ॥
संत मत महिमा अपर अपार । नहीं कोइ जाने रहे सब वार ॥८॥	सन्तमतस्य महिमा अपरापारा । कश्चिद् न जानाति सर्वे अत्रैव स्थिताः ॥ ८ ॥
करम बस फँसे काल के जाल। हुए सब माया सँग बेहाल ॥९॥	कर्मवशात् अवरुद्धाः कालपाशे। सर्वे मायासाकं व्याकुला अभवन् ॥ ९॥
मेहर मोपै राधास्वामी अचरज कीन । दया कर चरन सरन मोहि दीन ॥१०॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः मयि अद्भुतकृपां कृतवान् । दयां कृत्वा मह्यं चरणशरणं दत्तवान् ॥ १० ॥
भाग मेरा सोता दीन जगाय । लिया मोहि अपने चरन लगाय ॥११॥	मम सुप्तं भाग्यं जागरितवान् । स्वचरणयोः माम् अयुनक् ॥ ११ ॥
दिया मोहि गुरु भक्ती आधार । शब्द का भेद लखाया सार ॥१२॥	माम् गुरुभक्त्याः आधारं दत्तवान्। शब्दस्य सुभेदं बोधितवान् ॥ १२ ॥
सरन गुरु क्या कहूँ महिमा सार । गही जिन उतरे भौजल पार ॥१३॥	गुरुशरणस्य महिमासारं किं वच्मि। येन गृहीतः भवसागरं लङ्घितः ॥ १३ ॥
सहज जो चाहे जीव उधार। पकड़ गुरु चरन होय जग पार ॥१४॥	यः जीवः सहजोद्धारं वाञ्छति। गुरुचरणौ गृहीत्वा भवसागराद् तरति ॥१४॥
शब्द गुरु धारे दृढ़ परतीत । चरन गुरु छिन छिन पाले प्रीत ॥१५॥	शब्दगुरौ दृढ़प्रतीतिं धारयेत्। गुरुचरणयोः प्रतिपलं प्रीतिं पालयेत् ॥१५॥

॥ शब्द ७४ ॥बढ़त मेरा दिन दिन गुरु अनुराग	
हिंदी	संस्कृत
बढ़त मेरा दिन दिन गुरु अनुराग । सरन गह रहे सुरत मन जाग ॥ १ ॥	मम गुरुप्रीतिः अनुदिनं वर्धते । शरणं प्राप्य आत्मामनश्च जागरितौ ॥१॥
हुई दृढ़ मन में गुरु परतीत । मेहर की परखी अचरज रीति ॥ २ ॥	मनसि गुरुप्रतीतिः दृढा जाता । कृपायाः अद्भुतरीतिम् दृष्टम् ॥ २ ॥
सेव गुरु करता सहित उमँग । चढ़त नित नया प्रेम का रंग ॥ ३ ॥	उल्लासेन साकं गुरुसेवां करोमि । नितनवीन प्रेम्ण: रंग: वर्धते ॥ ३ ॥
सुरत मन हुए चरन आधीन । ध्यान गुरु हुए रूप रस लीन ॥ ४ ॥	आत्मामनश्च चरणाधीनौ जातौ । गुरुध्यानेन स्वरूपानंदे लीनौ जातौ ॥ ४ ॥
शब्द धुन सुनत हरषता मन । अमी रस चाखत फूला तन ॥ ५ ॥	शब्दध्वनिं श्रुत्वा मनः हर्षति। अमृतरसम् आस्वादन् देह: प्रफुल्लति ॥ ५ ॥
चरन पर डारूँ तन मन वार । कुटुंब सब अपना लेऊँ तार ॥ ६ ॥	चरणयोः तनुमनसी वारयामि । सर्वं स्वकुटुम्बं तारयामि ॥ ६ ॥
दया गुरु महिमा बरनी न जाय । शुकर कर हर दम उन गुन गाय ॥ ७ ॥	गुरुदयायाः महिमां वर्णितुं न शक्यते । धन्यवादं कृत्य प्रतिपलं तेषां गुणान् गायामि ॥ ७ ॥
नगर में धूम पड़ी भारी । निकारें काम क्रोध झारी ॥ ८ ॥	नगरे धूमः जातः अधिकः । कामक्रोधौ सर्वथा निस्सारितौ ॥ ८ ॥
तिरिशना लोभ बिडारे जायँ । मोह मद मान नहीं ठहरायँ ॥ ६ ॥	तृष्णालोभौ अपसारितौ । मोहमदमाना अनवस्थिताः ॥ ९ ॥
होत अब गुरमुखता का राज । गुरू ने बख़्शा सगला साज ॥१०॥	अधुना गुरुमुखतायाः शासनं जातम् । गुरु: सकलाभरणानि दत्तवान् ॥ १० ॥
सुरत मन निरमल होय आये । चरन गुरु गुन गावत धाये ॥११॥	आत्मामनश्च निर्मलं भूत्वा आगतौ । गुरो: चरणगुणगायन् अधावताम् ॥ ११ ॥
सुनत चढ़ नभ में घंटा सार । ओंग सुन पहुँची गगन मँझार ॥१२॥	नभसि आरुह्य घंटासारं श्रृणोमि । ओड्कार ध्वनिं श्रुत्वा गगनमध्ये गता ॥ १२ ॥
बजत जहाँ सुन में सारंग सार । मानसर न्हाई मैल उतार ॥१३॥	वाद्यते यत्र सुन्ने सारङ्गसारम् । मलं प्रक्षाल्य मानसरसि स्नानं कृतम् ॥ १३ ॥
महासुन गई पार गुरु नाल । थकत रहा रस्ते में महाकाल ॥१४॥	गुरुणा साकं महासुन्नं पारं कृतम् । पथि महाकालः श्रान्तः अभूत् ॥ १४ ॥

भँवर में मुरली धुन चीन्हा । सत्तपुर दरश पुरुष लीन्हा ॥१५॥	भँवरगुहायां मुरली स्वरमभिज्ञातम् । सत्तलोके पुरुषस्य दर्शनं कृतम् ॥ १५ ॥
अलख और अगम को परसा जाय । परे तिस राधास्वामी दरशन पाय ॥१६॥	अलखागमलोकौ प्राप्तौ। तस्मात् परे रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: दर्शनं प्राप्तम् ॥ १६ ॥
भाग मेरा उदय हुआ भारी । चरन राधास्वामी सिर धारी ॥१७॥	उदितं मम महत् सौभाग्यम् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ शिरसि धृतम् ॥ १७ ॥
उमंग कर आरत साज सजाय । परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥१८॥	सोल्लासेन आरते: सजोपकरणानि सज्जितानि । रा धा/ध: स्व आ मी-परमगुरुं प्रसन्नं कृतवान्॥ १८ ॥
दया मोपै राधास्वामी कीन अपार दिया मोहि चरन सरन आधार ॥ १९ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: मयि अपारदयां कृतवान् । माम् चरणशरणाश्रयं दत्तवान्॥ १९ ॥
ऊँच से ऊँचा है यह धाम । संत बिन नहिं पावे बिसराम ॥२०॥	ऊर्ध्वादूर्ध्व: अस्ति एषः धामः । संतपुरुषं बिना विश्रामं न प्राप्नोति॥ २० ॥
रहा में जग में नीच नकार । दया कर राधास्वामी लीन उबार ॥२१॥	जगति अहं नीचः अकर्मण्यश्च आसम् । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः दयां कृत्वा निस्तारयत्॥२१॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७५ ॥ प्रीति नित बढ़ती गुरु चरनन	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति नित बढ़ती गुरु चरनन । हरख मन करता गुरु दरशन ॥ १॥	प्रीतिः नित्यं गुरुचरणयोः वर्धते । उल्लसितमनः करोति गुरुदर्शनम् ॥१॥
बचन गुरु हिरदे में धरता । प्रेम अँग नित्त मनन करता ॥ २ ॥	गुरुप्रवचनानि हृदि धारयामि। प्रेमाङ्गेन नित्यं मननं करोमि ॥२॥
समझ में आई भक्ती रीति । धार लई मन में दृढ़ परतीत ॥ ३ ॥	भक्त्याः रीतिम् अवगतम् । मनसि धृता दृढ़प्रतीतिः ॥३॥
उमँग अब उठती मन माहीं । सरन गह बैठूँ गुरु छाहीं ॥४॥	उल्लासमधुना मनसि जायते । शरणं गृहीत्वा गुरो: छायायां तिष्ठामि ॥४॥
मिले मोहि राधास्वामी गुरु साईं । वार देउँ तन मन उन पाईं ॥ ५ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-गुरुस्वामी मह्यं प्राप्त:। तेषां चरणयोः वारयामि तनुमनसी ॥५॥
दया बिन बनत न कोई काम । मेहर उन माँगूँ आठो जाम ॥ ६ ॥	दयां विना कोऽपि कर्म सिद्धं न भवति । तेषां दयां याचामि अष्टप्रहरेषु ॥६॥
शब्द बिन पंथ चला नहिं जाय । दिया मोहि सतगुरु भेद जनाय ॥ ७ ॥	शब्दं विना सुमार्गे चलितुं न शक्नोमि । सदगुरुः मां भेदं बोधितवान् ॥७॥
सुरत मन घेरो घट माहीं । मिटे तब काल करम छाहीं ॥ ८ ॥	आत्मामनश्च रुन्द्धयातां घटे । तदा विनश्यति कालकर्मणश्च छाया ॥८॥
करी अब राधास्वामी मेरी सहाय । प्रेम दे दीजे सुरत चढ़ाय ॥ ९ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः मम साहाय्यं कुर्यात् । प्रेम दत्वा आत्मानं आरोहेत् ॥९॥
रहूँ मैं जग में नित्त उदास । बिना तुम चरन नहीं कोई आस ॥१०॥	जगत्यहं नित्यं खिन्नं भवामि । भवतां चरणयोः विना न काऽपि आशा ॥१०॥
सुरत मन विनय करें तुम पास । दया कर दीजे गगन निवास ॥११॥	आत्मामनश्च प्रार्थनां कुरूतः तव समीपम्। दयां कृत्वा गगननिवासं दद्यात्॥११॥
दूत सब दीजे घट से टार । मेहर से लीजे मन को मार ॥१२॥	घटात् सर्वान् दूतान् अपसरेत्। दयां कृत्वा मनसः दमनं कुर्यात्॥१२॥
चढ़ूँ तब देखूँ घट परकाश । सहसदल जाऊँ पाऊँ बास ॥१३॥	तदारुह्य पश्यामि घटप्रकाशम्। सहस्रदलपदं गच्छामि प्राप्नोमि निवासं च॥१३॥
वहाँ से निरखूँ त्रिकुटी धाम ।	तत्रतः त्रिकुटीधामम्(धाम) निरीक्षे।

करूँ गुरु चरनन में विसराम ॥१४॥	गुरुचरणयोः विश्रामं करोमि ॥१४॥
सुन्न में हंसन संग मिलाप । करूँ और पाऊँ अपना आप ॥१५॥	सुन्नपदे हंसैः सह संयोगम्। करोमि स्वत्वं प्राप्नोमि च ॥१५॥
भँवर चढ़ सुनती सोहँग सार । लगा अब मुरली धुन से प्यार ॥१६॥	भंवरपदे आरुह्य श्रृणोमि सारंगसारम्। अधुना जातं वेणुनादेन साकं प्रेम ॥१६॥
सत्तपुर किये सतगुरु दरशन । परस कर सत्तपुरुष चरनन ॥ १७॥	सत्तपुरे सद्गुरोः दर्शनं कृतम्। सत्तपुरुषस्य चरणौ संस्पर्श्य॥ १७॥
चली फिर आगे को पग धार । अलख और अगम किया दीदार ॥१८॥	चरणौ धृत्वा अग्रे गतवान्। अलखागमयोः दर्शनं कृतम् ॥१८॥
वहाँ से राधास्वामी धाम गई । चरन में राधास्वामी मेल लई ॥१९॥	तत्रतः रा धा/ध: स्व आ मी-धामं(धाम) गतम्। रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः संलग्नम् ॥१९॥
रहूँ नित अस्तुत राधास्वामी गाय । दिया मेरा अचरज भाग जगाय ॥२०॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालोः स्तुतिं नित्यं गायामि। मम अद्भुतभाग्यं जागरितवान् ॥२०॥
उमँग अँग आरत वहाँ करती । नाम राधास्वामी नित भजती ॥२१॥	उत्साहेन तत्र आरतिं करोमि। रा धा/ध: स्व आ मी-नाम नित्यं स्मरामि ॥२१॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७६ ॥ सरन गुरु महिमा चित्त बसाय	
हिंदी	संस्कृत
सरन गुरु महिमा चित्त बसाय। सुरत मन निस दिन चरनन धाय ॥ १ ॥	गुरुशरणमहिमां चित्ते धार्य । सुरतमनश्च प्रतिदिनं चरणयो: धावत: ॥ १ ॥
चरन गुरु दृढ़ परतीत सम्हार। प्रीति हिये बढ़ती दिन दिन सार ॥ २ ॥	गुरुचरणयो: दृढप्रतीतिं संरक्ष्य । अनुदिनं हृदि प्रीतिसारं वर्धते ॥ २ ॥
चरन राधास्वामी आसा धार। जिऊँ मैं निस दिन चरन अधार ॥ ३ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीचरणयोः आशां धार्य। प्रतिदिनमहं चरणाधारे जीवामि ॥ ३ ॥
हिये में राधास्वामी बल धारूँ। दया ले काल करम जारूँ ॥ ४ ॥	हृदये रा धा/ध: स्व आ मी-बलं धारयामि । दयामादाय कालकर्माणि दहामि ॥ ४ ॥
भरोसा राधास्वामी हिरदे धार। मौज गुरु हर दम रहूँ निहार ॥ ५ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-विश्वासं हृदये धार्य । गुरो: ईप्सितं प्रतिपलं पश्यामि ॥ ५ ॥
निरख कर चलती मन की चाल। परख कर काटूँ माया जाल ॥ ६ ॥	निरीक्ष्य मनसा व्यवहारं करोमि । परीक्ष्य मायाजालं कर्तयामि ॥ ६ ॥
सहज में छोड़ूँ क्रोध और काम। जपूँ नित हिये में राधास्वामी नाम ॥ ७ ॥	क्रोधकामञ्च सहजे त्यजामि। हृदि नित्यं रा धा/ध: स्व आ मीनाम जपामि ॥ ७ ॥
लोभ और मोह विसार दई। अहँग तज छोड़ी मानमई ॥ ८ ॥	लोभं मोहञ्च विस्मृतवन्तौ । अहंकारं त्यक्त्वा ममत्वं त्यक्तम् ॥ ८ ॥
दया राधास्वामी लेकर साथ। काल और मन का कूटूँ माथ ॥ ९ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयया साकम्। कालकर्मणोः मस्तकं कुट्टयामि ॥ ९ ॥
परख कर पकड़ गुरु बचना। चाल मन माया नित तजना ॥१०॥	गुरुवचनानि परीक्ष्य गृहाण। मनमाययो: व्यवहारं नित्यं त्यज ॥१०॥
डरत रहँ सतगुरु से हर दम। चरन में राखूँ चित कर सम ॥११॥	सद्गुरोः प्रतिपलं बिभेमि। चरणयो: चित्तं शान्तं कृत्वा धारयामि ॥११॥
गुरु की आज्ञा सिर पर धार। चलूँ नित बचन बिचार बिचार ॥१२॥	गुरोः आज्ञां शिरसि धार्य। नित्यं विचार्य विचार्य वचने चलामि ॥१२॥
गाऊँ उन महिमा दिन और रात। करूँ उन सेवा तन मन साथ ॥१३॥	अहर्निशं तेषां महिमां गायामि। तनुमनोभ्यां तेषां सेवां करोमि ॥१३॥
शुकर कर हिरदे से हर बार। चरन पर जाऊँ नित बलिहार ॥१४॥	हृदयेन पुनर्पुनः कृतज्ञताज्ञापनं करोमि। चरणयोः नित्यं समर्पयामि ॥१४॥

उमँग कर नित आरत करती। प्रेम राधास्वामी हिये भरती ॥१५॥	सोल्लासेन नित्यारतिं करोमि। रा धा/ध: स्व आ मीदयालो: प्रेम्णा हृदयं पूरयामि ॥१५॥
पिरेमी जन सँग गाऊँ राग। बढ़त मेरे दिन दिन हिये अनुराग ॥१६॥	प्रियजनेन सह रागं गायामि। मम हृदये प्रतिदिनं अनुरागः वर्धते॥१६॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय। ध्यान गुरु चरनन रहँ समाय ॥१७॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयां प्रतिक्षणं प्राप्य। गुरुचरणयो: ध्याने लीनः भवामि॥१७॥
शब्द धुन बजती नभ की ओर। गगन चढ़ गई रैन हुआ भोर ॥१८॥	शब्दध्वनि: नभं प्रति नदति। गगने अरोहत् रात्रि: प्रातः काले परिवर्तिता ॥१८॥
चाँदनी खिली सुन्न के माहिं। भँवर चढ़ मिटी काल की दायँ ॥१९॥	सुन्नपदे चन्द्रिका विकसिता। भंवरमारुहय कालस्य परिपेषणं समाप्तम् ॥१९॥
सुनी धुन बीना सतपुर जाय। मगन हुई दरशन सतपुर्ष पाय ॥२०॥	सत्तपुरं गत्वा वीणाध्वनिं श्रुतम्। सत्तपुरुषस्य दर्शनं प्राप्य मग्न अभवम्॥२०॥
अलख चढ़ अगम से कीना प्यार। अनामी पुरुष किया दीदार ॥२१॥	अलखमारुहय अगमपुरुषेण सह प्रीतिः कृता। अनामीपुरुषस्य दर्शनं कृतम् ॥२१॥
परख कर सुरत शब्द निज धार। करूँ गुरु आरत जाउँ बलिहार ॥२२॥	सुरतशब्दयो: निजधारं परीक्ष्य। गुरो आरतिं करोमि समर्पयामि च ॥२२॥
दया राधास्वामी कीन अपार। हुई मस्तानी रूप निहार ॥२३॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालु अपारदयां कृतवान्। रूपं निरीक्ष्य उन्मत्तः अभवम् ॥२३॥
बेद नहिं जाने यह घर बार। रहे सब जोगी ज्ञानी वार ॥२४॥	वेद: इमं धामं(धाम) न जानाति । सर्वे योगीज्ञानीपुरुषाः अत्रैव सन्ति॥२४॥
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय। मगन हुई मैं यह निज घर पाय ॥२५॥	रा धा/ध: स्व आ मी दयालु: मम भाग्यं जागरितवान्। इदं निजगृहं प्राप्य अहं मग्नः अभवम्॥२५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७७ ॥ जगत का मैला देखा रंग	
हिंदी	संस्कृत
जगत का मैला देखा रंग । हुआ मन काल करम से तंग ॥१॥	जगतः मलिनं रङ्गम् अपश्यम् । मनः कालकर्मभ्याम् उद्विग्नम् अभवत् ॥१॥
बहुत दिन भरमा भरम अनेक । देव किरतम की धारी टेक ॥२॥	बहुदिनपर्यन्तं अनेकभ्रमेषु अभ्रमम् । कृत्रिमदेवस्य शरणम् गृहीतम् ॥२॥
नहीं कुछ परमारथ पाया । करम फल हाथ नहीं आया ॥३॥	न किमपि परमार्थं प्राप्तम् । कर्मफलं हस्तगतं न जातम्॥३॥
सुनी जब राधास्वामी मत महिमा । गहे मन चित से गुरु चरना ॥४॥	राधास्वामीमतस्य महिमा यदा श्रुता । मनसा चित्तेन च गुरुचरणौ गृहीतौ ॥४॥
देख सतसँग की अजब बहार । दिया मैं तन मन गुरु पर वार ॥५॥	सत्संगस्य अद्भुतसौंदर्यं दृष्ट्वा। मया तनुमनसी गुरौ समर्पितौ ॥५॥
सुरत और शब्द जुगत धारी । कटे सब करम भरम भारी ॥६॥	आत्मनः शब्दस्य च युक्तिः धृता । सर्वे गुरुतमा: कर्मभ्रमा: विच्छिन्ना: ॥६॥
लगा अब घट में रस लेने । सरन गुरु हित चित से गहने ॥७॥	अधुना घटे रसानन्दम् अनुभवामि । गुरुशरणं गृहीतं हितचित्तेन च ॥७॥
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी नाम । करत मन सुमिरन हुआ निष्काम ॥८॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम्नः महिमां किं कथयामि। स्मरणं कुर्वन् मन: निष्कामं जातम् ॥८॥
जगत की आसा दीनी त्याग । बढ़त गुरु सतसँग में अनुराग ॥९॥	जगतः आशा त्यक्ता । गुरोः सत्संगे प्रेम वर्धते॥९॥
सार रस सतसँग पिऊँ दिन रात । मेहर गुरु महिमा कही न जात ॥१०॥	अहर्निशं सत्संगस्य साररसं पिबामि । गुरुकृपाया: महिमां कथितुं न शक्नोमि ॥१०॥
हुआ राधास्वामी चरनन बिस्वास । करें वे पूरन एक दिन आस ॥११॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः विश्वासः जातः । एकदिने स: आशां पूर्णं करिष्यति ॥११॥
चरन बिन और न कुछ चाहूँ । नाम राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥१२॥	चरणौ विना अपरं किमपि न वाञ्छामि । नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी-नाम ध्यायामि ॥१२॥
चढ़ूँ अब घट में नभ धुन हेर । काल और करम हुए दोउ ज़ेर ॥१३॥	अधुना घटे आरोहामि गगननादं ध्यात्वा । कालकर्म च द्वौ पराजितौ ॥१३॥

गगन चढ़ गुरु का देख समाज । करें जहाँ मन सूरत घट राज ॥१४॥	गगने आरुह्य गुरोः समाजं अपश्यम् । यत्र आत्मामनश्च घटे शासनं कुरुतः ॥१४॥
मानसर न्हाऊँ मैल उतार । सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार ॥१५॥	मानसरोवरे स्नानं करोमि मलिनतां प्रक्षाल्य । किंगरीनादं सारंगसारं च श्रृणोमि ॥१५॥
महासुन घाटी चढ़ भागी। गुफा में मुरली धुन जागी ॥१६॥	महासुन्नोपत्यकामारुह्य अधावम् । गुहायां वेणुनादं जागरितम् ॥१६॥
अमरपुर पहुँची कर सिंगार । पुरुष का देखा नूर अपार ॥१७॥	श्रृंगारं कृत्वा अमरपुरं गतवान् । पुरुषस्य अपारप्रकाशं दृष्टवान् ॥१७॥
गई फिर अलख अगम के पार । रही राधास्वामी चरन निहार ॥१८॥	तदा अलखागमाभ्यां पारमगच्छम् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ अवलोकयामि ॥१८॥
मेहर गुरु जागा भाग अपार । सरन राधास्वामी पाई सार ॥१९॥	गुरुकृपया अपारभाग्यं जागरितम्। रा धा/ध: स्व आ मी-शरणसारं प्राप्तम् ॥१९॥
आरती राधास्वामी सन्मुख धार । रहूँ नित राधास्वामी चरन सम्हार ॥२०॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: समक्षमारतिं धार्य । नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ संरक्ष्य वसामि ॥२०॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७८ ॥ आज हिये होत हरष भारी	
हिंदी	संस्कृत
आज हिये होत हरष भारी । आरती गुरु चरनन धारी ॥१॥	अद्य हृदये अधिक: हर्ष: भवति। गुरुचरणयोः आरतिः धृता ॥१॥
थाल गुरु सेवा लिया सजाय । ध्यान गुरु लीनी जोत जगाय ॥२॥	गुरुसेवायै स्थालिका सज्जिता। गुरुध्यानाय ज्योतिः अज्वालयत् ॥२॥
आरती हित चित से गाऊँ । मेहर राधास्वामी छिन छिन चाहूँ ॥३॥	हितेन चित्तेन च आरतिं गायामि । प्रतिपलं रा धा/ध: स्व आ मीकृपामिच्छामि ॥३॥
संग गुरु करत रहूँ जिय से । बचन गुरु सुनत रहूँ हिय से ॥४॥	चित्तेन गुरुसङ्गं करोमि । हृदयेन गुरुवचनं श्रृणोमि ॥४॥
धरा राधास्वामी गुरु औतार । बहुत जिव लीने पार उतार ॥५॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः सदगुरोः अवतारं धृतवान् । बहवः जीवान् भवसागरात् तारितवान् ॥५॥
दीन दिल चरन सरन आये । वही जिव सतपुर पहुँचाये ॥६॥	दीनचित्तेन चरणशरणम् आगताः । तान् जीवान् सत्तपुरे प्रेषितवान् ॥६॥
किया अस राधास्वामी जगत उबार । करम और काल रहे सब हार ॥७॥	एवं रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः जगतोद्धारं कृतवान् । सर्वे कालकर्माणि च पराजितानि ॥७॥
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी । भाग बढ़ अपना मैं चीन्ही ॥८॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः मयि ईदृशीं दयां कृतवान् । स्व भागधेयमहम् अभिज्ञातम् ॥८॥
दई मोहि दृढ़ कर चरन सरन । हिये में निज परतीत धरन ॥९॥	मां बलवद् दृढ़ं चरणशरणं दत्तवान्। हृदि निजप्रतीतिं स्थापितवान् ॥९॥
प्रेम और प्रीति लगी अधिकाय । मेहर गुरु कस कहूँ महिमा गाय ॥ १०॥	प्रेमप्रीतिश्च अधिकं संलग्नौ । गुरुकृपाया: महिमां कथं गायेयम् ॥१०॥
हुआ मोहि सेवा संग पियार । नाम राधास्वामी रहूँ उर धार ॥११॥	सेवया साकं मम प्रीति: जाता । रा धा/ध: स्व आ मीनाम हृदये धारयामि ॥११॥
पीस कर कीना मन चूरा । हटाये काल करम दूरा ॥१२॥	पेषणं कृत्वा मनः चूर्णं कृतवान् । कालकर्माणि च दूरं अपसारितवान् ॥१२॥
छान कर लिया निज नाम सम्हार ।	छर्दयित्वा निजनाम संरक्षितम् ।

चरन राधास्वामी मोर अधार ॥१३॥	रा धा/ध: स्व आ मीचरणौ ममाधारौ ॥१३॥
भूनती निस दिन काम और क्रोध । गुरू बल देकर मन को बोध ॥१४॥	प्रतिदिनं कामक्रोधञ्च भर्जे । गुरोः बलेन मनः बोधं दत्वा॥१४॥
पकाऊँ दिन दिन घट में प्रीत । बसाऊँ हिये में गुरु परतीत ॥१५॥	प्रतिदिनं घटे प्रीतिं पचामि । हृदये गुरुप्रतीतिं वसामि ॥१५॥
माँजती बासन कर कर साफ़ । छोड़ दई जग की तोल और नाप ॥१६॥	वासना: पुनर्पुनर्प्रक्षाल्य मार्जयामि। जगतः तोलनं मापनञ्च अत्यजम्॥१६॥
आस गुरु चरनन चित्त बसाय । रहूँ मैं निस दिन गुरु गुन गाय ॥१७॥	चित्ते गुरुचरणयो: आशां संधार्य । प्रतिदिनम् गुरुगुणान् गायामि अहम् ॥१७॥
लगाती झाड़ू हिये अँगना । दरस राधास्वामी वहीं तकना ॥१८॥	हृदयाङ्गणे सम्मार्जनं करोमि । रा धा/ध: स्व आ मीदर्शनं तत्रैव निरूपयामि ॥१८॥
भोग गुरु सामाँ नित करती । सजा कर हिये थाली धरती ॥१९॥	गुरवे नित्यं नैवेद्यं साधयामि । हृदयस्य स्थालिकां सज्जीकृत्य धरामि ॥१९॥
बिबिध अस निस दिन सेवा धाय । लिये मैं राधास्वामी खूब रिझाय ॥ २०॥	प्रतिदिनम् ईदृशी विविधसेवाभ्य: धावित्वा । अहं रा धा/ध: स्व आ मीदयालुं अति रंजितवान् ॥२०॥
हुए परसन गुरु दीनदयाल । दया कर कीन्हा मोहि निहाल ॥२१॥	दीनदयालु: गुरु: प्रसन्नः जात:। दयां कृत्वा मां कृतार्थं कृतवान् ॥२१॥
सुरत से सुनती घट बाजा । सहसदल घंट संख साजा ॥२२॥	आत्मना घटनादं श्रृणोमि । सहस्त्रदलपदे घंटाशङ्खौ सज्जितौ ॥२२॥
गगन गुरु धुन मिरदंग सुनाय । सुन्न चढ़ तिरबेनी में न्हाय ॥२३॥	गगने गुरु: मृदङ्गध्वनिं अश्रावयत् । सुन्ने आरुहय त्रिवेण्यां स्नानं कृतम् ॥२३॥
भँवर में पहुँची लगन सुधार । सुनी धुन सोहँग बंसी धार ॥२४॥	भंवरगुहायां समायात: प्रीतिं संरक्ष्य । सोहँगपदे वेणोः अजस्त्रध्वनि: श्रुत: ॥२४॥
सत्तपुर दरशन सतपुर्ष पाय । अलख लख अगम में पहुँची धाय ॥ २५॥	सत्तपुरे सत्तपुरुषस्य दर्शनं प्राप्य । अलखं वीक्ष्य अगमपदं प्राप्तं धावित्वा॥२५॥
परे तिस निरखा राधास्वामी धाम । परम गुरु अकह अपार अनाम ॥२६॥	ततः परे रा धा/ध: स्व आ मीधामं(धाम) अपश्यम् । परमगुरु: अकथ्यः अपारः अनामश्च ॥२६॥
किया मेरा राधास्वामी पूरन काम । रहँ मैं छिन छिन उन गुन गाम ॥२७॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः मम कार्यं पूर्णं कृतवान्।

	प्रतिक्षणम् अहं तस्य गुणान् गायामि ॥२७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ७९ ॥ चरन राधास्वामी ध्याय रही	
हिंदी	संस्कृत
चरन राधास्वामी ध्याय रही । नित्त गुरु महिमा गाय रही ॥१॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ ध्यायामि । नित्यं गुरुमहिमां गायामि ॥१॥
नाम का देखूँ घट परताप । दया गुरु काटूँ तीनों ताप ॥२॥	नाम्नः घटे प्रतापं पश्यामि। गुरोः दयया त्रयतापान् छिनद्मि॥२॥
ध्यान गुरु धरत हुआ मन सूर । करम और भरम हुए सब चूर ॥३॥	गुरुध्यानं धारयन् मनः शूरः अभवत् । कर्मभ्रमाश्च सर्वे चूर्णिता: ॥३॥
गुरु का बल धर हिरदे माहिं । मिटाऊँ काम क्रोध की छाहिं ॥४॥	गुरोः बलं हृदये संधार्य। कामक्रोधयो: छायां नश्यामि ॥४॥
नाम का धारूँ कर हथियार । हटाऊँ काल करम दल झाड़ ॥५॥	नाम्नः अस्त्रं हस्ते धारयामि । कालकर्मदलं पूर्णतः अपसारयामि॥५॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय । सुरत मन रहे चरन लौ लाय ॥६॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयां वर्णितुं न शक्यते । आत्मामनश्च चरणौ लयलीनौ जातौ॥६॥
रहूँ नित सत्सँग बचन बिचार । मोह जग दीना सहज निकार ॥७॥	नित्यं सत्संगे तिष्ठामि प्रवचनानि विचार्य । जगतः मोहं सहजे त्यक्तम् ॥७॥
शब्द का मारग पाया सार । बढ़त अब धुन में नित्त पियार ॥८॥	शब्दमार्गस्य सारं प्राप्तम् । अधुना ध्वनेः नित्यं प्रेम वर्धते॥८॥
सुरत मन तजत जगत की आस । चरन में गुरु के चाहत बास ॥९॥	आत्मामनश्च जगतः आशां त्यजतः। गुरुचरणयोः निवासं वाञ्छतः ॥९॥
सरन बिन होय न जग से पार । गुरू से माँगूँ सरन अधार ॥१०॥	शरणं विना जगतः मुक्तिः न संभवा । गुरुं शरणाधारं याचे ॥१०॥
सुनूँ धुन घंटा नभ के द्वार । गगन में गरज मेघ धधकार ॥११॥	गगनद्वारे घंटानादं श्रृणोमि । गगने मेघानां धधकारेति गर्जनम् ॥११॥
सुन्न में बजती सारँग सार । भँवर गढ़ धुन मुरली झनकार ॥१२॥	सुन्नपदे सारङ्गसार: नदति । भंवरपदे वेणुनादझंकारः भवति॥१२॥
अमरपुर सुनती बीन सम्हार । अलख और अगम से कीना प्यार ॥१३॥	अमरपुरे अहितुण्डवाद्यं श्रृणोमि अवधानेन। अलखागमाभ्यां च प्रीतिः कृता ॥१३॥
चरन राधास्वामी निरख निहार ।	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ निरीक्ष्यावलोकयामि ।

दिया मैं तन मन उन पर वार ॥१४॥	मया तनुमनसी समर्पितौ तेषु॥१४॥
प्रेम अँग आरत गाऊँ सार । जाऊँ मैं राधास्वामी के बलिहार ॥१५॥	प्रेमाङ्गेन आरतिसारं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालौ समर्पयामि अहम् ॥१५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८० ॥ प्रीति गुरु हिये में बसाय रही	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति गुरु हिये में बसाय रही । नाम गुरु छिन छिन गाय रही ॥१॥	गुरोः प्रीतिं हृदये वसामि । प्रतिक्षणं गुरोर्नाम गायामि ॥१॥
बचन गुरु सुनत मनन कीना । उलट घट माहिं जतन कीना ॥२॥	गुरुवचनं श्रृण्वन् मननं कृतम् । प्रत्यावर्त्य घटे युक्तिः कृता ॥२॥
सुरत और शब्द भेद पाया । रूप गुरु प्रेम सहित ध्याया ॥३॥	सुरतशब्दयोः भेदम् अभिज्ञातम्। गुरुरूपस्य ध्यानं प्रेम्णा कृतम् ॥३॥
जगत का थोथा है ब्योहार । फँसा जो इसमें रह गया वार ॥४॥	जगतः व्यवहारः निस्सारः अस्ति । यः अस्मिन् बद्धीभूतः अत्रैव अतिष्ठत् ॥४॥
खोज सतगुरु का जो जन कीन । चरन में भक्ती कर हुए लीन ॥५॥	सद्गुरोः अन्वेषणं येन जनेन कृतम् । चरणयोः भक्तिं कृत्वा तल्लीनमभूत् ॥५॥
सोई जन उतरे भौजल पार । मेहर राधास्वामी पाई सार ॥६॥	सैव जनः भवसागरात् तरति । रा धा/धः स्व आ मी-कृपासारं प्राप्नोति यः ॥६॥
भाग मेरा अचरज उठ जागा । चरन गुरु धारा अनुरागा ॥७॥	ममाद्भुतं भाग्यम् उद्बुद्धं अभवत्। गुरुचरणयोः अनुरागं अधरम् ॥७॥
पड़ी थी जग में महा अचेत । खैंच लिया चरनन में दे हेत ॥८॥	जगति चेतनरहितः आसम् । चरणयोः प्रीतिमुत्पाद्य आकर्षितं कृतवान् ॥८॥
गुरू का जब से सतसँग कीन । बचन सुन हुई मैं दीन अधीन ॥९॥	गुरोः सत्सङ्गं यदातः अकरवम् । वचनं श्रुत्वा अहं दीनाधीनश्च अभवम् ॥९॥
भाव जग चित से दीना छोड़ । मोह माया का नाता तोड़ ॥१०॥	चित्तेन जगतः भावम् त्यक्तम्। मोहमाययोः सम्बन्धं विच्छेदितम् ॥१०॥
काल और करम लगे दुख देन । देत नहिं सतसँग का सुख लेन ॥११॥	कालः कर्म च दुखं दातुमारभन् । सत्सङ्गसुखे विघ्नकारकाः भवन्ति ॥११॥
रोग और भोग झुमाय रहे । बिघन अस मोहि घुमाय रहे ॥१२॥	व्याधिभोगाश्च क्लेशमुत्पादयन्ति । एवं विघ्नाः माम् उद्विग्नं कुर्वन्ति ॥१२॥
भरम और संशय बहु भरमात । काल गत कुछ नहिं बरनी जात ॥१३॥	भ्रमसंशयाश्च भृशं भ्रमितं कुर्वन्ति । कालगतिं किञ्चिदपि वर्णितुं न शक्यते ॥१३॥
सरन मैं राधास्वामी दृढ़ करती। भरोसा मन में दृढ़ धरती ॥१४॥	रा धा/धः स्व आ मी-शरणं दृढं करोमि अहम्। मनसि दृढप्रतीतिं धरामि ॥१४॥

मेहर बिन बस नहिं चाले मोर । रही मैं गुरु चरनन चित जोड़ ॥१५॥	कृपां विना किमपि कर्तुं क्षमः नास्मि। गुरुचरणयोः चित्तं युनज्मि ॥१५॥
दया कर काटें राधास्वामी जाल । काल मोहि कीना अति बेहाल ॥१६॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: दयां कृत्वा जालं छिनत्ति: । काल: माम् अति उद्विग्नं कृतवान् ॥१६॥
परम गुरु हूजे आज सहाय । दुखन से लीजे बेग बचाय ॥१७॥	परमगुरो ! अद्य सहायक: भूयात् । दुःखेभ्यः शीघ्रं रक्षां कुर्यात् ॥१७॥
बचन और दरशन पाऊँ सार । गाऊँ गुन तुम्हरा बारम्बार ॥१८॥	प्रवचनदर्शनयोश्च सारमाप्नुयाम् । भवतः गुणान् भूयोभूयः गायामि ॥१८॥
चरन में लीना तुमहिं लगाय । बहुरि तुम आपहि करो सहाय ॥१९॥	भवान् मां चरणयोः अयुनक् । भूयः भवान् एव सहायक: भूयात् ॥१९॥
सुनो मेरी बिनती दीनदयाल । दरस दे मुझको करो निहाल॥२०॥	दीनदयालु: मम विनतिं श्रृणुया:। दर्शनं दत्वा मां कृतार्थं कुर्यात् ॥२०॥
शब्द की दीजे दृढ़ परतीत । चरन में दृढ़ कर जोड़ूँ चीत ॥२१॥	शब्दस्य दृढप्रतीतिं दद्यात्। चरणयोः चित्तं दृढ़ेन युञ्ज्याम् ॥२१॥
ध्यान गुरु रूप हिये धारूँ । रूप रस चाखत जिया वारूँ ॥२२॥	गुरुरूपस्य ध्यानं हृदि धारयामि। रूपरसास्वादने प्राणार्पणं करोमि ॥२२॥
सुरत सँग घट में देख बहार । जाऊँ तुम चरनन पर बलिहार ॥२३॥	आत्मना सह घटे शोभां वीक्ष्य । भवतः चरणयोः समर्पयामि ॥२३॥
आरती हित से कर में धार । प्रेम सँग गाऊँ तन मन वार ॥२४॥	हितेन आरतिं हस्तयोः धृत्वा । तनुमनसी समर्प्य प्रेम्णा गायामि ॥२४॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयार । काज किया पूरन किरपा धार ॥२५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-परमगुरु: दयालु अभवत् । कृपां धृत्वा कार्यं पूर्णं साधितवान् ॥२५॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८१ ॥ बचन गुरु सुनत हुआ आनंद	
हिंदी	संस्कृत
बचन गुरु सुनत हुआ आनंद । ध्यान गुरु धरत कटे मन फंद ॥१॥	गुरुवचनानि श्रृण्वन् मनसि आनन्दः जातः । गुरुध्यानं धारयन् मनसः पाशाः विच्छिन्नाः॥१॥
करम और भरम दिये सब छोड़ । चरन में लाग रहा चित जोड़ ॥२॥	कर्मभ्रमाश्च सर्वे त्यक्ताः । चरणयोः चित्तं संयोजयामि ॥२॥
हुई गुरु बचनन दृढ़ परतीत। धार लई चित में भक्ती रीत ॥३॥	गुरुवचनेषु दृढ़प्रतीतिः जाता । चित्ते भक्तिरीतिः धृता ॥३॥
भरोसा राधास्वामी मन में धार । रहूँ नित राधास्वामी नाम पुकार ॥४॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालोः विश्वासं मनसि धार्य । नित्यं रा धा/धः स्व आ मी-नाम आकारयामि ॥४॥
भरे मेरे मन में बहुत बिकार । दया कर राधास्वामी लेहैं सम्हार ॥५॥	मम मनः बहुदोषैः पूर्णम् अस्ति । दयां कृत्वा रा धा/धः स्व आ मी-प्रभुः संरक्षेत् ॥५॥
करम मैं कीन्हे बहु भाँती । मेहर बिन नहिं आई शांती ॥६॥	विभिन्नानि कर्माणि अकरवम् अहम् । कृपां विना शान्तिः न आयाता ॥६॥
मान बस भूला बारम्बार । गुरू बिन नहिं लखिया पद सार ॥७॥	अहंकारवशात् विस्मृतं भूयोभूयः । गुरुं विना पदस्य सारं न अपश्यम्॥७॥
मिला अब राधास्वामी पद का भेद । करम के मिट गये सारे खेद ॥८॥	अधुना रा धा/धः स्व आ मी-पदस्य भेदं प्राप्तम् । कर्मणः सर्वकष्टानि अनश्यन् ॥८॥
बीनती गुरु चरनन में धार । गुरू से माँगूँ दया अपार ॥९॥	गुरुचरणयोः विनतिं धार्य । गुरुं अपारदयां याचे ॥९॥
सरन दे मोहि उतारो पार । नाम गुरु जपत रहूँ हर बार ॥१०॥	शरणं दत्वा मां निस्तारयेत् । नित्यं गुरोः नाम जपामि ॥१०॥
काल अब करे न कोई घात । दूर करो मन के सब उतपात ॥११॥	अधुना कालः कमपि घातं न कुर्यात् । मनसः सर्वे उत्पाताः दूरं कुर्यात् ॥११॥
चलूँ अब चरन सम्हार सम्हार । बचन पर निस दिन रहूँ हुशियार ॥१२॥	अधुना षष्ठचक्रं ध्यात्वा अवधानेन चलामि । प्रवचनेषु अहर्निशं सावधानः भवामि ॥१२॥
सुरत मन निरमल होय चालें । प्रीति गुरु हिये छिन छिन पालें ॥१३॥	आत्मामनश्च निर्मलौ भूत्वा गच्छेताम् । हृदये गुरुप्रीतिं प्रतिक्षणं पालयेताम् ॥१३॥

रूप गुरु ध्यान धरूँ दिन रात । करम की बाज़ी होवे मात ॥१४॥	अहर्निशं गुरो: रूपस्य ध्यानं धारयामि । कर्मण: पण: पराजितः भवेत् ॥१४॥
गगन चढ़ सुनूँ शब्द घनघोर । छुटे तब मन का मोर और तोर ॥१५॥	गगनमारुह्य घूर्णितशब्दं श्रृणोमि । तदा मनसः मम तव च मुञ्चेत्॥१५॥
दसम दर निरखूँ पाट हटाय । सत्तपुर सुनूँ बीन धुन जाय ॥१६॥	दशमद्वारं पश्यामि पाटं अपवार्य । सत्तपुरं गत्वा अहितुण्डनादं श्रृणोमि ॥१६॥
चरन में राधास्वामी के धाऊँ । प्रेम सँग वहाँ आरत गाऊँ ॥१७॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: धावामि । प्रेम्णा तत्र आरतिं गायामि ॥१७॥
दीन दिल पकड़ूँ गुरु चरना । धार रहूँ हिये में गुरु सरना ॥१८॥	दीनहृदयेन गुरुचरणौ गृह्णामि । गुरुशरणं हृदये धारयामि ॥१८॥
दया राधास्वामी पाई सार । उतर गया जन्म जन्म का भार ॥१९॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयायाः सारं प्राप्तम् । प्रतिजन्मनः भारः अवतरितः ॥१९॥
भाग बिन नहिं पावे यह धाम । मेहर बिन नहिं मिलिहै निज नाम ॥२०॥	भाग्यं विना एष: धाम:(धाम) प्राप्तुं न शक्यते । कृपां विना निजनाम न प्राप्तुं शक्यते ॥२०॥
करी मोपै राधास्वामी दया अपार । दिया मोहि निज चरनन आधार ॥२१॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः मयि अतिकृपां कृतवान् । मह्यं स्वचरणयो: आधारं दत्तवान् ॥२१॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८२ ॥ सुरत मेरी हुई चरन गुरु लीन	
हिंदी	संस्कृत
सुरत मेरी हुई चरन गुरु लीन । लखी घट मूरत मन हुआ दीन ॥ १ ॥	गुरुचरणयोः ममात्मा लीनोऽभूत् । घटे स्वरूपं दृष्टं मनः दीनमभूत् ॥ १ ॥
वारती तन मन गुरु चरना । धारती मन में गुरु सरना ॥ २ ॥	गुरुचरणयो: तनुमनसी समर्पयामि । मनसि गुरोः शरणं दधामि ॥ २ ॥
जगत का परमारथ छोड़ा। करम सँग अब नाता तोड़ा ॥ ३ ॥	जगत: परमार्थं त्यक्तम् । सम्प्रति कर्मणा सह सम्बन्धं विच्छेदितम् ॥ ३ ॥
भक्ति गुरु लागी अति प्यारी । संत मत हित चित से धारी ॥ ४ ॥	गुरुभक्ति: अतिप्रिया प्रतीता । संतमतं हितचित्तेन च धृतम् ॥ ४ ॥
सुरत और शब्द जुगत अनमोल । धार हिये सुनती बाला बोल ॥ ५ ॥	सुरतशब्दयो: युक्ति: अमूल्या । ऊर्ध्वादागतशब्दान् हृदि धार्य श्रृणोमि ॥ ५ ॥
नाम रस पियत रहूँ दिन रात । गुरू का दम दम अब गुन गात ॥ ६ ॥	अहर्निशं नाम्नः रसं पिबामि । अधुना प्रतिश्वासं गुरोः गुणान् गायामि ॥ ६ ॥
बहुत दिन तीरथ बर्त पचाय । रही मैं ठगियन संग ठगाय ॥ ७ ॥	बहुदिनानि तीर्थेषु व्रतेषु च अनश्यम् । वञ्चकै: सह वञ्चिता अहम् ॥ ७ ॥
सुफल मेरी नरदेह आज भई । दीन दिल राधास्वामी सरन गही ॥ ८ ॥	अद्य मम नरदेहं सफलं जातम् । दीनचित्तेन रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं गृहीतम् ॥ ८ ॥
मेहर हुई चित चरनन लागा । बढ़त अब दिन दिन अनुरागा ॥ ९ ॥	कृपा जाता चित्तं चरणयोः संलग्नम् । अधुना प्रतिदिनम् अनुरागं वर्धते ॥ ९ ॥
बचन सतसँग के हिरदे धार । उमँग मन त्यागत जगत लबार ॥ १० ॥	सत्संगवचनानि हृदये धार्य । उल्लसितमनसा असत्यजगत् त्यजामि ॥ १० ॥
चरन में गुरु के चाहत बास । होत जहाँ निस दिन परम बिलास ॥ ११ ॥	गुरुचरणयो: वासं वाञ्छामि । यत्र प्रतिदिनं परमविलासं भवति ॥ ११ ॥
रूप गुरु धारूँ हिरदे ध्यान । संत सँग प्रीति बढ़ाऊँ आन ॥ १२ ॥	ध्याने गुरुरूपं हृदये दधामि । संतपुरुषै: सह प्रीतिं वर्धे तत्रागत्य ॥ १२ ॥
करूँ अस निस दिन किरत सम्हार ।	अहर्निशमेवं सावधानं भूत्वा कर्म करोमि ।

भरम और संशय टारूँ झार ॥ १३ ॥	भ्रमसंशयौ पूर्णतः दूरं करोमि ॥ १३ ॥
होंय जब राधास्वामी गुरु परसन्न । दया कर काटें सब बंधन ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-गुरु: यदा प्रसन्नः भूयात् । दयां कृत्वा सर्वबन्धनानि कृत्यात् तदा ॥ १४ ॥
चढ़ै तब सूरत शब्द सम्हार । लखै फिर घट में मोक्ष दुआर ॥ १५ ॥	तदात्मा शब्दं संरक्ष्यारोहेत् । ततः घटे मोक्षद्वारं ईक्षेत ॥ १५ ॥
गगन चढ़ तिरबेनी न्हावे । भँवर लख सतपुर दरसावे ॥ १६ ॥	गगने आरुह्य त्रिवेण्यां स्नानं कुर्यात् । भंवरं दृष्ट्वा सत्तपुरं पश्येत् ॥ १६ ॥
अलख लख अगम का निरखै रूप । मिले पिता राधास्वामी कुल भूप ॥ १७ ॥	अलखमवलोक्य अगमपदस्यरूपं निरीक्षेत । कुलभूप: रा धा/ध: स्व आ मी-पिता प्राप्तवान् ॥ १७ ॥
आरती सन्मुख धार रही । चरन पर तन मन वार रही ॥ १८ ॥	आरति: समक्षं धारयामि । चरणयोः तनुमनसी वारयामि ॥ १८ ॥

.

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८३ ॥ खिले मेरे घट में भक्ती फूल	
हिंदी	संस्कृत
खिले मेरे घट में भक्ती फूल । नाम हिये धारा गया जग भूल ॥ १ ॥	मम घटे भक्त्या: पुष्पाणि विकसितानि । हृदये नाम धृतं जगत् विस्मृतम् ॥ १ ॥
प्रेम की क्यारी सींचत मन । चरन गुरु वारत तन मन धन ॥ २ ॥	मनः प्रेम्णः केदारिकां सिञ्चति। गुरुचरणयो: तनुमनधनञ्च समर्पयामि ॥ २ ॥
बिरह की अगनी नित भड़काय । मोह जग कूड़ा दीन जलाय ॥ ३ ॥	विरहस्य ज्वालां नित्यं उद्दीप्य। जगतः मोहस्य अवस्करं ज्वलितम्॥ ३ ॥
बाड़ सतसँग की राख सम्हार । दिये मैं पाँचो चोर निकार ॥ ४ ॥	सत्संगस्य परिधिः संरक्षिता । मया पञ्चचौरा: निष्कासिताः ॥ ४ ॥
प्रीति गुरु खिला हिये गुलज़ार । चुनत रहूँ सेवा कलियाँ सार ॥ ५ ॥	गुरोः प्रीत्याः उद्यानं हृदये विकसितम् । सेवायाः कलिकानां सारं चिनोमि ॥ ५ ॥
दया गुरु फूल और फल लागे । भाग मेरे जुग जुग के जागे ॥ ६ ॥	गुरो: दयाया: फलानिपुष्पाणि च विकसितानि । मम युगयुगानां भाग्यानि जागरितानि ॥ ६ ॥
शब्द धुन अमृत भर पीया । दरस गुरु अचरज रस लीया ॥ ७ ॥	शब्दनादस्य अमृतं तृप्त्या अपिबम् । गुरुदर्शनस्य अद्भुतरसम् प्राप्तम् ॥ ७ ॥
सुरत मन चढ़त गगन की ओर । संख और मिरदँग डाला शोर ॥ ८ ॥	आत्मामनश्च आरोहत: गगनं प्रति । शङ्खमृदंगौ घूर्णनम् अकुरुताम् ॥ ८ ॥
ररँग धुन गाज रही सुन में । भींज रही सुरत भँवर धुन में ॥ ९ ॥	सुन्नपदे ररँगघोष: गर्जति । आत्मा भँवरपदस्य नादे क्लिद्यति॥ ९ ॥
बीन धुन मधुर लगी प्यारी । गुरू पर जाऊँ बलिहारी ॥ १० ॥	मधुरमहितुण्डनादं प्रियं प्रतीतम्। गुरवे समर्पयामि ॥ १० ॥
देख सतपुर की लीला सार । गुरू का गाऊँ गुन हर बार ॥ ११ ॥	सत्तपुरस्य लीलासारं पश्य । प्रतिवारं गुरोः गुणान् गायामि ॥ ११ ॥
गई फिर अलख लोक पग धार । अगम का खोला जाकर द्वार ॥ १२ ॥	ततः पादं धृत्वा अलखलोकम् अगच्छम् । गत्वा अगमलोकस्य द्वारम् अनावृतम् ॥ १२ ॥
कहूँ क्या महिमा अगम दरबार । हुई मैं दासी चरन निहार ॥ १३ ॥	किं कथयेयम् अगमसदनस्य महिमाम् । चरणौ संपश्य दासी अभवमहम् ॥ १३ ॥
परे तिस लखिया राधास्वामी धाम ।	तदतिक्रम्य रा धा/ध: स्व आ मी-धामं(धाम) अपश्यम् ।

चरन में राधास्वामी दिया विस्राम ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: चरणौ विश्रामम् अददात् ॥ १४ ॥
रही मैं नित उन आरत गाय । मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥ १५ ॥	अहं नित्यं तेषां आरतिं गायामि । प्रतिक्षणं रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां प्राप्नोमि ॥ १५ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८३ ॥ खिले मेरे घट में भक्ती फूल	
हिंदी	संस्कृत
खिले मेरे घट में भक्ती फूल । नाम हिये धारा गया जग भूल ॥ १ ॥	मम घटे भक्त्या: पुष्पाणि विकसितानि । हृदये नाम धृतं जगत् विस्मृतम् ॥ १ ॥
प्रेम की क्यारी सींचत मन । चरन गुरु वारत तन मन धन ॥ २ ॥	मनः प्रेम्णः केदारिकां सिञ्चति। गुरुचरणयो: तनुमनधनञ्च समर्पयामि ॥ २ ॥
बिरह की अगनी नित भड़काय । मोह जग कूड़ा दीन जलाय ॥ ३ ॥	विरहस्य ज्वालां नित्यं उद्दीप्य। जगतः मोहस्य अवस्करं ज्वलितम्॥ ३ ॥
बाड़ सतसँग की राख सम्हार । दिये मैं पाँचो चोर निकार ॥ ४ ॥	सत्संगस्य परिधिः संरक्षिता । मया पञ्चचौरा: निष्कासिताः ॥ ४ ॥
प्रीति गुरु खिला हिये गुलज़ार । चुनत रहूँ सेवा कलियाँ सार ॥ ५ ॥	गुरोः प्रीत्याः उद्यानं हृदये विकसितम् । सेवायाः कलिकानां सारं चिनोमि ॥ ५ ॥
दया गुरु फूल और फल लागे । भाग मेरे जुग जुग के जागे ॥ ६ ॥	गुरो: दयाया: फलानिपुष्पाणि च विकसितानि । मम युगयुगानां भाग्यानि जागरितानि ॥ ६ ॥
शब्द धुन अमृत भर पीया । दरस गुरु अचरज रस लीया ॥ ७ ॥	शब्दनादस्य अमृतं तृप्त्या अपिबम् । गुरुदर्शनस्य अद्भुतरसम् प्राप्तम् ॥ ७ ॥
सुरत मन चढ़त गगन की ओर । संख और मिरदँग डाला शोर ॥ ८ ॥	आत्मामनश्च आरोहत: गगनं प्रति । शङ्खमृदंगौ घूर्णनम् अकुरुताम् ॥ ८ ॥
ररँग धुन गाज रही सुन में । भींज रही सुरत भँवर धुन में ॥ ९ ॥	सुन्नपदे ररँगघोष: गर्जति । आत्मा भँवरपदस्य नादे क्लिद्यति॥ ९ ॥
बीन धुन मधुर लगी प्यारी । गुरू पर जाऊँ बलिहारी ॥ १० ॥	मधुरमहितुण्डनादं प्रियं प्रतीतम्। गुरवे समर्पयामि ॥ १० ॥
देख सतपुर की लीला सार । गुरू का गाऊँ गुन हर बार ॥ ११ ॥	सत्तपुरस्य लीलासारं पश्य । प्रतिवारं गुरोः गुणान् गायामि ॥ ११ ॥
गई फिर अलख लोक पग धार । अगम का खोला जाकर द्वार ॥ १२ ॥	ततः पादं धृत्वा अलखलोकम् अगच्छम् । गत्वा अगमलोकस्य द्वारम् अनावृतम् ॥ १२ ॥
कहूँ क्या महिमा अगम दरबार । हुई मैं दासी चरन निहार ॥ १३ ॥	किं कथयेयम् अगमसदनस्य महिमाम् । चरणौ संपश्य दासी अभवमहम् ॥ १३ ॥
परे तिस लखिया राधास्वामी धाम ।	तदतिक्रम्य रा धा/ध: स्व आ मी-धामं(धाम) अपश्यम् ।

चरन में राधास्वामी दिया विस्राम ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: चरणौ विश्रामम् अददात् ॥ १४ ॥
रही मैं नित उन आरत गाय । मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥ १५ ॥	अहं नित्यं तेषां आरतिं गायामि । प्रतिक्षणं रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां प्राप्नोमि ॥ १५ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८४ ॥ गुरू पै वार रही तन मन	
हिंदी	संस्कृत
गुरू पै वार रही तन मन । होय रही चरन धूर सतजन ॥ १ ॥	शरीरमनसी गुरवे अर्पयामि । सज्जनानां चरणयोः धूलिः भवामि ॥ १ ॥
प्रीति मेरी बढ़त रही दिन दिन। मेहर गुरु पाय रही छिन छिन ॥ २ ॥	अनुदिनं मम प्रीतिः वर्धते । प्रतिक्षणं गुरुकृपां प्राप्नोमि ॥ २ ॥
रूप गुरु झाँक रही पुन पुन । बचन हिये धार रही चुन चुन ॥ ३ ॥	गुरुरूपं मुहुर्मुहुः निरूपयामि । वचनं चित्वा चित्वा हृदये दधामि ॥ ३ ॥
संग गुरु चाहँ बारम्बार । करत रहूँ सेवा धर धर प्यार ॥ ४ ॥	गुरोः सङ्गं पुनर्पुनः इच्छामि । अति प्रीत्या सेवां करोमि ॥ ४ ॥
दरस बिन तड़प रहा मन मोर । लखूँ कस राधास्वामी छबि चितचोर ॥ ५ ॥	दर्शनं विना मम मनः आकुल: भवति । रा धा/ध: स्व आ मी-चित्तचौरस्य छविं कथं पश्येयम् ॥५॥
रैन दिन चिंता मोहि सताय । सुरत से गहूँ चरन गुरु जाय ॥६॥	अहर्निशं चिन्ता मां पीडयति । आत्मना गत्वा गुरुचरणौ गृह्णामि ॥ ६ ॥
मिलें जब राधास्वामी दरशन सार । लिपट रहूँ चरनन से कर प्यार ॥७॥	यदा रा धा/ध: स्व आ मी-दर्शनसारं प्राप्नुयाम् । चरणाभ्यां प्रीतिं धार्य लिप्लिम्पामि ॥ ७ ॥
मगन होय गुरु आगे नाचूँ । उमँग अँग गुरु चरनन राचूँ ॥८॥	तल्लीनमनसा गुरुसमक्षं नृत्यं करोमि । सोल्लासेन गुरुचरणयो: लीनं भवामि ॥ ८ ॥
निरख छबि फूल रहूँ मन में । समावत नहीं हरख तन में ॥ ९ ॥	छविं निरीक्ष्य मनसि प्रसन्नः भवामि । शरीरे हर्षं न समाविशति ॥ ९ ॥
कहूँ क्या महिमा सतसँग सार । पिरेमी बैठे सोभा धार ॥ १० ॥	सत्सङ्गसारस्य महिमां किं कथयामि । प्रेमीजना: शोभां धार्य विराजन्ति ॥ १० ॥
बिरह की अगनी रहे सुलगाय । दरस गुरु मोह रहे अधिकाय ॥ ११ ॥	वियोगस्य अग्निं प्रज्वालयन्ति । गुरो: दर्शनाय अति मोहिता: भवन्ति ॥ ११ ॥
प्रेम की क्यारी सींचें नित्त । सुरत मन धुन रस भीजें नित्त ॥ १२ ॥	प्रेम्णः केदारिकां सिञ्चन्ति नित्यम्। आत्मामनश्च ध्वनिरसेन क्लिद्यतः ॥ १२ ॥
भोग जग तज कर हुये न्यारे । वार तन मन हुये गुरु प्यारे ॥ १३ ॥	जगतः भोगं विहाय विरक्ताः जाता: । गात्रमनसी समर्प्य गुरुप्रियाः जाता: ॥ १३ ॥
भाग बढ़ उनका क्या गाऊँ ।	तेषां अतिसौभाग्यं कथं गायेयम् ।

दया पर गुरु के बल जाऊँ ॥ १४ ॥	गुरो: दयां प्रति समर्पितास्मि ॥ १४ ॥
करूँ मैं अरज़ी दोउ कर जोड़ । चरन में लीजे मेरा चित अस जोड़ ॥ १५ ॥	हस्तौ बद्ध्वा विनतिं करोमि अहम्। अथ मम चित्तं चरणयो: युञ्ज्युः ॥ १५ ॥
दूर बसूँ छबि उर धार रहूँ। चरन में नित लौ लाय रहूँ ॥ १६ ॥	दूरं वसेयं छविं हृदये धरेयम् । चरणयो: नित्यं लयलीनं भवेयम् ॥ १६ ॥
सुरत से सुनूँ शब्द धुन सार । दरस गुरु ताकूँ गगन मँझार ॥ १७ ॥	आत्मना श्रणुयाम् शब्दध्वनिसारम् । गगने गुरुदर्शनं पश्येयम् ॥ १७ ॥
दसम दर झाँकूँ अति कर प्यार । भँवर चढ़ पकड़ूँ बंसी धार ॥ १८ ॥	दशमद्वारमतिप्रीत्या दृश्यासम् । भंवरपदमारुह्य मुरलीधारां गृह्णीयाम् ॥ १८ ॥
अमरपुर पहुँचूँ सतगुरु पास । करूँ धुन बीना संग बिलास ॥ १९ ॥	अमरपुरे सद्गुरुसामीप्यं आप्नुयाम् । वीणास्वरेण सह विलासं कुर्याम् ॥ १९ ॥
पुरुष का दरस अलखपुर पाय । अगमपुर सूरत लेउँ सजाय ॥ २० ॥	अलखपुरे पुरुषदर्शनं लब्ध्वा । अगमपुरे आत्मानं सज्जीकुर्याम् ॥ २० ॥
चरन में राधास्वामी के धाऊँ । प्रेम भर आरत उन गाऊँ ॥ २१ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः धावेयम् । प्रेमपूर्णारतिं तेषां गायेयम् ॥ २१ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८५ ॥ चरन में राधास्वामी जब आई	
हिंदी	संस्कृत
चरन में राधास्वामी जब आई । प्रीति मेरे हिये अंतर छाई ॥ १ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीचरणयो: यदाहं आगता । मम हृदि प्रीति: आच्छादिता ॥ १ ॥
बचन सुन चित में आया भाव । मिला अब नरदेही में दाव ॥ २ ॥	प्रवचनानि श्रुत्वा चेतसि विश्वास: जात: । इदानीं नरशरीरे अवसरं प्राप्तम् ॥ २ ॥
चरन गुरु भक्ति करूँ पूरी । जीत कर जाऊँ घर मूरी ॥ ३ ॥	गुरुचरणयो: भक्तिं करोमि पूर्णत: । जित्वा गमिष्यामि आदिगृहम् ॥ ३ ॥
दया बिन क्या मुझसे बन आय । करें राधास्वामी मोर सहाय ॥ ४ ॥	दयां विना किं कर्तुं शक्नोम्यहम् । रा धा/ध: स्व आ मीदयालु: मम साहाय्यं कुर्यात्॥ ४ ॥
भेद मोहि दीना घट का सार । पकड़ धुन जाऊँ भौ के पार ॥ ५ ॥	मह्यं घटस्य सारं दत्तवान्। ध्वनिं ग्राह्य गच्छामि भवसागरात् पारम्॥ ५ ॥
मेहर की दृष्टी मोपर कीन । हुई मैं राधास्वामी चरन अधीन ॥ ६ ॥	कृपाया: दृष्टि: मयि कृतवान् । रा धा/ध: स्व आ मीचरणयो अधीना अभवम् अहम् ॥ ६ ॥
सुरत मन झाँक रहे नभ द्वार । शब्द धुन सुनत रहे धर प्यार ॥ ७ ॥	आत्मामनश्च नभद्वारे निरीक्षेते। प्रीतिं धार्य शब्दनादं श्रृणुत: ॥ ७ ॥
मगन हुई दरशन जोत निहार । छूट गए काम और क्रोध लबार ॥ ८ ॥	दर्शनज्योतिमालोक्य मग्नाभूत्। मिथ्याकामक्रोधौ अपसरितौ ॥ ८ ॥
झाँक गुरु दरशन गगन मँझार । सुन्न चढ़ न्हाई बेनी धार ॥ ९ ॥	गगनमध्ये गुरुदर्शनं वीक्ष्य । सुन्नपदमारुह्य त्रिवेण्यां स्नाता ॥ ९ ॥
महासुन घाटी चढ़ गुरु लार । लगा धुन मुरली से अब प्यार॥ १० ॥	महासुन्नोपत्यकामारुह्य गुरुसाकम् । अधुना वेणुनादेन सह प्रीतिः जागरिता ॥ १० ॥
परे तिस दरशन पुरुष निहार । सुनत रहूँ मधुर बीन धुन सार ॥ ११ ॥	तदग्रे पुरुषस्य दर्शनं निरीक्ष्य । मधुरमहितुण्डनादसारं श्रृणोमि ॥ ११ ॥
अलख चढ़ गई अगम के पार । मिले राधास्वामी पुरुष अपार ॥ १२ ॥	अलखपदे आरोहित: अगमलोकमतिक्रम्य । रा धा/ध: स्व आ मीपुरुषापाराः प्राप्ताः ॥ १२ ॥
कहूँ क्या शोभा धाम निहार । प्रेम का खुला जहाँ भंडार ॥ १३ ॥	धामं(धाम) वीक्ष्य किं महिमां कथयेयम् । यत्र प्रेम्णः भण्डारः अनावृतः ॥ १३ ॥

बेद नहिं जाने यह मत सार । ज्ञान और जोग रहे थक वार ॥ १४ ॥	वेदाः न जानन्ति अस्य मतस्य सारम् । ज्ञानयोगश्च क्लान्तौ अत्रैव ॥ १४ ॥
संत बिन कोई न उतरे पार । दया बिन मिले न निज घर बार ॥१५ ॥	सन्तं विना न कोऽपि पारं गच्छति । दयां विना निजकुटुम्बः न प्राप्यते ॥ १५ ॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग । रही मैं उन के चरनन लाग ॥ १६ ॥	रा धा/धः स्व आ मीदयालुः मम भाग्यं जागरितम् । तेषां चरणयोः युनज्म्यहम्॥ १६ ॥
सरन दे पूरा कीना काम । जपूँ मैं नित नित राधास्वामी नाम ॥१७॥	शरणं दत्वा मम कार्यं पूरितवान् । नित्याहं रा धा/धः स्व आ मीनाम स्मरामि ॥ १७ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८६ ॥ उमँग मन गुरु चरनन में धाय	
हिंदी	संस्कृत
उमँग मन गुरु चरनन में धाय । दरस कर लीना भाग जगाय ॥ १ ॥	उल्लसितमन: गुरुचरणयो: धावति । दर्शनं कृत्वा भाग्यं अजागरयत् ॥ १ ॥
सुने सतसँग में गुरु बचना । भाव जग तज धुन में रचना ॥ २ ॥	सत्सङ्गे गुरुवचनानि श्रुतानि। जगत: भावं त्यक्त्वा ध्वनौ लीनं भवेत् ॥ २ ॥
खेल माया का देख असार । बढ़त चरनन में निस दिन प्यार ॥३ ॥	मायाया: मिथ्या क्रीडां पश्य । प्रतिदिनं चरणयो: प्रीति: वर्धते ॥ ३ ॥
प्रेम गुरु महिमा अति भारी । मिला जिन भाग जगा सारी ॥ ४ ॥	गुरुप्रेम्णः महिमा गुरुतरा वर्तते । येन लब्ध: तस्य भाग्यं जागरितं सर्वप्रकारेण॥४॥
शब्द सँग लागी घट तारी । काल और करम रहे हारी ॥ ५ ॥	हृदयः शब्देन सह तल्लीन: अभवत् । कालकर्मणौ पराजितौ अभवताम् ॥ ५ ॥
मेहर बिन नहिं पावे यह दात । दया बिन नहिं माने गुरु बात ॥ ६ ॥	कृपां विना न जायते एषा आशीर्वृष्टि: । दयां विना गुरुवचनं न स्वीकरोति ॥ ६ ॥
हुआ मेरे मन में अस बिश्वास । करें गुरु पूरन मेरी आस ॥ ७ ॥	मम मनसि ईदृग् विश्वास: जात: । गुरु: ममाशां पूरयिष्यन्ति ॥ ७ ॥
नाम का किनका हिये बसाय । लेहैं मुझको भी चरन लगाय ॥ ८ ॥	नाम्न: कणिकां हृदये निधाय । मामपि चरणयोः योक्ष्यति ॥ ८ ॥
काल मोहि दीना बहु झकझोल । गुरू मोहि दीनी सरन अडोल ॥ ९ ॥	कालः बहुबलप्रहारं कृतवान् मयि। गुरुः माम् अचलशरणं दत्तवान् ॥ ९ ॥
हुए राधास्वामी दयाल सहाय । लिया मोहि छिन छिन आप बचाय ॥ १० ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः सहायक: अभवत् । प्रतिक्षणं मां रक्षितवान् स्वयं ॥ १० ॥
धरी मेरे हिरदे में परतीत । सिखाई अचरज भक्ती रीत ॥ ११ ॥	मम हृदि प्रतीतिं अधारयत् । अद्भुतभक्तिरीतिं अशिक्षयत् ॥ ११ ॥
शब्द सँग लागा घट में प्यार । नाम राधास्वामी मोर अधार ॥ १२ ॥	शब्देन सह हृदये प्रीतिः संलग्ना । रा धा/ध: स्व आ मी-नाम ममाश्रयः अस्ति ॥ १२ ॥
लिए गुरु मन और सुरत सुधार । बिरोधी दीने घट से टार ॥ १३ ॥	गुरुणा मन आत्मानं च संशोधितौ । शत्रून् हृदयात् अपसारितवान् ॥ १३ ॥

गाऊँ कस महिमा राधास्वामी सार । लिया मोहि जग से आप निकार ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-सारस्य महिमां कथं गायामि । मां जगतः स्वयं निष्कासितवान् ॥ १४ ॥
प्रेम अँग आरत उन गाऊँ । चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १५ ॥	प्रेमाङ्गेन तेषामारतिं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ नित्यं ध्यायामि ॥ १५ ॥
हुआ मोहि सतसँगियन से प्यार । संग उन गाऊँ गुरु गुन सार ॥ १६ ॥	सत्सङ्गीजनेभ्यः मम प्रीतिः जाता । तैः सह गुरुगुणसारं गायामि ॥ १६ ॥
चरन राधास्वामी हिये बसाय । रहूँ मैं नित गुरु प्रेम जगाय ॥ १७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदये धार्य । नित्यमहं गुरुं प्रति प्रेम जागरयामि ॥ १७ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८७ ॥ प्रेम गुरु मगन हुआ मन मोर	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम गुरु मगन हुआ मन मोर । दिये सब धंधे जग के छोड़ ॥ १ ॥	गुरुप्रेम्णा मम मनः मग्नमभूत् । जगतः सर्वाणि कर्माणि त्यक्तानि ॥ १ ॥
पीसती मन को कर बारीक । छोड़ती छिन छिन घर तारीक ॥ २ ॥	मर्दयामि मनःसूक्ष्मं कृत्वा । प्रतिक्षणं त्यजामि गृहाधंकारम् ॥ २ ॥
गुरू बल पल पल हिरदे धार । कूटती काम क्रोध अहंकार ॥ ३ ॥	गुरोः बलं प्रतिपलं हृदये धार्य । कामक्रोधाहंकारञ्च कुट्टयामि ॥ ३ ॥
पकाती घट में गुरु परतीत । जगाती छिन छिन नई नई प्रीत ॥ ४ ॥	गुरोः प्रतीतिं घटे दृढं करोमि । प्रतिपलं नवा प्रीतिं जागरयामि ॥ ४ ॥
साफ़ कर माँजूँ घट बासन | दरस गुरु करती तिल आसन ॥ ५ ॥	स्वच्छं कृत्वा घटवासनाः परिष्करोमि । षष्ठचक्रस्थाने गुरुदर्शनं करोमि ॥ ५ ॥
शब्द की डोरी गह कर हाथ । अमी जल भरूँ उमँग अँग साथ ॥ ६ ॥	शब्दस्य रज्जुं करे संगृह्य । उल्लासेन अमृतजलं पूरयामि ॥ ६ ॥
नाम रस करती घट में पान | सुरत मन रचिये तामें आन ॥ ७ ॥	घटे नाम्नः रसस्य पानं करोमि । आत्मामनश्च तस्मिन् विलयामि ॥ ७ ॥
बिरह की अगिनी घट सुलगाय | दरस गुरु करती त्रिकुटी धाय ॥ ८ ॥	विरहस्य अग्निं घटे प्रज्ज्वाल्य । गुरुदर्शनं करोमि त्रिकुटीपदे धावित्वा ॥ ८ ॥
बाज रही जहाँ नित धुन मिरदंग । चमक रहा सूरज लाली रंग ॥ ६ ॥	यत्र मृदंगध्वनिः नित्यं वाद्यते । सूर्यस्य रक्तवर्णः दीव्यति ॥९॥
सुन्न में खिली चाँदनी सेत' । ररँग धुन सुनती कर कर हेत ॥१०॥	सुन्नपदे श्वेतचन्द्रिका विकसिता। ररँगनादं श्रृणोमि प्रेम कृत्वा ॥१०॥
गुरु सँग गई महासुन पार । भँवर चढ़ सुनी बाँसुरी सार ॥११॥	गुरुणा साकं महासुन्नात् पारम् अगच्छम्। भँवरपदमारुह्य वेणुसारम् अश्रृण्वम्॥११॥
सत्तपुर दरस पुरुष का लीन । मगन होय सुनी मधुर धुन बीन ॥१२॥	सत्तपुरे पुरुषस्य दर्शनं कृतम् । तल्लीन: भूय मधुरं अहितुण्डनादमश्रृण्वम् ॥१२॥
अलख और अगम का पाया ज्ञान । चरन राधास्वामी परसे आन ॥१३॥	अलखागमयोः ज्ञानं प्राप्तम् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ प्राप्तौ आगत्य ॥१३॥
करी वहाँ आरत उमंग उमंग ।	तत्र उल्लसितमनसा आरति: कृता: ।

प्रेम का जहाँ नित बरसत रंग ॥१४॥	नित्यं यत्र प्रेम्णः रङ्ग्गः वर्षति ॥१४॥
कौन यह पावे घट गुरु ज्ञान । मेहर कर राधास्वामी दीना दान ॥१५॥	कः प्राप्तुं शक्यते घटे गुरुज्ञानममुं । कृपां कृत्वा रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः दानं दत्तवान् ॥१५॥
प्रेम गुरु चरनन आधारी । हुई में राधास्वामी बलिहारी ॥१६॥	प्रेम्णा गुरुचरणयोः आधारं प्राप्य । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालौ समर्पिताऽहम् ॥१६॥
करी अब यह आरत पूरन । सुरत लगी प्यारे राधास्वामी चरनन ।१७	इयमारतिं अधुना संपूर्णा कृता । आत्माः प्रिय-रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः अयुनजम्॥१७॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८८ ॥ शब्द गुरु आई मन परतीत	
हिंदी	संस्कृत
शब्द गुरु आई मन परतीत । धार लई मन में भक्ती रीति॥ १ ॥	शब्दगुरौ मनसि प्रतीतिः जाता । मनसि भक्तिरीतिः धृता ॥ १ ॥
खोज बहु कीना पिया घर का। मिला नहिं भेद मोहि धुर का ॥ २ ॥	प्रियस्य गृहान्वेषणं बहुधा कृतम् । सर्वोच्चपदस्य भेदं न प्राप्तं माम् ॥ २ ॥
भाग से आया गुरु दरबार । मिला मोहि राधास्वामी भेद अपार ॥३॥	सौभाग्यात् गुरुसदनमागतवान् । रा धा/धः स्व आ मीदयालोः अपारभेदं प्राप्तवान् अहम्॥३॥
सुरत और शब्द जुगत सारा । दई मोहि गुरु ने कर प्यारा ॥ ४ ॥	सुरतशब्दयोः सम्पूर्णयुक्तिम् । गुरुः प्रेम्णा मह्यम् दत्तवान् ॥ ४ ॥
उमँग कर लागा मन धुन में । लखा घट उजियारा सुन में ॥ ५ ॥	सोल्लासेन मनः ध्वनौ संलग्नम्। सुन्नपदे हृदि प्रकाशं दृष्टम् ॥ ५ ॥
निरखता गुरु की मेहर अपार । सुरत मन चढ़ते सुन झनकार ॥ ६ ॥	गुरोः अपारकृपामनुभवामि । आत्मामनश्च झङ्कारं श्रुत्वा आरोहतः ॥ ६ ॥
मगन मन सेवत गुरु चरना । बिमल चित धावत गुरु सरना ॥ ७ ॥	तल्लीनमनसा गुरुचरणयोः सेवां करोमि । निर्मलचित्तेन गुरुशरणं प्रति धावामि ॥ ७ ॥
भाग बढ़ अपना क्या गाऊँ । दई गुरु चरनन में ठाऊँ ॥ ८ ॥	निजभाग्योत्कर्षं किं गायेयम् । गुरुः चरणयोः स्थानं दत्तवान् ॥ ८ ॥
लिया मोहि जग से तुरत उबार । करम और भरम दिए सब टार ॥ ९ ॥	जगतः मां शीघ्रं निस्तारितवान् । सर्वे कर्मभ्रमाश्च दूरं कृतवान् ॥ ९ ॥
जगत का परमारथ झूँठा। बँधे सब काल करम खूँटा ॥१०॥	जगतः परमार्थः मिथ्या वर्तते । सर्वे कालकर्मणोः नागदन्तेन बद्धाः ॥ १० ॥
सत्तपद भेद नहीं पावें । जुगन जुग चौरासी धावें ॥ ११॥	सत्तपदस्य भेदं न प्राप्नुवन्ति । युगानुयुगं चतुरशीत्यां धावन्ति ॥ ११ ॥
बचन सतगुरु का नहिं माने । काल बस होय मन मत ठानें ॥१२॥	सद्गुरोः वचनं न मन्वते । कालवशे भूत्वा मन्मते विश्वसन्ति ॥ १२ ॥
बहुत मैं समझाया उनको । अभागी गहें नहिं घट धुन को ॥१३॥	बहुधा अहं तान् बोधितवान् । भाग्यहीनाः घटे ध्वनिं न गृह्णन्ति ॥ १३ ॥
भाग मेरा पूरन अब जागा |	मम पूर्णभाग्यमधुना जागरितम् ।

चरन गुरु चित मेरा लागा ॥१४॥	गुरुचरणयो: मम चित्तं संलग्नम् ॥ १४ ॥
सुनूँ मैं घट में धुन झनकार | गाऊँ नित राधास्वामी महिमा सार ॥१५॥	घटे ध्वनिझङ्कारं श्रृणोमि अहम्। नित्यं रा धा/ध: स्व आ मीमहिमासारं गायामि॥ १५ ॥
गगन चढ़ गुरु आरत गाऊँ । अमरपुर सत्तपुरुष ध्याऊँ ॥१६॥	गगने आरुह्य गुरोरारतिं गायामि । अमरपुरे सत्तपुरुषं ध्यायामि ॥ १६ ॥
अलख और अगम लोक के पार | चरन राधास्वामी परसे सार ॥ १७॥	अलखागमलोकयो: पारम् । रा धा/ध: स्व आ मीचरणसारं स्पृशामि ॥ १७ ॥
मिला मोहि आनँद अति भारी । सुफल हुई नरदेही सारी ॥१८॥	अहम् अत्यानन्दं आप्नवम् । सर्वं नरदेहं सफलं जातम् ॥ १८ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ८९ ॥ आरती राधास्वामी गाऊँगी	
हिंदी	संस्कृत
आरती राधास्वामी गाऊँगी । दरस पर बलि बलि जाऊँगी ॥ १ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: आरतिं गास्यामि । दर्शने समर्पिता भविष्यामि ॥ १ ॥
उमँग का थाल सजाऊँगी । प्रेम की जोत जगाऊँगी ॥ २ ॥	उल्लासस्य स्थालीं सज्जयिष्यामि । प्रेम्ण: ज्योतिं जागरयिष्यामि ॥ २ ॥
दीन दिल सन्मुख आऊँगी । प्रीति हिये माहिं बसाऊँगी ॥ ३ ॥	दीनहृदयेन सन्मुखमागमिष्यामि हृदये प्रीतिं धारयिष्यामि ॥ ३ ॥
ध्यान गुरु चरनन लाऊँगी । शब्द में सुरत लगाऊँगी ॥ ४ ॥	गुरुचरणयोः ध्यानं आनयिष्यामि । शब्दे आत्मानं योक्ष्यामि ॥ ४ ॥
गुरु की महिमा गाऊँगी । भेंट तन मन चढ़ाऊँगी ॥ ५ ॥	गुरोः महिमां गास्यामि । तनुमन: च समर्पयिष्यामि ॥ ५ ॥
दया गुरु पार कर जाऊँगी । जोत का दरशन पाऊँगी ॥ ६ ॥	गुरो: दयया पारं गमिष्यामि । ज्योते: दर्शनं प्राप्स्यामि ॥ ६ ॥
गगन चढ़ शब्द जगाऊँगी। ओंग धुन गरज सुनाऊँगी ॥ ७ ॥	गगने आरुहय शब्दं जागरयिष्यामि । ओङ्कारनादघोषं श्रावयिष्यामि ॥७॥
सुन्न चढ़ बेनी न्हाऊँगी। राग हंसन सँग गाऊँगी ॥ ८ ॥	सुन्नपदे आरुहय त्रिवेण्यां स्नास्यामि । हंसैः सह रागं गास्यामि ॥८॥
महासुन पार जाऊँगी। सोहँग मुरली बजाऊँगी ॥ ९ ॥	महासुन्नात् पारं गमिष्यामि । सोहंगपदे मुरलीं वादयिष्यामि ॥९॥
सत्तपुर बीन सुनाऊँगी । पुरुष का दरशन पाऊँगी ॥१०॥	सत्तपुरे अहितुण्डवाद्यं श्रावयिष्यामि । पुरुषस्य दर्शनं प्राप्स्यामि ॥१०॥
परे तिस सुरत चढ़ाऊँगी । अलख लख अगम धियाऊँगी ॥११॥	तदग्रे आत्मानं आरोहयिष्यामि । अलखपदं वीक्ष्य अगमपदं ध्यायिष्यामि॥११॥
दरस राधास्वामी पाऊँगी । चरन गह सरन समाऊँगी ॥१२॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दर्शनं प्राप्स्यामि । चरणौ गृहीत्वा शरणं संवेक्ष्यामि ॥१२॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ९० ॥ चरन गुरु नित्त बढ़ाऊँ लाग	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु नित्त बढ़ाऊँ लाग । चेत कर रहूँ नैन गुरु ताक ॥१॥	गुरुचरणयो: नित्यं प्रीतिं वर्धे । अवधानेन गुरोः नेत्रे अवलोकयामि ॥१॥
बचन सुन अटक भटक सब छोड़ । रहूँ नित चरनन में चित जोड़ ॥२॥	वचनं श्रुत्वा सर्वं स्थितिविचलनं त्यक्त्वा । सदा चित्तं चरणयो: युनज्मि ॥२॥
संत मत भेद मिला अति गूढ़ । जगत के सब मत देखे कूड़ ॥३॥	संतमतस्य अतिगूढ़भेदं प्राप्तम् । जगत: सर्वे मतानि अवस्कराः दृष्टाः॥३॥
रहे सब माया मन के वार । करम बस बहे चौरासी धार ॥४॥	सर्वे मायामनसो: अधीना अत्रैव आसन्। कर्मवशात् चतुरशीत्यां अप्रवहन् ॥४॥
भाग मेरा जागा अति गंभीर । चरन में राधास्वामी पाई धीर ॥५॥	ममातिगम्भीरभाग्यं जागरितम् । <u>रा</u> <u>धा/ध:</u> <u>स्व</u> <u>आ</u> <u>मी-</u>चरणयो: धैर्यं प्राप्तम् ॥५॥
लखी मैं गुरु की अचरज क्रांत । पाई मैं घट में पूरी शांत ॥६॥	अहं गुरो अद्भुतक्रान्तिं अपश्यम् । अहं घटे पूर्णशान्तिं आप्नवम् ॥६॥
चढ़ाया मौपै अचरज रंग । दिया तज जग जीवन का संग ॥७॥	अद्भुतरङ्गेन मां रञ्जितवान् । जगत: जीवानां सङ्गं त्यक्तवान् ॥७॥
हुई मोहि गुरु की दृढ़ परतीत । चरन में लागी अचरज प्रीत ॥८॥	गुरुं प्रति मयि दृढप्रतीतिः जाता । चरणयोरद्भुतप्रीतिः सञ्जाता ॥८॥
लगा मोहि गुरु मारग प्यारा । सुरत और शब्द भेद सारा ॥९॥	गुरुमार्ग: महयम रोचते । उत्तमसुरतशब्दयो: भेदः ॥९॥
रूप गुरु धरता हिये में ध्यान । सुमिरता नाम अमी रस खान ॥१०॥	हृदये गुरुरूपं ध्यायामि। अमृतस्य आगारं नाम स्मरामि ॥१०॥
सुरत मन लाग रहे नभ द्वार | झड़त जहाँ छिन छिन अमृत धार ॥११॥	आत्मामनश्च नभद्वारे संलग्नौ । यत्र प्रतिक्षणममृतधारा क्षरति ॥११॥
सुनत रही घंटा संख पुकार | गगन चढ़ झाँकत गुरु दरबार ॥१२॥	घंटाशङ्खयोः आहवानं श्रृणोमि । गगनमारुहय गुरुसदनमवलोकयामि ॥१२॥
दसम दर सुनती सारँग सार । भँवर चढ़ लखा सेत उजियार ॥१३॥	दशमद्वारे सारङ्गसारं श्रृणोमि | भंवरगुहामारुहय श्वेतप्रकाशं दृष्टम् ॥१३॥
सत्तपुर सुनी बीन धुन जाय ।	सत्तपुरं प्राप्य आहितुण्डवाद्यस्य ध्वनिः श्रुत: ।

अलख और अगम पहुँची धाय ॥१४॥	धावित्वा अलखागमपदौ प्राप्तौ ॥१४॥
निरख राधास्वामी धाम उजार । सुरत मेरी हुई अजब सरशार ॥१५॥	रा धा/ध: स्व आ मी-धामस्य(धाम्न:) प्रकाशं निरीक्ष्य । ममात्मा अद्भुतानन्दं प्राप्तवान् ॥१५॥
उमँग की थाली कर में धार । प्रेम अँग आरत गाऊँ सार ॥१६॥	उल्लासस्य स्थालिकां हस्ते धार्य । प्रेमाङ्गेन आरते: सारं गायामि॥१६॥
मेहर राधास्वामी कीनी आज । हुआ मेरा सब बिध पूरन काज ॥१७॥	अद्य रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः कृपां कृतवान् । सर्वविधिना मम कार्यं पूर्णं जातम् ॥१७॥

॥ शब्द ९१ ॥बाल बुध अब तक रहा अजान	
हिंदी	संस्कृत
बाल बुध अब तक रहा अजान । करी नहिं सतगुरु की पहिचान ॥ १ ॥	बालबुद्धिः इदानीं यावत् अज्ञानी अभवम् । सद्गुरोः अभिज्ञानं न कृतम् ॥ १ ॥
खैंच मोहि लीना किरपा धार । चरन में दीना प्रेम पियार ॥ २ ॥	कृपां धार्य माम् आकृष्टवान् । चरणयोः प्रेमप्रीतिः च दत्तवान् ॥ २ ॥
लगें मोहि सतसंगी प्यारे । रहूँ नित हाज़िर गुरु द्वारे॥ ३ ॥	सत्संगीजनाः मह्यम् रोचन्ते । नित्यं गुरोः द्वारे उपस्थितः भवामि ॥ ३ ॥
मगन होय दर्शन गुरु करता । निरख कर छबि हिये में धरता ॥ ४ ॥	प्रमत्तः भूत्वा गुरुदर्शनं करोमि । छविं निरीक्ष्य हृदये धरामि ॥ ४ ॥
हरखता गुरु का देख बिलास । निरखता घट में अजब उजास ॥ ५ ॥	गुरोः विलासं दृष्ट्वा हर्षामि । घटे अद्भुतप्रकाशं निरीक्षे॥ ५ ॥
प्रीति गुरु हिरदे धार रहा । दया पर तन मन वार रहा ॥ ६ ॥	गुरोः प्रीतिं हृदि धारयामि । दयायां तनुमनसी समर्पयामि ॥ ६ ॥
बढ़त मम हिरदे गुरु परतीत । जगा मेरा अचरज भाग अजीत ॥ ७ ॥	मम हृदये गुरुप्रतीतिः वर्धते । मम अनुपमाजेयं च भाग्यं जागरितम् ॥ ७ ॥
नित्त मैं सुमिरूँ राधास्वामी नाम । भोग जग दीखें मोहि सब ख़ाम ॥ ८ ॥	नित्यं अहं रा धा/धः स्व आ मी-नाम स्मरामि। जगतः सर्वे भोगाः व्यर्थाः दृश्यन्ते माम् ॥ ८ ॥
जगत का देखा रंग असार । चरन में गुरु के धारा प्यार ॥ ९ ॥	जगतः असारः वर्णः दृष्टः । गुरुचरणयोः प्रीतिः धृता ॥ ९ ॥
बचन गुरु अमृत रूप निहार । सुनूँ मैं हित चित से उर धार ॥ १० ॥	गुरुप्रवचनानाम् अमृतरूपं निरीक्ष्य । अहं हितचित्तेन च हृदये धार्य श्रृणोमि॥ १० ॥
करूँ नित सुरत शब्द की तोल । मिला मोहि घट का भेद अमोल ॥ ११ ॥	नित्यमहं आत्मानं शब्दं च तोलयामि । मया घटस्य अमूल्यभेदः प्राप्तः ॥ ११ ॥
संत गत नहिं जाने कोइ जन । धार रहे माया संग लगन ॥ १२ ॥	संतपुरुषस्य गतिं न जानाति कोऽपि । मायया साकं गहनसंबंधं धारयन्ति॥ १२ ॥
भरम रहे सब जिव माया संग । कुमत बस नहिं धारें गुरु रंग ॥ १३ ॥	मायया साकं सर्वजीवाः भ्रमन्ति। कुमतिवशात् गुरुरंगं न धारयन्ति॥ १३ ॥
सुमत का करें न नेक बिचार । कर्म बस बहें चौरासी धार ॥ १४ ॥	सुमत्याः किञ्चिदपि विचारं न कुर्वन्ति । कर्मवशात् चतुरशीत्याः धारासु प्रवहन्ति ॥ १४ ॥

जीव का अपने हित नहिं लाय । भाव भय जग का रहा समाय ॥ १५ ॥	जीवा आत्मनः हितं न विचारयन्ति । जगत: भावभयं समाविशति ॥ १५ ॥
संत का सतसँग नहिं करते । नहीं गुरु निंदा से डरते ॥ १६ ॥	सन्तजनस्य सत्संगं न कुर्वन्ति। गुरो: निन्दात: न बिभ्यति ॥ १६ ॥
कौन कहे इनको अब समझाय । बचन गुरु मन में नहीं समाय ॥ १७ ॥	क अधुना इमान् बोधितुं शक्नोति । गुरो: प्रवचनानि मनसि न समाविशन्ति ॥ १७ ॥
हुई गुरु किरपा मोपर आज । दया कर दीना भक्ती साज ॥ १८ ॥	अद्य मयि गुरो: कृपा अभवत् । दयां कृत्वा भक्तयुपकरणानि दत्तवान् ॥ १८ ॥
प्रेम अँग आरत राधास्वामी गाय । रहूँ नित राधास्वामी सरन समाय ॥१९॥	प्रेमाङ्गेन रा धा/ध: स्व आ मी-आरतिं गायामि । नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं संविशामि ॥ १९ ॥

प्रेमबानी भाग १ ॥ शब्द ९२॥ मेरे मन छाय रहा गुरु प्रेम	
हिंदी	संस्कृत
मेरे मन छाय रहा गुरु प्रेम । छोड़ दिये करम भरम और नेम ॥ १ ॥	गुरुप्रेम मम मनसि व्याप्तम् । कर्मभ्रमनियमा: त्यक्ताः॥ १ ॥
निरख छबि अचरज हुआ भारी । हुई गुरु दरशन मतवारी ॥ २ ॥	छविं दृष्ट्वा अतिविस्मयः जातः । गुरुदर्शनेन उन्मत्ता अभवम् ॥ २ ॥
मेहर की दृष्टी गुरु डारी । सुद्ध बुध भूल गई सारी ॥ ३ ॥	गुरुः आशीर्वृष्टिं कृतवान् । सर्वं विवेकं विस्मृतं मया ॥ ३ ॥
चरन में उपजा गहिरा प्यार । दरस कर रही मैं सन्मुख ठाड़ ॥ ४ ॥	चरणयो: गहनप्रीति: जाता । दर्शनं कृत्वा सम्मुखं स्थिता ॥ ४ ॥
करम का उतरा सगला भार । मोह और माया बैठे हार ॥ ५ ॥	कर्मण: सकलभारः अपसारितः । मोहमाया च पराजितौ ॥ ५ ॥
भेद मोहि दीना किरपा धार । हुआ मोहि घट धुन संग पियार ॥ ६ ॥	कृपां धार्य मां भेदं ज्ञापितवान् । घटे मम ध्वनिना सह प्रीति जाता ॥ ६ ॥
सुरत रहे निस दिन रस पीती । गुरू बल काल करम जीती ॥ ७ ॥	आत्मा प्रतिदिनं रसं पिबति । गुरुबलेन कालकर्माणि जितानि ॥ ७ ॥
शब्द की झड़ियाँ लाग रहीं । सुरत मन भींजत जाग रहीं ॥ ८ ॥	शब्दस्य अजस्त्रधाराः प्रवहन्ति । आत्मामनश्च आर्द्रं भूत्वा जागरितौ ॥ ८ ॥
दिखाया गुरु ने अचरज खेल । सुरत मन रहे शब्द रस झेल ॥ ९ ॥	गुरु: अद्भुतक्रीडां दर्शितवान् । आत्मामनश्च शब्दरसे निमज्जितौ ॥ ९ ॥
चलाई सुरत शब्द की रेल । काल और कर्म दिये सब पेल ॥ १० ॥	सुरतशब्दयो: प्रवाह: चालितवान् । कालकर्मौ च बलादपसारयितौ॥ १० ॥
हटाया जग का भाव असार । मिटाया निज मन से अहंकार ॥ ११ ॥	जगत: असारभावं अपाकृतम् । निजमनस: अहंकारमुन्मार्जितम् ॥ ११ ॥
कहूँ कस राधास्वामी महिमा गाय । गई सब मेरी दूर बलाय ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीमहिमां कथं गायेयम् । मम सकलविपत्तय: दूरं गता: ॥ १२ ॥
उमँग कर गुरु के सन्मुख आय । करूँ उन आरत सामाँ लाय ॥ १३ ॥	उल्लसितं भूत्वा गुरुसम्मुखमागता । तेषामारतिं करोमि उपादानमादाय ॥ १३ ॥
खड़ी हुई सन्मुख दृष्टी जोड़ । शब्द की बाजी धुन घनघोर ॥ १४ ॥	दृष्टिं संयोज्य सम्मुखं तिष्ठामि । शब्दस्य उच्चध्वनिः अनदत् ॥ १४ ॥

हुए परसन राधास्वामी दयाल । मेहर कर कीना मोहि निहाल ॥ १५ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः प्रसन्नः जातः । कृपां कृत्वा मां कृतार्थं कृतवान् ॥ १५ ॥

॥ शब्द ९३ ॥ प्रीति मेरी लागी गुरु चरना	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति मेरी लागी गुरु चरना । धार लई मन में गुरु सरना ॥ १ ॥	मम प्रीतिः गुरुचरणयोः संलग्ना । मनसि गुरुशरणं धृतम् ॥ १ ॥
जगत का देख मलिन ब्योहार । हुआ मन मेरा अति बेज़ार ॥ २ ॥	जगतः मलिनव्यवहारं दृष्टवा । मम मनः अतिः खिन्नः अभवत् ॥ २ ॥
कुशल कहिं दीखे नहिं जग माहिं । धाय कर पकड़े सतगुरु पायँ ॥ ३ ॥	कुत्राऽपि कुशलः न दृश्यते जगति । धावित्वा सद्गुरुचरणौ गृहीतौ ॥ ३ ॥
बिना उन रक्षक नहिं संसार । गही उन चरनन ओट सम्हार ॥ ४ ॥	तं विना जगतः रक्षकः नास्ति । तेषां चरणयोः शरणम् अवधानेन गृहीतम् ॥ ४ ॥
दया कर लीना मोहि अपनाय । दिया मेरा सोया भाग जगाय ॥ ५ ॥	दयां कृत्वा माम् स्वीकृतवान् । मम सुप्तं भाग्यं जागरितवान् ॥ ५ ॥
चरन में दीना गहिरा प्यार । उतारा कर्म भर्म का भार ॥ ६ ॥	चरणयोः दृढ़प्रीतिं दत्तवान् । कर्मभ्रमानां भारं अपाकृतवान् ॥ ६ ॥
सुनाए मुझ को निज बचना । प्रेम रँग मन सूरत सजना ॥ ७ ॥	माम् निजप्रवचनानि अश्रावयत् । प्रेमरंगेन मनात्मानौ सज्जितौ ॥ ७ ॥
भेद मारग का दीन बताय । शब्द सँग सूरत लीन जगाय ॥ ८ ॥	मार्गस्य भेदं बोधितवान्। शब्देन साकं आत्मानं जागरितवान्॥ ८ ॥
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार । गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ॥ ९ ॥	नित्यावधानेन अभ्यासं करोमि अहम् । रा धा/धः स्व आ मी-गुणान् भूयोभूयः गायामि ॥ ९ ॥
काल से लीना सहज छुड़ाय । दिया निज घर का भेद जनाय ॥ १० ॥	कालात् सहजे अमोचयत् । निजगृहस्य भेदं अबोधयत् ॥ १० ॥
कौन यह जाने भेद अपार । फँसे सब काल कर्म के जाल ॥ ११ ॥	कः जानाति एतदपारभेदम् । सर्वे कालकर्मणोः पाशे बद्धीभूताः ॥ ११ ॥
मेहर मोपै राधास्वामी की भारी । किया मेरा जम से छुटकारी ॥ १२ ॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः मयि अपारदयां कृतवान् । कालात् माम् अमोचयत् ॥ १२ ॥
शब्द सँग करत रहूँ नित केल । रहूँ नित घट में आनँद झेल ॥ १३ ॥	शब्देन साकं नित्यं क्रीडां करोमि। नित्यं घटे आनन्दमनुभवामि ॥ १३ ॥

प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार । रहूँ मैं अचरज रूप निहार ॥ १४ ॥	प्रेम्णा रा धा/ध: स्व आ मी-आरतिं धार्य । अद्भुतं रूपं निरीक्षे अहम् ॥ १४ ॥
चरन में जोड़ रहूँ नित चित्त । गाऊँ मैं राधास्वामी महिमा नित्त ॥ १५ ॥	चरणयो: नित्यचित्तं युनज्मि । रा धा/ध: स्व आ मी-महिमां नित्यं गायामि ॥ १५ ॥

॥ शब्द ९४ ॥ कहें सब महिमा संत पुकार	
हिंदी	संस्कृत
कहें सब महिमा संत पुकार बिना उन नहिं पावे सच यार ॥ १ ॥	संतजनाः सर्वमहिमां कथयन्ति आहूय। तं विना न प्राप्नुयात् सत्यं मित्रम् ॥ १ ॥
संत सब धुर घर से आवें । भेद कुल मालिक का गावें ॥ २ ॥	सर्वे संता: सर्वोच्चपदादागच्छन्ति। पूर्णप्रभोः भेदं गायन्ति ॥ २ ॥
जुगत चलने की बतलावें । घाट और बाटी समझावें ॥ ३ ॥	गमनस्य युक्तिं कथयन्ति । घट्टं मार्गञ्च बोधयन्ति ॥ ३ ॥
जगा जिस जिव का गहिरा भाग। मिला वाहि संत चरन अनुराग ॥ ४ ॥	यस्य जीवस्य गहनभाग्यं जागरितम् । तमेव संतचरणयो: अनुरागं प्राप्तम् ॥ ४ ॥
करी जिन संत बचन परतीत । गया वही निज घर भौजल जीत ॥५॥	येन संतवचनेषु प्रतीतिः कृता । सैव भवजलं तीर्त्वा निजधामं(धाम) आप्नोत्॥५॥
मिले मोहि सतगुरु संत दयाल । काट दिये फंदे जम और काल॥ ६ ॥	दयालुः संतसद्गुरुः मया प्राप्तः । यमकालयोः पाशानि अकृन्तत् ॥ ६ ॥
टेक पिछलों की दीन मिटाय । सरन गुरु महिमा चित्त बसाय ॥ ७ ॥	अतीतान्धविश्वासं उन्मार्जितम् । गुरुशरणस्य महिमा चित्ते धारिता ॥ ७ ॥
मेहर से लीना मोहि अपनाय । सुरत मन दोनों दीन जगाय ॥ ८ ॥	कृपया मां स्वीकृतवान् । आत्मामनसी अजागरयताम् ॥ ८ ॥
शब्द की बख़्शी घट परतीत । चरन में दीनी अचरज प्रीत ॥ ९ ॥	घटे शब्दप्रतीतिं दत्तवान् । चरणयो: अद्भुतप्रीतिं उद्भावितवान्॥ ९ ॥
रहूँ मैं नित गुरु चरन सम्हार । गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ॥ १० ॥	अहं नित्यं गुरुचरणौ अवधानेन वसामि । भूयो भूयः रा धा/ध: स्व आ मी-गुणान् गायामि ॥ १० ॥
करूँ मैं आरत उनकी सार । धरूँ गुरु सन्मुख तन मन वार ॥ ११ ॥	अहं तेषां उत्तमारतिं करोमि। तनुमनसी गुरुसम्मुखं समर्पयामि ॥ ११ ॥
दया राधास्वामी लेकर संग । गाऊँ उन आरत उमँग उमंग ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयया साकम् । अत्युल्लासेन तेषामारतिं गायामि ॥ १२ ॥
मेहर गुरु परशादी पाऊँ । चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १३ ॥	गुरुकृपया प्रसादं प्राप्नोमि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ नित्यं ध्यायामि ॥ १३ ॥

किया मेरा राधास्वामी पूरन काज । सुफल हुई नरदेही मेरी आज ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: मम कार्यं पूर्णं कृतवान् । अद्य मम नरदेह: सिद्धकाम: ॥ १४ ॥

॥ शब्द ९५ ॥ बाल सम रहा गोद गुरु खेल	
हिंदी	संस्कृत
बाल सम रहा गोद गुरु खेल । सुरत मन रहे चरन रस झेल ॥ १ ॥	बालसमं गुरुक्रोडे क्रीडामि । आत्मामनश्च चरणरसे मग्नौ ॥ १ ॥
मेहर गुरु चढ़ा शब्द की रेल । सुरत रही प्रेम संग धुन मेल ॥ २ ॥	गुरुकृपया शब्दयाने आरोहितवान्। आत्मा प्रेम्णा ध्वनौ संलग्नः ॥ २ ॥
धुनन सँग करत रहूँ नित केल । मोह जग पटक दिया ज्यों ढेल ॥ ३ ॥	ध्वनिभिः साकं नित्यं क्रीडामि । जगतः मोहं त्यक्तं मृत्तिकाखण्डवत् ॥ ३ ॥
नाम की गल में डाल हमेल । सरन में गुरु के रहूँ अलेल ॥ ४ ॥	कण्ठे नाम्नः मालां धार्य । गुरुशरणे वसामि निश्चिन्तं भूत्वा ॥ ४ ॥
जगत सँग हो गई सहज अमेल । भोग सब दीने आज सकेल ॥ ५ ॥	जगता साकं सहजेन विमुखाभवम् । सर्वभोगाः अद्य त्यक्ताः ॥ ५ ॥
काल को डालूँ छिन छिन पेल । ममत माया का काढूँ तेल ॥ ६ ॥	कालं प्रतिक्षणं नश्यामि । ममतामाययोः तैलं निष्कासयामि॥ ६ ॥
दूत सब मारूँ धर कर सेल । पकड़ मन राखूँ बाँध नकेल ॥ ७ ॥	सर्वदूतान् मारयामि शूलं धार्य । मनः नियंत्रयामि नासिकारज्जुम् आबध्य ॥ ७ ॥
काल ने डाली बहुत झमेल । गुरू बल दीना वाहि ढकेल ॥ ८ ॥	कालपुरुषेन बहूनि कष्टानि दत्तानि । गुरोः बलात् तं अधक्कयत् ॥ ८ ॥
चढ़त अब सुन में सूरत बेल । करत वहाँ हंसन संग कुलेल ॥ ९ ॥	अधुना सुन्नपदे आत्मलता आरोहति । तत्र हंसैः सह विलासं करोति॥ ९ ॥
सूँघती मलया इतर फुलेल । सत्तपद पहुँची होय अकेल ॥ १० ॥	मलयसुगन्धिं सुवासित तैलं च जिघ्रति। सत्तपदं अगच्छम् एकाकीभूय ॥ १० ॥
चढ़ाई ऊँचे को फिर ठेल । चरन राधास्वामी परसे हेल ॥ ११ ॥	तदारोहयितः उच्चपदे धक्कायन् । हर्षितं भूत्वा रा धा/धः स्व आ मी-चरणौ स्पृष्टौ ॥११ ॥

॥ शब्द ९६ ॥ आस गुरु चरनन धार रही	
हिंदी	संस्कृत
आस गुरु चरनन धार रही। आरती अद्भुत साज लई	गुरुचरणयो: आशां धरामि । अद्भुतारति: सज्जीकृता ॥ १ ॥
चित्त में छाया निज बैराग । चरन गुरु बढ़ता नित अनुराग ॥ २ ॥	चेतसि निजवैराग्यं व्याप्तम् । गुरुचरणयो: अनुराग: नित्यं वर्धते ॥ २ ॥
चाह सतसँग की मन में धार । बचन नित सुनती होय हुशियार ॥ ३ ॥	सत्सङ्गस्य इच्छां मनसि धार्य । नित्यं वचनं श्रृणोमि अवधानेन ॥ ३ ॥
चित्त से घटती नित बिपरीत । चरन गुरु बढ़ती नित परतीत ॥ ४ ॥	चित्तात् विपरीतभावः नित्यं क्षीयते । गुरुचरणयोः प्रतीतिः नित्यं वर्धते ॥ ४ ॥
शब्द की बढ़ती घट में साख । चढ़ाती सूरत धुन में राख ॥ ५ ॥	घटे शब्दस्य प्रतिष्ठा वर्धते । ध्वनिना संयोज्य आत्मानम् आरोहयामि ॥ ५ ॥
सहसदल निरखा जोत उजार । सुनत रही घंटा संख पुकार ॥ ६ ॥	सहस्रदलपदे ज्योते: प्रकाशम् ईक्षितम् । घंटाशङ्खयो: आह्वानं अश्रृणवम् ॥ ६ ॥
गगन में बाजी धुन मिरदंग | चरन गुरु हिरदे लागा रंग ॥ ७ ॥	गगने मृदङ्गध्वनिः अनदत् । गुरु चरणयोः राग: हृदये संलग्न: ॥ ७ ॥
सुन्न चढ़ सुनती सारँग सार । किया जाय हंसन संग पियार ॥ ८ ॥	सुन्नपदे आरुह्य सारङ्गसारं श्रृणोमि। हंसैः साकं प्रीतिं अकरवं गत्वा॥ ८ ॥
भँवर चढ़ सुना शब्द सोहंग । सत्तपुर पहुँची धार उमंग ॥ ९ ॥	भंवरपदे आरुह्य सोहंगशब्दम् अश्रृणवम् । उल्लासं धार्य सत्तपुरं प्राप्तम् ॥ ९ ॥
अलखपुर गई हिये धर प्यार | अगमगढ़ चढ़ती उमँग सम्हार ॥ १० ॥	हृदि प्रीतिं धार्य अलखपुरं गतवान् । सोल्लासेन अगमदुर्गे आरोहामि ॥१०॥
दरश राधास्वामी पाया सार । सरन गह बैठी काज सँवार ॥ ११ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दर्शनसारं प्राप्तम् । शरणं धार्य कार्य संपुष्य असीदम् ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९७ ॥ करी राधास्वामी मेहर नई	
हिंदी	संस्कृत
करी राधास्वामी मेहर नई । उमँग घट अंतर जाग रही ॥ १ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: नवा कृपां कृतवान्। घटान्तसि उल्लास: जागर्ति ॥ १ ॥
उठत सेवा की नई तरंग । चरन गुरु दिन दिन बाढ़त रंग ॥ २ ॥	सेवाया: नवतरङ्गः उद्भवति । गुरुचरणयो: प्रतिदिनं प्रीति: वर्धते ॥ २ ॥
बिबिध सब सामाँ लाई साज । करूँ गुरु आरत अद्भुत आज ॥ ३ ॥	विविधपदार्थान् अलंकृत्य आनीतवती । अद्य गुरो: अद्भुदारतिं करोमि ॥ ३ ॥
जुड़ा हंसन का जहाँ समाज । होत अब सबका पूरन काज ॥ ४ ॥	यत्र हंसानां समाज: एकत्रीभूत: । अधुना सर्वेषां कार्यं पूर्णं भवति ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी हिये में चीन्ह । गावती महिमा होय लौलीन ॥ ५ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयां हृदये विज्ञाय । लयलीना भूत्वा महिमां गायामि ॥ ५ ॥
देख अस शोभा हरखत मन । कहत धन धन राधास्वामी धन धन ॥ ६ ॥	ईदृशी शोभां संपश्य मन: मोदते । कथयामि धन्य: धन्य: रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: धन्य: ॥६॥
मेहर बिन क्या सेवा बन आय । दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय ॥ ७ ॥	कृपां विना काऽपि सेवां न कर्तुं शक्यते। रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः मम भाग्यं अजागरयत्॥ ७ ॥
याद गुरु करत रहूँ हर बार । ध्यान उन धरत रहूँ कर प्यार ॥ ८ ॥	गुरुं स्मरामि प्रतिवारम् । तेषां ध्यानं धरामि प्रीतिं कृत्वा ॥ ८ ॥
प्रीति गुरु डोर बँधी मज़बूत लाग रहा गुरु चरनन से सूत ॥ ९ ॥	गुरु प्रीत्या: दृढ़सूत्रं बद्धम् । गुरुचरणयो: सूत्रं युङ्क्ते:॥ ९ ॥
देख मोहि दीन अधीन अनाथ । रखा मेरे सिर पर गुरु ने हाथ ॥ १० ॥	मां दीनाधीनं अनाथं च दृष्ट्वा । गुरु: मम शिरसि हस्तं स्थापितम् ॥ १० ॥
हिये में दृढ़ परतीत धरी । मान मद माया सकल हरी ॥ ११ ॥	हृदये दृढ़प्रतीति: धृता । मानमदमायाश्च सर्वा: नष्टा: ॥ ११ ॥
कहाँ लग राधास्वामी गुन गाऊँ । दई मोहि चरनन में ठाऊँ ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-गुणान् कियत्पर्यन्तं गायामि । चरणयो: मह्यं शरणं दत्तवान्॥ १२ ॥
करूँ मैं बिनती चरनन में ।	अहं चरणयो: प्रार्थनां करोमि।

देव मोहि धुन रस अंतर में ॥ १३ ॥	अन्तसि मह्यं नादरसं दद्यात् ॥ १३ ॥
सुनूँ मैं घट में अनहद शोर । शब्द रस पिऊँ सुरत मन जोड़ ॥ १४ ॥	घटे अनहदशब्दं शृणोमिअहम् । शब्दरसं पिबामि आत्मामनश्च योजयित्वा ॥ १४ ॥
खोल तिल पट को देख बहार । सहसदल निरखूँ जोति उजार ॥१५॥	तिलपाटमुद्घाट्य प्रफुल्लतां पश्य। सहस्त्रदलपदे ज्योतेः प्रकाशं निरीक्षे ॥१५॥
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊँ । दरस गुरु निरखत हरषाऊँ ॥१६॥	बंकनालं प्रविश्य त्रिकुटीपदे आरोहामि। गुरुदर्शनं निरीक्ष्य हर्षामि ॥१६॥
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाऊँ । दाग़ कलमल के धुलवाऊँ ॥१७॥	सुन्नपदे आरुह्य त्रिवेण्यां स्नानामि । कलुषतामलिनतायाश्च चिह्नान् प्रक्षालयामि ॥१७॥
महासुन घाटी चढ़ गुरु बल । भँवर का शब्द सुनूँ चढ़ चल ॥ १८ ॥	गुरुबलेन महासुन्नोपत्याकायाम् आरुह्य। भँवरपदस्य शब्दं श्रृणोमि आरुह्य तत्र ॥ १८ ॥
सत्तपुर सुनूँ बीन धुन तान । पुरुष के चरनन लाऊँ ध्यान ॥१९॥	सत्तपुरे अहितुण्डवाद्यस्य स्वरं श्रृणोमि अवधानेन। पुरुषस्य चरणयोः ध्यानं धरामि ॥१९॥
अलख चढ़ अगम में पहुँचूँ धाय । चरन राधास्वामी परसूँ जाय ॥२०॥	अलखमारुह्य अगमपदं प्राप्नोमि धावित्वा। रा धा/धः स्व आ मी-चरणौ स्पृशामि गत्वा ॥२०॥
मेहर से पाऊँ यह निज धाम । करै मेरी सूरत वहाँ बिस्राम ॥२१॥	कृपया प्राप्नोमि एतं निजधामम्(धाम)। तत्र ममात्मा विश्रामं कुर्यात् ॥२१॥

॥ शब्द ९८ ॥ प्रीति गुरु अब मन में जागी	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति गुरु अब मन में जागी । सुरत हुई धुन रस अनुरागी ॥ १ ॥	अधुना मनसि गुरवे प्रीति: जागरिता। आत्मा शब्दरसानुरागी अभूत्॥ १ ॥
बहुत दिन जग में रहा भरमान । न सूझी जीव की लाभ और हानि ॥ २ ॥	जगति बहुदिवस पर्यंतं भ्रमे आसम् । आत्मन: हानिलाभस्य विचारं न कृतम् ॥ २ ॥
सुना जब गुरु संगत का भेद । धरी मन दरशन की उम्मेद ॥ ३ ॥	यदा गुरुसंगतस्य भेदं श्रुतम् । मनसि दर्शनस्य आशा धृता॥ ३ ॥
साध सँग आया गुरु दरबार । होत जहाँ निस दिन जीव उबार ॥ ४ ॥	साधुभिः सह गुरुसदनमागतवान् । प्रतिदिनं यत्र जीवोद्धारं भवति॥ ४ ॥
दरस गुरु जागा मन में प्यार । रहा गुरु चरनन निश्चय धार ॥ ५ ॥	गुरुदर्शनाय मनसि प्रीति: जागरिता । गुरुचरणयो: विश्वासं धृतम् ॥ ५ ॥
शब्द गुरु धारा मन बिश्वास । त्याग दई जग भोगन की आस ॥ ६ ॥	मनसि शब्दगुरो: विश्वासं धृतम् । जगतः भोगानामाशा त्यक्ता ॥ ६ ॥
करूँ गुरु सेवा सहित हुलास । दया गुरु पाऊँ चरन निवास ॥ ७ ॥	सोल्लासेन गुरुसेवां करोमि । गुरो: दयया चरणयो: वासं प्राप्नोमि ॥ ७ ॥
लगें गुरु सतसंगी प्यारे । प्रीति उन रहूँ मन में धारे ॥ ८ ॥	गुरु: सत्सङ्गीजना: च प्रिया: प्रतीयन्ते । मनसि तेभ्य: प्रीतिं धरामि ॥ ८ ॥
बचन गुरु सुन सुन हरखाता । हुआ मन चरन सरन राता ॥ ९ ॥	गुरुवचनानि श्रावं श्रावं पुनर्पुनः हर्षामि । मनः चरणशरणे संल्लीनं जातम् ॥ ९ ॥
भूल और भरम निकाल दिये । चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लिये ॥ १० ॥	अज्ञानं भ्रमश्च निष्कासितौ। गुरुचरणौ दार्ढ्येन गृहीतौ ॥ १० ॥
मौज पर दीन्हे कारज छोड़ । शब्द सँग रहूँ सुरत को जोड़ ॥ ११ ॥	कार्याणि गुरो इच्छायां त्यक्तानि। शब्देन सह आत्मानं युनज्मि ॥ ११ ॥
दया राधास्वामी परख रही । शब्द धुन घट में सुनत रही ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयां निरीक्षे । घटे शब्दध्वनिं श्रृणोमि ॥ १२ ॥
दया गुरु चढ़ूँ गगन को धाय । संख धुन घंट मृदंग बजाय ॥ १३ ॥	गुरुदयया धावित्वा गगने आरोहामि । शङ्खध्वनिं घंटां च मृदंगञ्च वादयामि ॥ १३ ॥
सुन्न धुन सुनकर चलूँ आगे ।	सुन्नध्वनिं श्रुत्वा अग्रे चलामि ।

बाँसरी बीन जहाँ बाजे ॥ १४ ॥	वेणुअहितुण्डवाद्यञ्च यत्र नदत: ॥ १४ ॥
चरन फिर सत्तपुर्ष के परस । अलख और अगम का पाऊँ दरस ॥ १५ ॥	अथ सत्तपुरुषस्य चरणौ संस्पृश्य । अलखागमयोः दर्शनं प्राप्नोमि॥ १५ ॥
लिपट रहूँ राधास्वामी चरनन धाय । नाम राधास्वामी छिन छिन गाय ॥ १६ ॥	धावित्वा रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: लिप्लिम्पामि । रा धा/ध: स्व आ मी-नाम प्रतिक्षणं गायामि ॥ १६ ॥

॥ शब्द ९९ ॥ प्रीति गुरु धार रहा मन माहिं	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति गुरु धार रहा मन माहिं । काल बल जार रहा तन माहिं ॥ १ ॥	गुरो: प्रीतिं मनसि दधामि । कालबलं देहे दहामि ॥ १ ॥
पकड़ता गुरु के चरन सम्हार । रगड़ता काम क्रोध मन मार ॥ २ ॥	गुरुचरणौ अवधानेन गृह्णामि। कामक्रोधौ मन: दमित्वा घर्षयामि॥ २ ॥
शब्द धुन सुनता सूरत साथ । गगन पर चढ़ता गह गुरु हाथ ॥ ३ ॥	आत्मना साकं शब्दनादं श्रृणोमि। गगने आरोहामि गुरुहस्तं गृहीत्वा ॥ ३ ॥
संख धुन नभ में बाज रही । गगन में मिरदँग गाज रही ॥ ४ ॥	शङ्खनादम् आकाशे भवति । गगने मृदंगः घोषति ॥ ४ ॥
दरस गुरु पाय मगन होता । काल और करम रहा सोता ॥ ५ ॥	गुरुदर्शनं प्राप्य मग्न: भवामि । कालकर्माणि च सुप्तानि ॥ ५ ॥
सुन्न में कल मल धोये झाड़ । सुनत रहा सारंगी धुन सार ॥ ६ ॥	सुन्नपदे सर्वाः कालुष्यमलिनताश्च प्रक्षालिताः । सारंङ्गध्वनिसारं श्रृणोमि॥ ६ ॥
शिखर चढ़ गया महासुन पार । गुरु बल महाकाल रहा हार ॥ ७ ॥	शिखरमारुह्य महासुन्नपारं अगच्छम् । गुरोः बलेन महाकाल: पराजितः ॥ ७ ॥
भँवर चढ़ निरखा अजब बिलास । सुरत हुई सतगुरु चरनन दास ॥ ८ ॥	भँवरपदे आरुह्य अद्भुतविलासं निरीक्षितम् । आत्मा सद्गुरुचरणयोः दास: अभवत् ॥ ८ ॥
धाय कर गई सतगुरु दरबार । किया धुन बीना संग पियार ॥ ९ ॥	धावित्वा सद्गुरो: सदनम् अगच्छम्। वीणानादेन साकं प्रीतिम् अकरवम् ॥ ९ ॥
हुए परशन सतपुरुष दयाल । भेद दे अधर चढ़ाया हाल ॥ १० ॥	सत्तपुरुषदयालु: प्रसन्न: जात: । भेदं दत्वा शीघ्रं अधरपदे आरोहयितवान् ॥ १० ॥
अलखपुर दरश पुरुष कीन्हा । अधर चढ़ भेद अगम लीन्हा ॥ ११ ॥	अलखपुरे पुरुषस्य दर्शनं कृतवान् । अधरपदे आरुह्य अगमपदस्य भेदं ज्ञातवान् ॥ ११ ॥
अनामी धाम निशाना देख । रही मैं राधास्वामी दरशन पेख ॥ १२ ॥	अनामीधामस्य(धाम्न:) संकेतं पश्य । रा धा/ध: स्व आ मी-दर्शनं प्राप्नोम्यहम् ॥ १२ ॥
कहूँ क्या महिमा हैरत धाम । गाऊँ मैं फिर २ राधास्वामी नाम ॥१३॥	किं कथयामि महिमां अद्भुतधामस्य(धाम्न:) । अहं भूयोभूय: रा धा/ध: स्व आ मी-नाम गायामि॥ १३ ॥
संत गत ऊँचे से ऊँची ।	संतपुरुषाणां गति: उच्चतः उच्चतरा ।

सुरत नहिं कोई वहाँ पहुँची ॥ १४ ॥	कोऽपि आत्मा तत्र न गतवान् ॥ १४ ॥
गही जिन संत चरन की ओट । वही जन डार करम की पोट ॥ १५ ॥	येन संतपुरुषचरणयोः शरणं गृहीतम् । तस्यैव कर्मपोटलिका नष्टा ॥ १५ ॥
मेहर से पहुँचे राधास्वामी धाम । किया जाय चरनन में बिस्राम ॥ १६ ॥	कृपया रा धा/ध: स्व आ मी-धामं(धाम) गतवान्। गत्वा चरणयोः विश्रामं कृतवान् ॥ १६ ॥
लिया मोहि सतगुरु चरन लगाय । भाग भी मेरा दिया जगाय ॥ १७ ॥	सद्गुरु: माम् चरणयोः अयुनक्। मम भाग्यमपि जागरितवान्॥ १७ ॥
कराया सुरत शब्द अभ्यास । दिखाया घट में अजब बिलास ॥ १८ ॥	सुरतशब्दाभ्यासं कारितवान् । घटे अद्भुतविलासं दर्शितवान्॥ १८ ॥
भजूँ नित राधास्वामी नाम अपार । मिला मोहि चरन अमी आधार ॥ १९ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-इति अपारनाम स्मरामि नित्यम् । अहं चरणयो अमृताधारां आप्नवम् ॥१९॥

॥ शब्द १०० ॥ देख गुरु सतसँग अजब बहार	
हिंदी	संस्कृत
देख गुरु सतसँग अजब बहार । खिला मेरे हिये भक्ती गुलज़ार ॥ १ ॥	गुरुसत्सङ्गस्य अद्भुतशोभां वीक्ष्य। मम हृदि भक्ते उद्यानं विकसितम् ॥ १ ॥
दरस रस सींचूँ घट क्यारी । शब्द धुन फूली फुलवारी ॥ २ ॥	दर्शनरसेन घटकेदारिकां सिञ्चामि। शब्दध्वनिना पुष्पवाटिका पुष्पिता ॥ २ ॥
लाग रहा गुरु चरनन में चित्त । प्रेम गुरु पौद बढ़ाऊँ नित्त ॥ ३ ॥	गुरुचरणयो: चित्तं संलग्नम् । गुरुप्रेमवृक्षकं नित्यं वर्धे ॥ ३ ॥
सुरत मन चढ़ते फोड़ अकाश । सहसदलकँवल निरख परकाश ॥ ४ ॥	आत्मामनश्च नभं भित्वा आरोहत: । सहस्त्रदलकमलपदस्य प्रकाशं निरीक्ष्य ॥ ४ ॥
परे तिस फूला सूरजमुख । चरन गुरु परसें जा सन्मुख ॥ ५ ॥	तत: परे सूर्यपुष्पं विकसितम् । सम्मुखमासाद्य गुरुचरणौ स्पृष्टौ ॥ ५ ॥
चाँदनी फूल खिला सुन में । सुरत रही लिपट ररँग धुन में ॥ ६ ॥	सुन्नपदे चन्द्रिकापुष्पं विकसितम् । आत्मा ररँगध्वनौ लिप्लिम्पति ॥ ६ ॥
महासुन सुनी गुप्त धुन चार । भँवर चढ़ मिली सोहँग धुन सार ॥ ७ ॥	महासुन्ने गुप्तचत्वारध्वनीन् श्रृणोमि । भंवरपदे आरुह्य उत्तम सोहंगध्वनिना अमिलत् ॥ ७ ॥
बीन धुन पाई सतपुर जाय । पुरुष का दरशन किया बनाय ॥ ८ ॥	सत्तपुरं गत्वा अहितुण्डध्वनिं प्राप्तम् । सज्जीकृत्य पुरुषस्य दर्शनं कृतम ॥ ८ ॥
अलख लख अगम पुरुष को हेर । पाई राधास्वामी चरनन मेहर ॥ ९ ॥	अलखं वीक्ष्य अगमपुरुषं निरीक्ष्य । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: कृपां प्राप्तवान् ॥ ९ ॥
करी वहाँ आरत बिबिध प्रकार । मिला राधास्वामी चरन अधार ॥ १० ॥	तत्र विविधप्रकारेण आरतिं कृतवान् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयो: आधारं प्राप्तवान् ॥ १० ॥

॥ शब्द १०१ ॥ जगत तज गुरु चरनन में भाज	
हिंदी	संस्कृत
जगत तज गुरु चरनन में भाज । दास अब लाया आरत साज ॥ १ ॥	जगद् त्यक्त्वा गुरुचरणयो: धाव। अधुना दास: आरतिं अलंकृत्य आनीतवान् ॥ १ ॥
प्रीति की थाली साज सजाय । जोत दृढ़ परतीत लीन जगाय ॥ २ ॥	प्रीत्या: स्थाली सुसज्जिता । दृढ़प्रतीत्या: ज्योति: प्रज्वालयत् ॥ २ ॥
शब्द धुन घंटा संख बजाय । हंस सब जुड़ मिल आरत गाय ॥ ३ ॥	घंटाशंखयो: शब्दध्वनिं नादयित्वा । सर्वे हंसा: संयुज्य आरतिं गायन्ति ॥ ३ ॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयाल । मेहर कर लीना मोहि सम्हाल ॥ ४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-परमगुरु: दयालु: अभवत्। कृपां कृत्वा मां संरक्षितवान् ॥ ४ ॥
सरन दे लीना मोहि अपनाय । भेद निज घर का दीन बताय ॥ ५ ॥	शरणं दत्वा माम् स्वीकृतवान्। निजगृहस्य भेदं ज्ञापितवान् ॥ ५ ॥
धार रहूँ नित मन में निज नाम । करें मेरा एक दिन पूरा काम ॥ ६ ॥	मनसि नित्यं निजनाम धरामि। एकस्मिन् दिने मम कार्यं पूर्णं करिष्यति ॥ ६ ॥
होयँ जो राधास्वामी गुरू दयाल | देयँ मोहि भोग जोग रस सार ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-गुरु: यदा दयालु: भवेत्। मह्यं भोगयोगरसयो: सारं दास्यति॥ ७ ॥
सुरत रहे निरमल चरन सम्हार । शब्द धुन सुनत रहे धर प्यार ॥ ८ ॥	आत्मा चरणावधानेन निर्मल: भवति। शब्दनादं श्रृणोति प्रीतिं कृत्वा ॥ ८ ॥
मोह जग नहिं ब्यापे मोहि आय । रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय ॥ ९ ॥	जगतः मोह: न व्याप्नोति मामागत्य। रा धा/ध: स्व आ मी-गुणान् गायामि नित्यम् ॥ ९ ॥
दीन होय गुरु दर झाँक रहा। मेहर की बख़्शिश माँग रहा ॥१०॥	दीनं भूत्वा गुरुद्वारम् ईक्षे । कृपाया: दानं याचामि ॥ १० ॥
बाल सम सरना लीनी आय । देव राधास्वामी काज बनाय ॥११॥	बालसमं शरणं प्राप्तमागत्य । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: कार्यं पूर्णं कुर्यात् ॥११॥

॥ शब्द १०२ ॥ चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय	
हिंदी	संस्कृत
चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय । शब्द गुरु सन्मुख आई धाय ॥ १ ॥	हृदये गुरुचरणयोः भक्तिं जागरित्वा । धावित्वा शब्दगुरुं सम्मुखं आगता ॥ १ ॥
उठी धुन घट में घोरमघोर । घटा अब काल करम का ज़ोर ॥ २ ॥	घटे अतिघोरध्वनि: उत्थित: । कालकर्मणो: वेग: न्यूनः जातः अधुना॥ २ ॥
काम और लोभ रहे मुरझाय । अहँग और क्रोध रहे शरमाय ॥ ३ ॥	काम: लोभश्च म्लानमभूताम् । अहं क्रोधश्च लज्जितौ भवतः ॥ ३ ॥
दया गुरु हुआ काल बल छीन । थाक रहे माया और गुन तीन ॥ ४ ॥	गुरुदयया कालबलं क्षीणमभूत् । माया त्रिगुणाश्च श्रान्ता: जाता: ॥ ४ ॥
दीनता अब नित बढ़ती जाय । मान और मोह नहीं ठहराय ॥ ५ ॥	अधुना दीनता नित्यं वर्धते । मान: मोहश्च स्थिर: न भवत: ॥ ५ ॥
ईरखा चित से डार दई । ममत और माया बिसर गई ॥ ६ ॥	ईर्ष्या चित्तात् निष्कासिता । ममतामाया च विस्मृतौ ॥ ६ ॥
प्रेम गुरु हिरदे बढ़ता सार । सरन दृढ़ करता तन मन वार ॥ ७ ॥	हृदये गुरुप्रेमसारं वर्धते । तनुमनसी समर्प्य शरणं दृढं करोमि ॥ ७ ॥
सुरत धुन संग अमी रस लेत । मेहर गुरु दाता छिन छिन देत ॥ ८ ॥	आत्मा ध्वनिना साकम् अमृतरसं गृह्णाति । दातागुरु: प्रतिक्षणं कृपां करोति ॥ ८ ॥
सुनत रही घंटा संख पुकार । गगन में होती गरज अपार ॥ ९ ॥	घंटाशंखयो आह्वानं श्रृणोमि । गगने अपार गर्जनं भवति ॥ ९ ॥
सुन्न में डारी सारँग धूम । भंवर धुन मुरली सुन सुन झूम ॥ १० ॥	सुन्नपदे सारङ्गधूमः विद्यते । भंवरपदे मुरलीध्वनिं श्रुत्वा उन्मत्तोऽभूत् ॥ १० ॥
अमरपुर सूरत हो गई सार । किया फिर अलख अगम से प्यार ॥११॥	अमरपुरे आत्मा सारयुक्त अभवत् । ततः अलखागमाभ्यां सह प्रीतिं कृतवान् ॥११॥
परे चढ़ दरशन राधास्वामी पाय । भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥१२॥	तदग्रे आरुह्य रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: दर्शनं कृतम् । युगानुयुगस्य भाग्यं जागरितम् ॥१२॥
आरती अद्भुत लीनी साज । किया राधास्वामी पूरन काज ॥१३॥	अद्भुतारति: सज्जीकृता । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः कार्यं पूर्णं कृतवान् ॥१३॥

रहा मैं जग में नीच नकार । मेहर से राधास्वामी कीन उधार ॥१४॥	जगति अहं निकृष्टप्रतिकूलबुद्धेश्च आसम् । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः कृपया उद्धारं कृतवान् ॥१४॥
प्रेम अँग सेव करूँ दिन रात । दई राधास्वामी अचरज दात ॥१५॥	अहर्निशं प्रेमाङ्गेन सेवां करोमि । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः अद्भुतं उपहारं दत्तवान् ॥१५॥
नित्त गुरु महिमा गाय रहूँ । चरन राधास्वामी ध्याय रहूँ ॥१६॥	गुरुमहिमां नित्यं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ ध्यायामि ॥१६॥

॥ शब्द १०३ ॥ सुरत प्यारी गुरु गुन गाय रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरत प्यारी गुरु गुन गाय रही । चरन में प्रीति बढ़ाय रही ॥ १ ॥	प्रियात्मा गुरुगुणान् गायति । चरणयो: प्रीतिंं वर्धयति ॥ १ ॥
उमँग कर गुरु सेवा करती । भाव सतसँग हिये में धरती ॥ २ ॥	उल्लासेन गुरुसेवां करोति । सत्संगभावं हृदये धरति ॥ २ ॥
बचन गुरु सुनती चित्त सम्हार । दरश गुरु करती नैन निहार ॥ ३ ॥	चित्तं संरक्ष्य गुरुवचनानि श्रृणोति । नेत्रे अवलोक्य गुरुदर्शनं करोति ॥ ३ ॥
चरन गुरु देखत नित्त बिलास । हिये में नित प्रति बढ़त हुलास ॥ ४ ॥	नित्यं विलासेन षष्ठचक्रं पश्यति । हृदि प्रतिक्षणं उल्लासं वर्धते ॥ ४ ॥
उठावत मन में नित्त उचंग । करूँ गुरु आरत उमँग उमंग ॥ ५ ॥	मनसि नित्यं तीव्रेच्छां जागरयति । गुरोः आरतिं उल्लासेन करोमि॥ ५ ॥
भाव से साज आरती कीन । हुई गुरु चरनन दीन अधीन ॥ ६ ॥	भावेन सज्जिता आरति: कृता। गुरुचरणयोः दीनाधीनश्च अभवम् ॥ ६ ॥
गावत आरत सन्मुख आय । हुए राधास्वामी दयाल सहाय ॥ ७ ॥	समक्षमागत्य आरतिं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: सहायकः अभूत् ॥ ७ ॥

॥ शब्द १०४ ॥ गुरू के सन्मुख आन खड़ा	
हिंदी	संस्कृत
गुरू के सन्मुख आन खड़ा । पिरेमी प्यारा उमँग भरा ॥ १ ॥	गुरुसम्मुखं मर्यादया स्थितम् । प्रियप्रेमी उल्लासेन पूरितम् ॥ १ ॥
खेलता गुरु आगे कर प्यार । रूप गुरु धरता हिये मँझार ॥ २ ॥	प्रीतिं कृत्वा गुरुसमक्षं खेलति । गुरुरूपं हृदन्तसि धरति ॥ २ ॥
गावता राधास्वामी नाम सम्हार । धावता सेवा को हर बार ॥ ३ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम अवधानेन गायति । प्रतिवारं सेवायै धावति ॥ ३ ॥
सरन गुरु हित कर धार लई । चरन राधास्वामी जकड़ गही ॥ ४ ॥	गुरुशरणं हितेच्छया धृतम् । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ दार्ढ्येन गृहीतौ ॥ ४ ॥
संग गुरु चाहत चित से नित्त । भक्ति गुरु धारत हिये कर हित्त ॥ ५ ॥	नित्यं चित्तेन गुरुसङ्गं वाञ्छति । हृदये गुरुभक्तिं हितार्थं दधाति ॥ ५ ॥
दरश गुरु करता दृष्टी जोड़ । शब्द धुन सुनता घट में घोर ॥ ६ ॥	गुरुदर्शनं दृष्टिं संयोज्य करोति । घटे घोरशब्दध्वनिं श्रृणोति ॥ ६ ॥
प्रेम अँग आरत गुरु गाता । चरन राधास्वामी हिये ध्याता ॥ ७ ॥	प्रेमाङ्गेन गुरो: आरतिं गायाति । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदये ध्यायति ॥ ७ ॥

॥ शब्द १०५ ॥ धरी हिये राधास्वामी मत परतीत	
हिंदी	संस्कृत
धरी हिये राधास्वामी मत परतीत । पालती छिन छिन गुरु की प्रीति ॥ १ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-मतप्रतीतिं हृदये अधरम् । गुरुप्रीतिं प्रतिक्षणं पालयामि ॥ १ ॥
बचन गुरु हिरदे में धारे । करम और धरम तजे सारे ॥ २ ॥	गुरुप्रवचनानि हृदये अदधु: । कर्मधर्मा: सर्वे त्यक्ताः ॥ २ ॥
इष्ट राधास्वामी दृढ़ कीना । देव और देवी तज दीना ॥ ३ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-इष्टं दृढं कृतम् । देवदेवताश्च त्यक्ता: ॥ ३ ॥
भाव सतसँग का बढ़ता नित्त । चरन में गुरु के रहता चित्त ॥ ४ ॥	सत्संगस्य भावः नित्यं वर्धते । गुरुचरणयो: चित्तं वसति ॥ ४ ॥
सेव गुरु करती तन मन से । प्रीति नित बढ़ती सत जन से ॥ ५ ॥	तनुमनोभ्यां गुरुसेवां करोमि। सज्जनै: सह प्रीतिः नित्यं वर्धते ॥ ५ ॥
लिया मैं गुरु उपदेश सम्हार । नेम से करती भजन सुधार ॥ ६ ॥	मया गुरो उपदेशं संरक्षितम् । नियमेन भजनं करोमि संशोध्य॥ ६ ॥
शब्द सँग जोड़ूँ मन सूरत । निरखती नभ चढ़ गुरु मूरत ॥ ७ ॥	शब्देन साकं आत्मामनश्च युनज्मि । गगने आरुह्य गुरुस्वरूपं निरीक्षे ॥ ७ ॥
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाती । रागनी हंसन सँग गाती ॥ ८ ॥	सुन्नपदे आरुह्य त्रिवेण्यां स्नामि । हंसै: सह रागिनीं गायामि ॥ ८ ॥
गुरू सँग धरा सोहंगम ध्यान । महासुन पार किया मैदान ॥ ९ ॥	गुरुणा साकं सोहंशब्दस्य ध्यानं धृतम् । महासुन्नक्षेत्रं पारं कृतम् ॥ ९ ॥
गुफा में सूरत लाग रही । सरस धुन मुरली बाज रही ॥ १० ॥	गुहायामात्मा संलग्न: । सरसवेणुनादः वाद्यते ॥ १० ॥
अधर चढ़ दरशन सतपुर्ष लीन । बाज रही जहाँ मधुर धुन बीन ॥ ११ ॥	अधरपदे आरुह्य सत्तपुरुषस्य दर्शनं कृतम् । यत्र अहितुण्डवाद्यस्य मधुरध्वनि: नदति ॥ ११ ॥
अलख लख अगम को निरखा जाय । रही मैं राधास्वामी चरन समाय ॥ १२ ॥	अलखपदं दृष्ट्वा अगमपदमपश्यम् । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: चरणयो: संविशामि अहम्॥ १२ ॥

॥ शब्द १०६ ॥ जगत में खोज किया बहु भांति	
हिंदी	संस्कृत
जगत में खोज किया बहु भाँति । न पाई मैंने घट में शांति ॥ १ ॥	जगति बहुविधिना अन्वेषणं कृतम् । घटेऽहं शान्तिं न आप्नवम् ॥ १ ॥
ग़ौर कर देखा जग का हाल । फँसे सब करम भरम के जाल ॥ २ ॥	अवधानेन जगतः स्थितिं अपश्यम् । सर्वे कर्मभ्रमयो: पाशे आबद्धाः ॥ २ ॥
फैल रहे जग में मते अनेक । धार रहे थोथे इष्ट की टेक॥ ३ ॥	जगति विविधमतानि प्रसृतानि । निस्सार इष्टेषु विश्वासं धरन्ति ॥ ३ ॥
भेद कोइ घर का नहिं जाने। भरम बस सीख नहीं माने ॥ ४ ॥	कोऽपि गृहस्य भेदं न जानाति । भ्रमवशात् प्रबोधनं न स्वीकरोति ॥ ४ ॥
मान में खप रहे पंडित भेष । करम में बँध रहे मुल्ला शेख़ ॥ ५ ॥	पण्डिता: पाषण्डिनः च सम्मानाय व्यग्राः सन्ति । यवनधर्मगुरुशेखाश्च कर्मसु बद्धाः सन्ति ॥ ५ ॥
भाग मेरा जागा अजब निदान मिला मैं राधास्वामी संगत आन ॥ ६ ॥	अद्भुतनिदानं मम सौभाग्यं जागरितम् । अहं रा धा/ध: स्व आ मी-सङ्गतौ मिलितवान् ॥ ६ ॥
सुनी मैं महिमा अचरज बोल । करी मैं राधास्वामी मत की तोल ॥ ७ ॥	अद्भुतवचनानां महिमा मया श्रुता । रा धा/ध: स्व आ मी-मतस्य परीक्षणं मया कृतम् ॥ ७ ॥
भरम और संशय उठ भागे । बिरह अनुराग हिये जागे ॥ ८ ॥	भ्रमसंशयौ उत्थाय धावितौ । विरहानुरागश्च हृदि जागरितौ ॥ ८ ॥
पता निज मालिक का पाया । भेद निज घर का दरसाया ॥ ९ ॥	निजस्वामिनः सङ्केतं प्राप्तवान् । निजगृहस्य भेदं दर्शितवान् ॥ ९ ॥
समझ में आई भक्ती रीति । शब्द की धारी मन परतीत ॥ १० ॥	ज्ञाता भक्तिरीतिः । मनसि शब्दप्रतीतिः धृता ॥ १० ॥
सुरत का पाया अजब लखाव । सिफ़त सुन गुरु की बाढ़ा भाव ॥ ११ ॥	आत्मनः अद्भुतभेदं प्राप्तवान् । गुरुमहिमां श्रुत्वा भाव: वर्धितः ॥ ११ ॥
कहूँ क्या महिमा सतसँग सार । भरम और संशय दीने टार॥ १२ ॥	किं कथयेयं सत्संगसारस्य महिमाम् । भ्रमसंशयौ निष्कासितवन्तौ ॥ १२ ॥
प्रीति नित बढ़ती गुरु चरना । धार लई मन में गुरु सरना ॥ १३ ॥	गुरुचरणयो: प्रीतिः नित्यं वर्धते । मनसि गुरुशरणं दधे ॥ १३ ॥

समझ मैं मन में अस धारी। संत बिन जाय न कोइ पारी ॥ १४ ॥	एतद् बोधनमहं मनसि दधामि । संतं विना कोऽपि पारं गन्तुं न शक्नोति ॥ १४ ॥
बिना उन सरन न उतरे पार । शब्द बिन होय न कभी उधार॥ १५ ॥	तेषां शरणं विना न तरति । शब्दं विना कदापि उद्धारं न भवति ॥ १५ ॥
सराहूँ छिन छिन भाग अपना । मिला मोहि सुरत शब्द गहना ॥ १६ ॥	प्रशंसामि प्रतिक्षणं स्वभाग्यम् । प्राप्तं मया सुरतशब्दाभूषणम् ॥ १६ ॥
हुआ मेरे हिरदे में उजियार । दया राधास्वामी कीन्ह अपार ॥ १७ ॥	मम हृदये प्रकाशः जातः । रा धा/धः स्व आ मी-अपारदयां कृतवान् ॥ १७ ॥
पकड़ धुन चढ़ता नभ की ओर। जोति लख सुनता अनहद घोर ॥ १८ ॥	ध्वनिं गृहीत्वा नभं प्रति अरोहम् । प्रकाशं वीक्ष्य अनहदध्वनिं श्रृणोमि॥ १८ ॥
सुन्न धुन सुन कर चढ़ी आगे। गुफा में जहाँ सोहँग जागे ॥ १९ ॥	सुन्नध्वनिं श्रुत्वा अग्रे आरोहामि । गुहायां यत्र सोहंगध्वनिर्जागर्ति॥ १९ ॥
सत्तपुर दरश पुरुष कीन्हा । परे तिस अलख अगम चीन्हा ॥ २० ॥	सत्तपुरे पुरुषस्य दर्शनं कृतवान् । ततः परे अलखागमयोः अभिज्ञानं जातम् ॥ २० ॥
वहाँ से लखिया राधास्वामी धाम | मिला अब निज घर किया बिस्राम ॥ २१ ॥	तत्रतः रा धा/धः स्व आ मी-धामं(धाम) अवलोकितम् । प्राप्तं अधुना निजगृहं करोमि विश्राममम् ॥ २१ ॥

॥ शब्द १०७ ॥ बाँध राधास्वामी नाम हथियार	
हिंदी	संस्कृत
बाँध राधास्वामी नाम हथियार | जूझता मन से बारम्बार ॥१॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम्नः शस्त्रं बद्ध्वा । मनसा युद्धं करोमि भूयोभूयः ॥१॥
सरन गुरु लीनी ढाल सम्हाल । काल के दीने बिघन निकार ॥ २ ॥	गुरुशरणं गृहीतं फलकं संरक्ष्य । कालस्य विघ्ना: अपसारिता: ॥२॥
प्रीति चरनन में बढ़ती नित्त । लगा गुरु सेवा में अब चित्त ॥ ३ ॥	चरणयो: प्रीतिः वर्धते नित्यम् । गुरुसेवायामधुना चित्तम् अयुनक्॥३॥
बचन गुरु उमँग सहित सुनता। मनन कर हिरदे में गुनता ॥ ४ ॥	गुरुप्रवचनानि उल्लासेन श्रृणोमि । मननं कृत्वा हृदये चिन्तयामि ॥ ४॥
छाँट कर लिया निज नाम सम्हार । हिये में हुआ गुरु शब्द अधार ॥ ५ ॥	शोधनं कृत्वा अवधानेन निजनाम अधरम्। हृदये गुरुशब्द: आधारमभवत् ॥५॥
दया कर दीना गुरु उपदेश । दूर हुए घट से काल कलेश ॥ ६ ॥	दयां कृत्वा गुरु उपदेशं दत्तवान् । घटात् कालक्लेशा: अपसरिताः ॥ ६॥
सुरत मन धुन सँग प्रीति लगाय । रहे निज घट में नभ पर छाय ॥ ७ ॥	आत्मामनश्च नादेन साकं प्रीतिं युक्त्वा । अरमेतां निजघटे नभसि व्याप्य॥ ७॥
पकड़ धुन चढ़ते गगन मँझार गुरू सँग कीना बहुत पियार ॥ ८ ॥	नादं प्रगृह्य गगनमारोहतः । गुरुणा साकं अति प्रेम अकरुताम् ॥८॥
सुन्न में अक्षर पुरुष मिलाप। किया और पाया अपना आप॥ ९ ॥	सुन्नपदे अक्षरपुरुषेण साकं मिलापं कृतम्। स्वात्मन: उत्तमा गतिः प्राप्ता च॥ ९ ॥
लगी फिर निहअक्षर से डोर भँवर चढ़ सुना सोहंगम शोर । १०	तत: निहअक्षरेण सह सूत्रं अयुनक् । भँवरपदे आरुह्य सोहंशब्दघोषं श्रुतम् ॥१०॥
अमरपुर बाज रही धुन बीन। पुरुष का दरशन अद्भुत कीन ॥११॥	अमरपुरे अहितुण्डवाद्यनादं वाद्यते । पुरुषस्य अद्भुतदर्शनं कृतम् ॥ ११॥
गई फिर अलख अगम के पार। चरन राधास्वामी परसें सार ॥ १२ ॥	ततः अलखागमाभ्यां पारम् अगच्छत् । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: चरणौ स्पृष्टौ ॥१२॥
आरती अद्भुत साज लई । चरन राधास्वामी पकड़ रही ॥१३॥	अद्भुतआरति: सज्जिता । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: चरणौ गृह्णामि॥१३॥

॥ शब्द १०८ ॥ जीव सब मोहे माया रंग	
हिंदी	संस्कृत
जीव सब मोहे माया रंग । नहीं कोई जाने सतसँग ढंग ॥ १ ॥	सर्वे जीवा: मायारङ्गे रंजिता: । सत्संगरीतिं कोऽपि न जानाति ॥ १ ॥
करम और धरम रहे लिपटाय । बुद्धि और विद्या संग खपाय ॥ २ ॥	कर्मधर्मेषु संलग्नाः सन्ति । मत्याविद्यया च साकं संत्रस्ताः सन्ति ॥ २ ॥
ख़बर सत परमारथ नहिं पाय । भरम कर तीरथ बरत पचाय ॥ ३ ॥	सत्यपरमार्थस्य ज्ञानं न आप्नुवन्ति । भ्रमवशात् तीर्थव्रतेषु पचन्ति ॥ ३ ॥
मेरे मन बिरह उठी भारी । भोग जग लागे सब खारी ॥ ४ ॥	मम मनसि तीव्रविरह: उत्थितः । सर्वे जगत् भोगाः कषाया: प्रतीयन्ते ॥ ४ ॥
बिकल मन खोज रहा बन माहि । पाऊँ कस दरशन सतपुर्ष पायँ ॥ ५ ॥	व्याकुल मन: संसारवने अन्वेषयति । सत्तपुरुषस्य दर्शनं कथमाप्नुयाम् ॥ ५ ॥
परम गुरु राधास्वामी दीनदयाल । दया कर लीना मोहि सम्हाल ॥ ६ ॥	परमगुरुः रा धा/ध: स्व आ मी-दीनदयालुः । दयां कृत्वा मां संरक्षितम् ॥ ६ ॥
मेहर कर लिया सतसंग मिलाय । भाग मेरा सोता दीन जगाय ॥ ७ ॥	कृपया सत्संगे मेलं कृतवान् । मम सुप्तं भाग्यं जागरितवान् ॥ ७ ॥
भेद निज मारग का मोहि दीन । सुरत मन हुए चरन लौलीन ॥ ८ ॥	निजमार्गस्य भेदं मां निर्दिष्टम् । आत्मामनसी चरणयोः संलीनौ अभूताम् ॥ ८ ॥
सहज मोहि जग से न्यारा कीन । प्रीति मेरे हिरदे में धर दीन॥ ९ ॥	मां जगतः सहजे दूरीकृतवान् । मम हृदि प्रीतिः स्थापितवान् ॥ ९ ॥
सिखाई मुझको भक्ती रीत । शब्द की धारी घट परतीत ॥ १० ॥	मां भक्तिरीतिं अशिक्षयत् । घटे शब्दप्रतीतिं अदधाम् ॥ १० ॥
सुनूँ मैं घट में अनहद घोर । करम के डाले बंधन तोड़ ॥ ११ ॥	अहं घटे अनहदशब्दं श्रृणोमि । कर्मबन्धनानि अत्रोटयन् ॥ ११ ॥
सहसदल लखता जोति उजार । गगन धुन ओअँग सँग पियार ॥ १२ ॥	सहस्त्रदलपदे ज्योतिप्रकाशं पश्यामि । ओऽम् इति गगनध्वनिना साकं प्रेम जातम् ॥ १२ ॥
सुन्न धुन सारँग सार लई । गुफा में मुरली सुनत रही ॥ १३ ॥	सुन्नपदे सारङ्गध्वनिसारं गृह्णामि । गुहायां मुरलीस्वरं श्रृणोमि ॥ १३ ॥
अमरपुर दरश पुरुष पाया । बीन धुन सुन अति हरषाया ॥ १४ ॥	अमरपुरे पुरुषस्य दर्शनं प्राप्तम्। अहितुंडवाद्यध्वनिं श्रुत्वा अति प्रसन्नं भवामि ॥ १४ ॥

अलखपुर वहाँ से पहुँचा धाय । अगमपुर लीना पुरुष रिझाय ॥ १५ ॥	तत्रतः धावन् अलखपुरं गतवान् । अगमपुरे पुरुषं प्रसन्नं कृतवान् ॥ १५ ॥
आरती अद्भुत अब साजी । सुरत राधास्वामी चरनन राची ॥ १६ ॥	अधुना अद्भुतारतिः सज्जिता । आत्मा रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः प्रेम रञ्जितः अभूत् ॥ १६ ॥
लिया मोहि राधास्वामी चरन लगाय । कहा कहूँ महिमा बरनी न जाय ॥ १७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः मां चरणयोः अयुनक् । किं कथयामि महिमां वर्णितुं न शक्नोमि ॥ १७ ॥

॥ शब्द १०९ ॥ प्रीति गुरु चरन लगी भारी	
हिंदी	संस्कृत
प्रीति गुरु चरन लगी भारी । आस जग त्याग दई सारी ॥ १ ॥	गुरुचरणयोः गहनप्रीतिः संलग्नाः । जगतः सर्वा आशाः त्यक्ताः ॥ १ ॥
बहुत दिन जग में भटका खाय । रहा भरमन सँग अधिक भुलाय ॥ २ ॥	बहुदिनानि यावद् जगति भ्रमितवान् । भ्रमैः सह अति विस्मृतवान् ॥ २ ॥
मिला जब सतसँग पाया भेद । मिटे तब काल करम के खेद ॥ ३ ॥	यदा सत्संगः प्राप्तः भेदं प्राप्तवान् । तदा कालकर्मणः कष्टानि अपसरितानि ॥ ३ ॥
सुरत मन पकड़ शब्द की धार । देखते घट में नित्त बहार ॥ ४ ॥	आत्मामनश्च शब्दधारां गृहीत्वा । घटे नित्यं प्रफुल्लतां पश्यतः ॥ ४ ॥
मेहर राधास्वामी क्या बरनूँ । दई मोहि चरनन में ठाऊँ ॥ ५ ॥	राधास्वामीकृपां किं वर्णयामि । मह्यं चरणयोः स्थानं दत्तवान् ॥ ५ ॥
प्रीति नित बढ़ती गुरु के संग । सरन दृढ़ करती उमँग उमँग ॥ ६ ॥	गुरुणा साकं नित्यं प्रीतिः वर्धते । उल्लासेन शरणं दृढं करोमि ॥ ६ ॥
शब्द की नित नई महिमा गाय । सुरत मन चढ़ते नभ पर धाय ॥ ७ ॥	नित्यं शब्दस्य नवामहिमां गीत्वा । आत्मामनश्च धावित्वा नभमारोहतः ॥ ७ ॥
जोति लख सुनता घंटा सार । अधर चढ़ निरखा सूर उजार ॥ ८ ॥	ज्योतिं दृष्ट्वा घंटासारं श्रृणोमि । अधरपदे आरुह्य सूर्यप्रकाशं ऐक्षे ॥ ८ ॥
दसम दर खोला बजर कपाट । चन्द्र लख निरखा चौक सपाट ॥ ९ ॥	दशमद्वारे वज्रकपाटं उद्घाटितम् । चन्द्रं वीक्ष्य विस्तृतक्षेत्रं निरीक्षितम् ॥ ९ ॥
मानसर किये जाय अश्नान । छुटे सब कलमल पाया ज्ञान ॥ १० ॥	मानसरोवरं गत्वा स्नानं कृतम् । कालुष्यमलिनताः च सर्वाः अपसरिताः ज्ञानं प्राप्तम् ॥१०॥
शिखर चढ़ गई महासुन पार । भँवर में सुनी बाँसुरी सार ॥ ११ ॥	महासुन्नात् पारं शिखरं अरोहम् । भँवरपदे उत्तम वेणुनादं अश्रृण्वम् ॥ ११ ॥
परे तिस देखा सत्त पसार । पुरुष सँग कीना अधिक पियार ॥ १२ ॥	तदतिक्रम्य सत्तलोकस्य विस्तारं दृष्टम् । पुरुषेण साकं गहनं प्रेम कृतम् ॥ १२ ॥
अलख और अगम का दरशन पाय । अधर चढ़ राधास्वामी धाम दिखाय ॥ १३ ॥	अलखागमयोः दर्शनं प्राप्य । अधरपदे आरुह्य रा धा/धः स्व आ मी-धामं(धाम) अपश्यम्॥१३॥

प्रेम अँग आरत लई सम्हार । सरन मोहि राधास्वामी दई कर प्यार ॥ १४ ॥	प्रेमाङ्गेन आरतिः संरक्षिता । प्रेम्णा रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः मह्यं शरणं दत्तवान् ॥ १४ ॥

॥ शब्द ११० ॥ प्रेम गुरु महिमा सुनत रही	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम गुरु महिमा सुनत रही । नाम गुरु हिये में गुनत रही ॥ १ ॥	गुरुप्रेम्ण: महिमाम् अश्रृण्वम् । हृदये गुरो: नाम अजपम् ॥ १ ॥
संग गुरु पाया जागा भाग । बढ़त अब दिन २ हिये अनुराग ॥ २ ॥	गुरुसङ्गं प्राप्य भाग्यं जागरितम् । अधुना प्रतिदिनम् अनुरागं वर्धते॥ २ ॥
मेहर हुई आई मन परतीत । गाऊँ अब निस दिन सतगुरु गीत ॥ ३ ॥	कृपां प्राप्य मनसि प्रतीति: जाता। अधुना प्रतिदिनं सद्गुरो: गीतं गायामि॥ ३ ॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार । बोझ मैं डाला सबही उतार ॥ ४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-शरणं हृदये धार्य । सर्वं भारं मया अध:कृतम् ॥ ४ ॥
रीति जग अब मोहि नहिं भावे । नहीं मन भोगन सँग धावे ॥ ५ ॥	जगतः रीति अधुना मह्यं न रोचते । मन: भोगै: सह न धावति ॥ ५ ॥
करम और भरम उड़ाय दिये। बरत और तीरथ बहाय दिये ॥ ६ ॥	कर्मभ्रमा: उड्डायिता: । व्रततीर्थानि च प्रवाहितानि ॥ ६ ॥
भेख और पंडित मान भरे । जगत गुरु चित से दूर करे ॥ ७ ॥	पाषण्डिपण्डिताश्च मानपूरिताः सन्ति। गुरु: जगत् चित्तात् दूरं करोति॥ ७ ॥
कथा पंडों की क़िस्सा जान । सुनूँ नहिं कबहीं देकर कान ॥ ८ ॥	पण्डितानां कथां वृतान्तं ज्ञात्वा। कदापि कर्णं दत्वा न श्रृणोमि॥ ८ ॥
देव और देवी नहिं मानूँ । राम और कृष्ण तुच्छ जानूँ ॥ ९ ॥	देवं देवतां च न स्वीकरोमि । रामकृष्णौ तुच्छं जानामि ॥ ९ ॥
मेरे घर लागा गुरु का रंग । तजूँ नहिं कबहीं उनका संग ॥ १० ॥	मम गृहे गुरो: रङ्ग: व्याप्त: । तेषां सङ्गं कदापि न त्यजेयम् ॥ १० ॥
सुनूँ मैं चित से गुरु उपदेश । गाऊँ नित महिमा राधास्वामी देश ॥ ११ ॥	अहं चेतसा गुरो उपदेशं श्रृणोमि। रा धा/ध: स्व आ मी-देशस्य महिमां नित्यं गायामि ॥ ११ ॥
नाम राधास्वामी नित गाऊँ । चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १२ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम नित्यं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ नित्यं ध्यायामि ॥ १२ ॥
सुरत और शब्द जुगत निज सार ।	सुरतशब्दयोः निजयुक्तिसारम् ।

कमाऊँ निस दिन हिये धर प्यार ॥ १३ ॥	हृदये प्रीतिं धार्य प्रतिदिनम् अर्जयामि ॥ १३ ॥
मेहर गुरु सुनती धुन घनकार । निरखती नभ चढ़ जोति उजार ॥ १४ ॥	गुरो: कृपात: ध्वनिगुञ्जनं श्रृणोमि । नभे आरुहय ज्योते: प्रकाशं निरीक्षे ॥ १४ ॥
अधर चढ़ परसे गुरु चरना सुन्न में जाय सुरत भरना ॥ १५ ॥	अधरे आरुहय गुरुचरणौ अस्पृशम् । सुन्नपदं गत्वा आत्मानं भरेत् ॥ १५ ॥
महासुन पार गई गुरु संग । भँवर चढ़ सुनती धुन सोहंग ॥ १६ ॥	गुरुणा सह महासुन्नात् पारं आगच्छम् । भँवरपदे आरुहय सोहंगध्वनिं श्रृणोमि ॥ १६ ॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष कीन । बाज रही मधुर जहाँ धुन बीन ॥ १७ ॥	अमरपुरे सत्तपुरुषस्य दर्शनं कृतम् । यत्र अहितुण्डवाद्यस्य मधुरध्वनिः वाद्यते ॥ १७ ॥
अलखपुर जाकर खोला द्वार । अधर चढ़ देखा अगम पसार ॥ १८ ॥	अलखपुरं गत्वा द्वारमुद्घाटितम् । अधरे आरुहय अगमप्रसारं दृष्टम् ॥ १८ ॥
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय । नहीं कुछ अचरज कहा न जाय ॥ १९ ॥	ततः परे रा धा/ध: स्व आ मी-धामं(धाम) दृष्टम्। किञ्चिद् आश्चर्यं वर्णितुं न शक्नोमि ॥ १९ ॥
प्रेम अँग आरत यहाँ कीनी । सुरत हुई चरनन में लीनी ॥ २० ॥	प्रेमाङ्गेन आरति अत्र कृता । आत्माचरणयो: लीन: जातः ॥ २० ॥
मेहर राधास्वामी पाई आज । किया मेरा सब बिधि पूरन काज ॥२१॥	अद्य रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां प्राप्तम् । सर्वविधिना मम कार्यं पूर्णं कृतवान् ॥ २१ ॥

॥ शब्द १११ ॥ रहा मैं बहुदिन निपट अजान	
हिंदी	संस्कृत
रहा मैं बहु दिन निपट अजान । करी नहिं सतगुरु की पहिचान॥ १ ॥	बहुदिनानि यावत् अहमति अज्ञानी आसम् । सद्गुरोः अभिज्ञानं न कृतम् ॥ १ ॥
लिया मोहि आपहि खैंच बुलाय । दया कर लीना चरन लगाय ॥ २ ॥	स्वयमेव माम् आकृष्ट्य आहूतः । दयां कृत्वा चरणयोः अयुनक् ॥ २ ॥
करी मोपै राधास्वामी दया अपार । सिखाया सुरत शब्द मत सार॥ ३ ॥	रा धा/धः स्व आ मी-दयालुः मयि अपारदयां कृतवान्। सुरतशब्दमतस्य सारम् अशिक्षयत् ॥ ३ ॥
बुलाया चरनन में हर बार । टिकाया सतसँग में कर प्यार ॥ ४ ॥	प्रत्येकवारं चरणयोः आहूतः। प्रेम कृत्वा सत्संगे स्थिरं कृतवान् ॥ ४ ॥
करम और भरम किये सब दूर । प्रीति दई चरनन में भरपूर ॥ ५ ॥	कर्मभ्रमाः सर्वे अपसृताः । चरणयोः प्रचुरप्रीतिं दत्तवान् ॥ ५ ॥
मेहर मोपै अन्तर में कीनी । सुरत हुई शब्दारस भीनी ॥ ६ ॥	मयि अन्तसि कृपां कृतवान् । आत्मा शब्दरसे संलग्नः अभूत् ॥ ६ ॥
बढ़त मेरी चरनन में परतीत । जागती दिन दिन नई नई प्रीति ॥ ७ ॥	मम प्रतीतिः चरणयोः वर्धते । प्रतिदिनं नवा प्रीतिः जागर्ति ॥ ७ ॥
करत रहूँ बिनती राधास्वामी पास । दिखाओ घट में परम बिलास ॥ ८ ॥	रा धा/धः स्व आ मी-समक्षं विनतिं करोमि । दर्शयेत् घटे परमविलासम् ॥ ८ ॥
सुरत मन पकड़ शब्द की डोर | चढ़े अब घट में परदा फोड़ ॥ ९ ॥	आत्मामनश्च शब्दसूत्रं गृहीत्वा । पटमुद्घाट्य घटे आरोहतः ॥ ९ ॥
सहसदल लखें जोति उजियार । सुनें जहाँ घंटा संख पुकार ॥ १० ॥	सहस्रदलपदे ज्योतिप्रकाशं पश्येताम् । यत्र घण्टाशङ्खयोः ध्वनिं श्रूयास्ताम्॥ १० ॥
निरख त्रिकुटी में गुरु मूरत । चढ़ाऊँ सुन में फिर सूरत ॥ ११ ॥	त्रिकुटीपदे गुरुस्वरूपं निरीक्ष्य । सुन्नपदे पुनरात्मानम् आरोहयामि ॥ ११ ॥
होय तन मन से सुरत अकेल । करत जाय हंसन संग कुलेल ॥ १२ ॥	आत्मा तनुमनोभ्याम् एकाकी भूत्वा। गत्वा हंसैः सह क्रीडां करोति ॥ १२ ॥
धार हिये सतगुरु चरनन आस । भँवर चढ़ पाय अमरपुर बास ॥ १३ ॥	सद्गुरुचरणयोः आशां हृदये धार्य । भँवरपदे आरुह्य अमरपुरवासं प्राप्तम्॥ १३ ॥
अलख और अगम का देख बिलास ।	अलखागमयोः विलासं दृष्ट्वा।

करे राधास्वामी धाम निवास ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-धामे(धाम्नि) निवासं करोति ॥ १४ ॥
दीन दिल आरत राधास्वामी धार । अमी रस पीऊँ जाउँ बलिहार ॥ १५ ॥	दीनहृदयेन रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो आरतिं धार्य। अमृतरसं पिबामि समर्पयामि च ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११२ ॥ दरस गुरु तड़प रहा मन मोर	
हिंदी	संस्कृत
दरस गुरु तड़प रहा मन मोर । करूँ कस आरत सन्मुख जोड़ ॥ १ ॥	गुरुदर्शनाय मम मनः आकुलितमस्ति । सम्मुखं संयोज्य आरतिं कथं कुर्याम् ॥१॥
सुनत गुरु महिमा उपजा भाव । देख गुरु लीला बाढ़ा चाव ॥ २ ॥	गुरु महिमां श्रुत्वा भाव अजायत् । गुरुलीलां दृष्ट्वा अभिरुचि: अवर्धत ॥ २ ॥
पिरेमी जन की हालत देख । हिये में उपजा सहज बिबेक ॥ ३ ॥	प्रेमीजनस्य स्थितिम् अवलोक्य । हृदये सहजविवेक: जात: ॥३॥
बचन उन सुन सुन मोहित मन । प्रीति अब बाढ़त गुरु चरनन ॥ ४ ॥	तेषां वचनानि श्रावं श्रावं मनः मुग्धं भवति । अधुना गुरुचरणयोः प्रीतिः वर्धते ॥४॥
काल बहु अटक लगाय रहा। करम जग माहिं भुलाय रहा ॥ ५ ॥	काल: अत्यवरोधं करोति । कर्म जगति विस्मारयति ॥५॥
भाव जग हिये में बसाय रही। लाज जग परदा लाय रही ॥ ६ ॥	जगत: भावं हृदये स्थापयामि । जगत: लज्जां पटेन आच्छादयामि ॥६॥
जतन कोइ मोर पेश नहिं जाय। मेहर बिन क्या मुझको बन आय ॥ ७ ॥	मम काऽपि युक्तिः सफला न भवति। किं कर्तुं शक्नोम्यहं कृपां विना ॥७
चरन में बिनय करूँ हर बार । लेव मुझको भी बेग सम्हार ॥ ८ ॥	प्रतिवारम् चरणयोः प्रार्थनां करोमि । मामपि शीघ्रं संधारयेत् ॥८॥
दया अब अंतर में कीजै । चरन रस मोहि घट में दीजै ॥ ९ ॥	अधुना अन्तसि दयां कुर्यात् । मह्यं घटे चरणरसं दद्यात् ॥ ९ ॥
सुरत मन निरमल होय चालें । प्रीति राधास्वामी छिन छिन पालें ॥ १० ॥	आत्मामनश्च निर्मलं भूत्वा आचरेताम् । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालौ प्रीतिं प्रतिक्षणं धरेताम् ॥ १० ॥
बड़ाई परमारथ दिखलाय । दास को लीजै चरन लगाय ॥ ११ ॥	परमार्थस्य महिमां दर्शयित्वा । दासं चरणयोः युञ्ज्याः ॥ ११ ॥
अटक रहा इन्द्री भोगन में । भटक रहा जहाँ तहाँ भरमन में ॥ १२ ॥	इन्द्रियभोगेषु आबद्ध अस्मि । भ्रमवशीभूतः यत्र तत्र परिभ्रमामि॥ १२ ॥
लेव अब मन को जस तस मोड़। प्रीति करे चरनन में चित जोड़ ॥ १३ ॥	अधुना मनः यथा तथा प्रत्यावर्तयेत् । चरणयोः चित्तं संयोज्य प्रीतिं कुर्यात् ॥ १३ ॥

बने तब सब बिधि पूरा काम । गाऊँ नित महिमा राधास्वामी नाम ॥ १४ ॥	तदा सर्वविधिना कार्यं पूर्णं भवेत् । रा धा/ध: स्व आ मी-नाम्नः महिमां नित्यं गायेयम् ॥ १४ ॥
बहत मेरी नइया भौ की धार । परम गुरु खेय लगावो पार ॥ १५ ॥	मम नौका भवजलधारायां प्रवहति । परमगुरु: तच्चालयन् पारं कुर्यात् ॥ १५ ॥
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार । लेव अब अपने जीव सम्हार ॥ १६ ॥	गुरुदाता मम प्रार्थनां श्रूयात्। स्वकीयं जीवमधुना संरक्षेत्॥ १६ ॥
होत अब देरहि देर अकाज । राखिये सरन पड़े की लाज ॥ १७ ॥	अतिविलम्बेन हानिर्भवति अधुना । शरणागतस्य प्रतिष्ठां संरक्षेत् ॥ १७ ॥
प्रेम का किनका बख़्शिश देव । सुरत मन चरनन में हर लेव ॥ १८ ॥	प्रेम्ण: कणं पुरस्कारे दद्यात्। आत्मामनश्च चरणयोः आकर्षे: ॥ १८ ॥
उमँग कर आरत चरनन धार । जाऊँ राधास्वामी पै बलिहार ॥ १९ ॥	उल्लासेन चरणयो: आरतिं धार्य । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुं प्रति समर्पयामि ॥ १९ ॥

॥ शब्द ११३ ॥ लगी मेरी गुरु संगत प्रीती	
हिंदी	संस्कृत
लगी मेरी गुरु संगत प्रीती । त्याग दई मन से जग रीती ॥ १ ॥	मम प्रीतिः गुरुणा साकं संलग्ना । मनसः जगतः रीतिः त्यक्ता ॥ १ ॥
सुने सतसँग में बचन अमोल । चरन गुरु पकड़े सहज अडोल ॥ २ ॥	सत्संगे अमूल्यानि वचनानि अश्रृण्वम्। सहजतया गुरुचरणौ दार्ढ्येन अगृह्णाम् ॥ २ ॥
संत मत पाया गहिर गंभीर । दया कर गुरू बँधाई धीर ॥ ३ ॥	गहनगभीरं च संतमतं प्राप्तम् । दयां कृत्वा गुरु: धैर्यं दत्तवान् ॥ ३ ॥
देव और देवी रहे नीचे। ब्रह्म और माया रहे बीचे ॥ ४ ॥	देवा: देव्यः च अधः अतिष्ठन् । ब्रह्ममाया च मध्ये अतिष्ठताम् ॥ ४ ॥
देश संतन का अति ऊँचा । मेहर बिन कोई न वहाँ पहूँचा ॥ ५ ॥	संतजनानां देशः अत्युच्चः । कृपां विना कोऽपि न तत्र गतवान् ॥ ५ ॥
शब्द की डोरी लौ लावे । सोई जन निज घर को धावे ॥ ६ ॥	शब्दस्य सूत्रे लयलीन: भवति य:। सैवजन: निजगृहं धावति ॥ ६ ॥
जगाया गुरु ने मेरा भाग। चरन में दीना मोहि अनुराग ॥ ७ ॥	गुरुः मम भाग्यं अजागरयत्। चरणयो: माम् अनुरागं अददात् ॥ ७ ॥
सुरत और शब्द दिया उपदेश । चलो घर तज कर जग का लेश ॥ ८ ॥	आत्मनः शब्दस्य च उपदेशं दत्तवान् । गृहं चल त्यक्त्वा जगत: संबंधम् ॥ ८ ॥
बचन गुरु धार लिया मन में । करूँ नित यही जतन तन में ॥ ९ ॥	गुरुप्रवचनं मनसि धृतम् । अयमेव यत्नः शरीरे नित्यं करोमि ॥ ९ ॥
दया से निरमलता आवे । चित्त की चंचलता जावे ॥ १० ॥	दयया निर्मलता प्राप्यते । चित्तस्य चांचल्यम् अपसरति ॥ १० ॥
सुरत मन जब धारें गुरु रंग । चढ़ें तब घट में होय निसंक ॥ ११ ॥	आत्मामनश्च यदा गुरुरङ्गं धरतः । तदा घटे निर्भयौ भूत्वा आरोहतः ॥ ११ ॥
गुरू मोपै आपहि किरपा कीन । सुरत में प्रीति शब्द धर दीन ॥ १२ ॥	गुरु: स्वयमेव कृपां कृतवान् मयि। आत्मनि शब्दस्य प्रीतिं धृतवान् ॥ १२ ॥
छोट मुख कस उन गुन गाऊँ । सरन में हित चित से धाऊँ ॥ १३ ॥	तुच्छमुखात् कथं तेषां गुणान् गायामि । शरणे हितचित्तेन च धावामि ॥ १३ ॥
रूप राधास्वामी चित्त बसाय । गाऊँ उन आरत उमँग बढ़ाय ॥ १४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: स्वरूपं चेतसि धार्य। तेषां आरतिं गायामि अत्युल्लासेन ॥ १४ ॥

लेव राधास्वामी मोहि अपनाय । दास यह बिनय करे सिर नाय ॥ १५ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः माम् स्वीकुर्यात् । शिरं नत्वा दास: इमां प्रार्थनां करोति ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११४ ॥ नाम राधास्वामी चित धरता	
हिंदी	संस्कृत
नाम राधास्वामी चित धरता । प्रेम की बानी नित पढ़ता॥ १ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम चित्ते दधामि । प्रेम्ण: वाणीं नित्यं पठामि ॥ १ ॥
चित्त से सतसँग नित करता । ध्यान गुरु दरशन में धरता ॥ २ ॥	चेतसा सत्सङ्गं नित्यं करोमि । ध्यानं गुरुदर्शने धरामि ॥ २ ॥
बचन गुरु समझ समझ गुनता । शब्द धुन उमँग उमँग सुनता ॥ ३ ॥	गुरुवचनानि अवगम्य चिन्तयामि । अत्युल्लासेन शब्दध्वनिं श्रृणोमि ॥ ३ ॥
करम और भरम जले अगनी । हार कर बैठ रही ठगनी ॥ ४ ॥	कर्मभ्रमा: अग्नौ भस्मीभूता: । पराजितामाया निष्क्रियाऽभूत् ॥ ४ ॥
छोड़ मग काल रहा ठाड़ा। करम का डाल दिया भाड़ा ॥ ५ ॥	काल: मार्गं त्यक्त्वा स्थितोऽभूत् । कर्मण: ऋणं प्रत्यर्पितम् ॥ ५ ॥
नाम राधास्वामी हिये धारा । दूत घर पड़ गया अब धाड़ा ॥ ६ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-नाम हृदये अधरम् । अधुना दूतगृहे लुण्ठनम् अभवत् ॥ ६ ॥
सुरत और शब्द लिया मत सार । धुनन सँग करता नित्त बिहार ॥ ७ ॥	सुरतशब्दयो: सारमतम् अगृह्णम् । ध्वनिभिः सह नित्यं विहरामि ॥ ७ ॥
सरन गुरु हिरदे धार लई । सुरत मन निज कर शब्द गही ॥ ८ ॥	गुरुशरणं हृदये अधरम् । आत्मामनश्च स्वकीयत्वेन शब्दम् अगृह्णीव ॥ ८ ॥
चरन गुरु गुन गाऊँ दम दम । अमी रस पियत रहूँ हर दम ॥ ९ ॥	गुरुचरणयो: गुणान् प्रतिक्षणं गायामि । अमृतरसं सर्वदा पिबामि ॥ ९ ॥
दया गुरु क्या महिमा कहना । सरन गह नित्त मगन रहना ॥ १० ॥	गुरुदयाया: महिमां किं कथयेयम् । शरणं गृहीत्वा नित्यम् आनन्दे वसेयम् ॥ १० ॥
उमँग मन गुरु आरत गाता । चरन राधास्वामी हिये ध्याता ॥ ११ ॥	सोल्लासमनसा गुरो आरतिं गायामि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणौ हृदये ध्यायामि ॥ ११ ॥

॥ शब्द ११५ ॥ बढ़ी मेरी गुरु चरनन परतीत	
हिंदी	संस्कृत
बढ़ी मेरी गुरु चरनन परतीत । गाऊँ मैं निस दिन राधास्वामी गीत ॥ १ ॥	गुरुचरणयो: मम प्रतीतिः वर्धिता । प्रतिदिनं रा धा/ध: स्व आ मी-गीतं गायाम्यहम् ॥ १ ॥
प्रीति की धारा रहे जारी । लगी गुरु बानी अति प्यारी ॥ २ ॥	प्रीतेः धारा भवेत् अजस्रा । गुरुवाणी अतीव अरोचत् ॥ २ ॥
बढ़त नित सतसँगियन से हेत । करत रहूँ सेवा भाव समेत ॥ ३ ॥	नित्यं सत्संगीजनैः सह प्रेम वर्धते। श्रद्धया सह सेवां करोमि ॥ ३ ॥
जगत जिव बहु बिधि समझाता । भक्ति गुरु महिमा जतलाता ॥ ४ ॥	जगतः जीवान् बहुविधिना बोधयामि । गुरुभक्त्या: महिमां संज्ञापयामि ॥ ४ ॥
शब्द बिन होय न पूरा काम । धार लो मन में राधास्वामी नाम ॥ ५ ॥	शब्दं विना कार्यं न पूर्णं भवेत् । मनसि रा धा/ध: स्व आ मी-नाम धरेत् ॥ ५ ॥
काल ने बहु चक्कर घालें । बिघन मेरी भक्ती में डाले ॥ ६ ॥	कालः बहूनि कष्टानि अददु: । मम भक्त्याम् विघ्ना: अपातयन् ॥ ६ ॥
सरन राधास्वामी हियरे धार । बिघन सब उसके दीने टार ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालोः शरणं हृदि धृत्वा । तस्य सर्वाः विघ्नाः अपसृता: ॥ ७ ॥
भरोसा राधास्वामी चित में राख । सुनाऊँ राधास्वामी महिमा भाख ॥ ८ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: विश्वासं चित्ते धृत्वा । रा धा/ध: स्व आ मी-महिमां कथयित्वा श्रावयामि ॥ ८ ॥
लिया मोहि राधास्वामी आप सम्हाल। सरन दे कीन मोर प्रतिपाल ॥ ९ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः माम् संरक्षितवान् । शरणं दत्वा माम् प्रतिपालितवान् ॥ ९ ॥
मेरे मन अस निश्चय होई । गुरु बिन नहिं दूसर कोई ॥ १० ॥	मम मनसि अयं निश्चयमभवत् । गुरुं विना न कोऽप्यन्य: ॥ १० ॥
करें जो दुख में आन सहाय । कलह से लेवें तुरत बचाय ॥ ११ ॥	ये दुःखे साहाय्यं कुर्यात् । कलहात् शीघ्रं रक्षां कुर्वन्ति ॥ ११ ॥
मेरे मन गुरु परतीत बसी । चरन गुरु सूरत आन रसी॥ १२ ॥	मम मनसि गुरुप्रतीतिः समाहिता । आत्मा गुरुचरणयो: अयुनक् ॥ १२ ॥
लिया सतसँग में आप मिलाय ।	सत्संगे स्वयं अमेलयत् ।

बचन गुरु अद्‌भुत चित्त समाय ॥ १३ ॥	गुरोः अद्‌भुत वचनं चित्ते समाहितम्‌ ॥ १३ ॥
मेहर हुई जागा सोता भाग । सुरत मन अंतर में रहे लाग ॥ १४ ॥	दया अभवत्‌ सुप्तं भाग्यं जागरितम्‌ । आत्मामनश्च अन्तसि युङ्क्तः ॥ १४ ॥
उमँग अँग आरत धारूँ नित्त । चरन में राधास्वामी राखूँ चित्त ॥ १५ ॥	उल्लासेन आरतिं धरामि नित्यम्‌ । रा धा/धः स्व आ मी-चरणयोः धरामि चित्तम्‌ ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११६ ॥ संत मत महिमा सुनत अपार	
हिंदी	संस्कृत
संत मत महिमा सुनत अपार । लाय रहा चरनन में निज प्यार ॥ १ ॥	संतमतस्य अपारमहिमां श्रृण्वन्। चरणौ स्वप्रीतिम् आनयामि ॥ १ ॥
अगम गति संत न जाने कोय । गये सब करमन संग बिगोय ॥ २ ॥	संतजनस्य अगमगतिं कोऽपि न जानाति। सर्वे कर्मभिः सह विस्मृतवन्तः ॥ २ ॥
भरम में भूल रहा संसार । भेद नहिं पावें सत करतार ॥ ३ ॥	जगत् भ्रमे विस्मरति। सत्यकर्तुः भेदं न प्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥
पता मोहि मिलिया राधास्वामी धाम । भाव सँग पकड़ा राधास्वामी नाम ॥ ४ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-धामस्य(धाम्न:) सङ्केतं मया प्राप्तम्। रा धा/ध: स्व आ मी-नाम भावेन सह गृहीतम् ॥ ४ ॥
पढ़त गुरु बानी जागी प्रीति । बिरह दरशन की साली चीत ॥ ५ ॥	गुरुवाणीं पठन् प्रीतिः जागरिता। दर्शनस्य विरहः चित्तं पीडयति ॥ ५ ॥
मेहर हुई चरनन में आया । सहज ही गुरु दरशन पाया ॥ ६ ॥	कृपाऽभूत् चरणयोः आगतवान्। सहजैव गुरुदर्शनं प्राप्तवान् ॥ ६ ॥
देख गुरु संगत हुलसाया । बचन गुरु अमृत बरसाया ॥ ७ ॥	गुरुसङ्गतं वीक्ष्य उल्लासः जातः। गुरुवचनानि अमृतं अवर्षयन् ॥ ७ ॥
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग । कहूँ क्या गत मत अचरज संग ॥ ८ ॥	आत्मामनसी गुरुरंगेन क्लिद्यतः। किं कथयामि गते मतेश्च अद्भुतसङ्गम्॥ ८ ॥
प्रेम की की धारा उमँग रही। चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लई ॥ ९ ॥	प्रेम्णः धारा उल्लसति । गुरुचरणौ दार्ढ्येन गृहीतौ ॥ ९ ॥
बचन सुन अस निश्चय धारा । संत बिन नहिं जिव निस्तारा ॥ १० ॥	वचनं श्रुत्वा एतद् निश्चयं धृतम् । संतं विना जीवोद्धारं न संभवति ॥ १० ॥
सुरत और शब्द जुगत सारा । बताई गुरु मोहि कर प्यारा ॥ ११ ॥	सुरतशब्दयोः सर्वाः युक्तयः । गुरुः मां प्रियं मत्वा उक्तवान्॥ ११ ॥
भेद निज घर का समझाया । देस संतन का लखवाया ॥ १२ ॥	निजगृहस्य भेदं बोधयितवान् । सन्तपुरुषाणां देशं दर्शयितवान् ॥ १२ ॥
जगत का कारज थोथा जान । भोग सब इंद्री रोग समान ॥ १३ ॥	जगतः कार्याणि निरर्थकं ज्ञात्वा । सर्वेन्द्रियभोगाः रोगतुल्याः जाताः ॥ १३ ॥

समझ गुरु बचन धार बैराग । बढ़ाओ चरनन में अनुराग ॥ १४ ॥	गुरुवचनम् अवबोध्य वैराग्यं धृत्वा। चरणयोः अनुरागं वर्धस्व॥ १४ ॥
चलो घर पकड़ शब्द की धार । अमरपुर तीन लोक के पार ॥ १५ ॥	शब्दधारं गृहीत्वा गृहं चल । त्रिलोकान् अतिक्रम्य अमरपुरम् ॥ १५ ॥
मेहर हुई बिरह शब्द जागी । सुरत मन धुन रस में पागी ॥ १६ ॥	कृपा अभवत् विरहस्य शब्दः जागरितः । आत्मामनसी ध्वनिरसे लीनौ अभूताम् ॥ १६ ॥
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार । चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार ॥ १७ ॥	अहम् अवधानेन नित्यमभ्यासं करोमि । आरोहामि आत्मानं विपरीतधारायाम् ॥ १७ ॥
होंय जब राधास्वामी गुरू दयाल । तोड़ तिल देखूँ जोति जमाल ॥ १८ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-गुरुः यदा दयालुः भवेत् । तिलं त्रोटयित्वा ज्योतेः प्रकाशं पश्यामि ॥ १८ ॥
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊँ । शब्द गुरु दरशन वहाँ पाऊँ ॥ १९ ॥	बंकनाले अन्तर्निविश्य त्रिकुटीपदे आरोहामि । शब्दगुरोः दर्शनं तत्र प्राप्नुयाम् ॥ १९ ॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय । देउँ सब कलमल दूर बहाय ॥ २०॥	सुन्नपदे आरुह्य मानसरोवरे स्नात्वा । सर्वे कालुष्यमालिन्यं च प्रवाहयामि॥ २० ॥
महासुन घाटी चढ़ भागूँ भँवर धुन मुरली सँग पागूँ ॥ २१ ॥	महासुन्नोपत्यकायाम् आरुह्य धावामि । भंवरपदे वेणुस्वरेण सह तल्लीनं भवामि ॥ २१ ॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय । अलख और अगम में पहुँची धाय ॥ २२ ॥	अमरपुरे सत्तपुरुषस्य दर्शनं लब्ध्वा । अलखागमपदौ धावित्वा प्राप्तवान् ॥ २२ ॥
चरन राधास्वामी निरखूँ सार । करूँ वहाँ आरत उमँग सम्हार ॥ २३ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः सारं निरीक्षे । तत्र सोल्लासमारतिं करोमि अवधानेन ॥ २३ ॥
कौन यह पावे धुर पद सार । करी मोपै राधास्वामी दया अपार ॥ २४ ॥	आदिपदस्य एनं सारं कः प्राप्तुं शक्नोति । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः मयि अपारदयां कृतवान्॥ २४ ॥
रहे थक सब मत रस्ते माहिं । पाई मैं राधास्वामी चरनन छाँह ॥ २५ ॥	सर्वमतानि मार्गे एव श्रान्तानि । रा धा/ध: स्व आ मी-चरणयोः आश्रयोऽहं प्राप्तवान् ॥ २५ ॥
करे कोइ जतन अनेक सम्हार । न पावे संतन का पद सार॥ २६ ॥	कोऽपि अनेकयुक्तयः संरक्ष्य आचरेत् । सन्तपुरुषाणां पदसारं प्राप्तुं न शक्नोति ॥ २६ ॥
बनाया राधास्वामी मेरा काज । दया मोपै कीनी पूरन आज ॥ २७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः मम कार्यं सिद्धं कृतवान् ।

	अद्य मयि पूर्णदयां कृतवान् ॥ २७ ॥

शब्दः- ११७ करूँ क्या गुरु महिमा बरनन 10 to 17 kadi	
हिंदी	संस्कृत
करूँ क्या गुरु महिमा बरनन । सुरत मेरी लाग रही चरनन ॥ १ ॥	गुरुमहिमायाः वर्णनं कथं करोमि । ममात्मा चरणयोः युनक्ति ॥१॥
दूर मैं रहती सतसँग से । सुरत मेरी रँग रही गुरु रँग से ॥ २ ॥	सत्संगात् दूरे वसाम्यहम् । ममात्मा रंजितः गुरुरङ्गेन ॥ २ ॥
नाम गुरु मन में जपत रहूँ । हिक दरस गुरु घट में चहत रहूँ ॥ ३ ॥	गुरोः नाम स्मरामि मनसि । गुरुदर्शनं घटे वाञ्छामि ॥३॥
मेहर बिन क्या मोसे बन आय । रहूँ मैं नित राधास्वामी गुन गाय ॥ ४ ॥	कृपां विना अहं किं कर्तुं शक्नोमि । नित्यं रा धा/ध: स्व आ मी-दयालोः गुणान् गायामि॥४॥
जीव सब भूल रहे तन में। अटक रहे करमन भरमन में ॥ ५ ॥	सर्वे जीवाः शरीरे विस्मरन्ति । कर्मभ्रमेषु संलग्नाः सन्ति ॥ ५ ॥
क़दर परमारथ नहिं जानें। प्रीति मन माया सँग ठानें ॥ ६ ॥	परमार्थस्य महिमां न जानन्ति । मनमायाभ्याम् साकं प्रीतिं कुर्वन्ति ॥ ६ ॥
काल ने अपनी छाया डाल । फाँस लिया इनको माया जाल ॥ ७ ॥	कालः स्व छायां विकीर्य । एतान् मायाजाले अपाशयत् ॥७॥
गुरू अब अमृत बचन सुनाय । काल से लीजे वेग बचाय ॥ ८ ॥	गुरुः अधुना अमृतवचनानि श्रावयित्वा । कालात् शीघ्रं रक्षेत् ॥ ८ ॥
संग से उनके होवत हान । दीजिये उनको भी कुछ ज्ञान ॥ ९ ॥	तेषां संगेन हानिः भवति । तेभ्यः अपि किंचित् ज्ञानं दद्यात्॥ ९ ॥
चरन में गुरु के लागें आय । भाव भय परमारथ का लाय ॥ १० ॥	आगत्य गुरुचरणयोः युञ्ज्युः । परमार्थस्य भावं च भयं च धरेयुः ॥ १० ॥
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार । लीजिये जग जीव बेग सम्हार ॥ ११ ॥	गुरुदाता मम विनतिं श्रृणुयाः: । जगजीवान् शीघ्रं संरक्षेत् ॥ ११ ॥
प्रेम की मुझको दीजे दात । रहूँ मैं निस दिन चरन समात ॥ १२ ॥	मह्यं प्रेमदानं दद्यात्। अहं प्रतिदिनं चरणौ संविशामि ॥ १२ ॥
चरन गुरु धार रहूँ उर में । शब्द धुन सुनत रहूँ सुर में ॥ १३ ॥	गुरुचरणौ हृदये धारयामि । स्वरेषु शब्दनादं श्रृणोमि ॥ १३ ॥
चरन में होवे दृढ़ परतीत ।	चरणयोः दृढ़प्रतीतिः भवेत् ।

बढ़त रहे निस दिन हियरे प्रीति ॥ १४ ॥	प्रतिदिनं हृदये प्रीतिः वर्धेत ॥ १४ ॥
मगन रहूँ जब तब दरशन पाय । उमँग मेरे हिरदे रही समाय ॥ १५ ॥	यदा-कदा दर्शनं प्राप्य मग्नः भवामि । मम हृदि उल्लसनं समाहितं भवति ॥ १५ ॥
प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार । चरन पर डालूँ तन मन वार ॥ १६ ॥	प्रेम्णा रा धा/ध: स्व आ मी-आरतिं धार्य । चरणयोः तनुमनसी समर्पयामि ॥ १६ ॥
दया मोपै राधास्वामी करी बनाय । मेहर से लीना मोहि अपनाय ॥ १७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालुः मयि दयां कृतवान्। कृपया माम् स्वीकृतवान्॥ १७ ॥

॥ शब्द ११८ ॥ ख़बर मैं गुरु संगत की पाय	
हिंदी	संस्कृत
ख़बर मैं गुरु संगत की पाय । मगन हुआ आनँद उर न समाय ॥ १ ॥	अहं गुरुसंगतस्य वृत्तान्तं प्राप्य । मग्नोऽभवम् आनन्दः हृदये न समाहितः भवति ॥ १ ॥
भेद गुरु मत का वोहीं लीन । हुआ मन चरन सरन आधीन ॥ २ ॥	सैव गुरुमतस्य भेदं प्राप्नोति। चरणशरणाधीनम् अभूत् यस्य मनः ॥ २ ॥
करत निस दिन अभ्यास सम्हार । दया राधास्वामी परखी सार ॥ ३ ॥	प्रतिदिनम् अवधानेन अभ्यासं करोमि । रा धा/धः स्व आ मी-दयासारम् अभिज्ञातम् ॥ ३ ॥
देख निज घट में परम बिलास । हिये में बढ़ता अजब हुलास ॥ ४ ॥	परमविलासं निजघटे संपश्य । अद्भुदानन्दः हृदि वर्धते ॥ ४ ॥
तड़प गुरु दरशन की उठती । सुरत गुरु चरनन में बसती ॥ ५ ॥	गुरुदर्शनाय व्याकुलता भवति। आत्मा गुरुचरणयोः वसति ॥ ५ ॥
मौज से अस औसर पाया । धावता गुरु चरनन आया ॥ ६ ॥	ईशेच्छया ईदृग् अवसर : प्राप्तः । धावित्वा गुरुचरणयो आगतवान्॥ ॥ ६ ॥
देख गुरु संगत बाढ़ा प्यार । सुनत गुरु बचन तजा अहंकार ॥ ७ ॥	गुरुसङ्गतं दृष्ट्वा प्रीतिः अवर्धत। श्रुत्वा गुरुवचनं अहङ्कारं त्यक्तम्॥ ७ ॥
दीन होय कीना गुरु सँग मेल । काल के बिघन निकारे पेल ॥ ८ ॥	दीनं भूत्वा गुरुणा सह मेलनं कृतवान् । कालस्य विघ्नाः दार्ढ्येन निष्कासिताः ॥ ८ ॥
सुरत मन निस दिन रस पीते । करम और भरम रहे रीते ॥ ९ ॥	आत्मामनसी प्रतिदिनं रसं पिबतः। कर्मभ्रमाः शून्याः जाताः ॥ ९ ॥
भोग सब हो गये अब बेकार । हुआ मन चरनन पर बलिहार ॥ १०॥	सर्वे भोगाः अधुना निष्फलाः अभवन् । मनः चरणयोः समर्पितमभवत् ॥ १० ॥
समझ में आई भक्ती रीति । बढ़ी अब मन में गुरु की प्रीति ॥११॥	भक्तिरीतिम् बोधितवान् । अधुना गुरुप्रेम मनसि अवर्धत॥ ११ ॥
हुई चरनन में दृढ़ परतीत । जाऊँ अब निज घर भौजल ज़ीत ॥१२॥	चरणयोः दृढप्रतीतिः सञ्जाता। अधुना निजगृहं यामि भवजलं जित्वा ॥ १२ ॥
शब्द की महिमा जानी सार लगा अब फीका जग ब्योहार ॥१३॥	शब्दसारस्य महिमाम् अजानाम् । अधुना जगतः व्यवहारं नीरसं प्रतीयते ॥ १३ ॥
हुआ अब मन में अस बिश्वास।	अधुना मनसि ईदृश् विश्वासः जातः ।

शब्द बिन होय न घट उजियास ॥१४॥	शब्दं विना घटे प्रकाशं न भवति ॥ १४ ॥
समझ अस धार रहूँ मन में । शब्द रस पियत रहूँ तन में ॥१५॥	ईदृशं बोधनं मनसि धरामि। शरीरे शब्दरसं पिबामि॥ १५ ॥
चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार । फोड़ नभ निरखूँ जोति उजार ॥१६॥	आत्मानम् विपरीतधारायाम् आरोहामि। नभस्फोटनं कृत्वा ज्योतिप्रकाशं ईक्षे ॥ १६ ॥
दया गुरु चढ़ूँ गगन को धाय । मगन रहूँ गुरु पद दरशन पाय ॥१७॥	गुरुदयया धावित्वा गगने आरोहामि । गुरुपददर्शनं प्राप्य तल्लीनः भवामि ॥ १७ ॥
वहाँ से से पहुँचूँ दसवें द्वार । सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार ॥१८॥	तत्रत: दशमद्वारम् सम्प्राप्तम् । श्रृणोमि किङ्गरीध्वनिं सारङ्गसारं च॥ १८ ॥
गुफा चढ़ पहुँचूँ सतगुरु धाम । बीन जहाँ बजती आठों जाम ॥१६॥	गुहायामारुह्य सतगुरुधामं(धाम) सम्प्राप्तम्। यत्र अष्टप्रहरेषु अहितुण्डवाद्यं नदति॥ १९ ॥
निरख फिर अलख पुरुष का रूप । परसती अगम पुरुष कुल भूप ॥२०॥	तदा अलखपुरुषस्य रूपं निरीक्ष्य । कुलभूपम् अगमपुरुषं स्पृशामि॥ २० ॥
चरन राधास्वामी परसूँ धाय । आरती गाऊँ प्रेम जगाय ॥२१॥	धावित्वा रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: चरणौ स्पृशामि । प्रीतिं जागरयित्वा आरतिं गायामि ॥ २१ ॥
दिया राधास्वामी यह सब साज । किया मेरा राधास्वामी पूरन काज ॥२२॥	इमानि सर्वाणि आभरणानि रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: दत्तवान् । रा धा/ध: स्व आ मी-दयालु: मम कार्यं पूर्णं कृतवान् ॥ २२ ॥

॥ शब्द ११९ ॥ सुना मैं जब से गुरु संदेस	
हिंदी	संस्कृत
सुना मैं जब से गुरु संदेस । तजा मन करम धरम का लेस ॥ १ ॥	यस्मात् कालात् अहं गुरुसंदेशम् अश्रृण्वम्। मनः कर्मधर्मयो: संबंधं त्यक्तम् ॥ १ ॥
बचन मोहि लागे अति प्यारे । मनन कर उनको चित धारे ॥ २ ॥	मह्यं प्रवचनानि अति रोचन्ते । मननं कृत्वा तान् चित्ते दधामि ॥ २ ॥
भरम और संशय हो गये दूर । परखिया जग परमारथ कूड़ ॥ ३ ॥	भ्रमसंशयौ अपसृतौ । जगत: परमार्थस्य अवस्करं परीक्षितम् ॥ ३ ॥
उमँग मन गुरु जुगती धारी । सुरत और शब्द भेद भारी ॥ ४ ॥	उल्लसितमनसा गुरो: युक्तिः धृता । आत्मनि शब्दे च गहनभेदम् ॥ ४ ॥
बहत रहा काम लोभ की धार । तजे अब मन ने सभी बिकार ॥ ५ ॥	कामलोभयोः धारायां प्रवाहितः आसम् । मन: अधुना सर्वविकारान् अत्यजत् ॥ ५ ॥
सुनत राधास्वामी महिमा सार । लगा उन चरनन से अति प्यार ॥ ६ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी-दयालो: महिमासारं श्रुत्वा । ताभ्यां चरणाभ्याम सह प्रेम जागरितम् ॥ ६ ॥
दीन दिल गुरुमत को धारा । नाम गुरु कीना आधारा ॥ ७ ॥	दीनहृदयेन गुरुमतं धृतम् । गुरो: नामाधारं कृतम् ॥ ७ ॥
रहूँ नित गुरु की जुगत कमाय । चरन गुरु दिन दिन प्रीति बढ़ाय ॥ ८ ॥	गुरो: युक्तिं नित्यं अर्जयामि । गुरुचरणयोः प्रतिदिनं प्रीतिं वर्धे॥ ८ ॥
निरख रहा निस दिन राधास्वामी मेहर। मिटा अब काल करम का क़हर॥ ९ ॥	प्रतिदिनं रा धा/ध: स्व आ मी-कृपां निरीक्षे। अधुना कालकर्मण: संकटम् अपसरितम् ॥ ९ ॥
प्रेम मेरे हिरदे जाग रहा। चरन में मनुआँ लाग रहा ॥१० ॥	मम हृदये प्रेम जागर्ति । चरणयोः मनः युनक्ति ॥ १० ॥
सुनत रहा घट में धुन झनकार । दरश गुरु झाँक रहा नभ द्वार ॥ ११ ॥	घटे ध्वने: झंकृतिं श्रृणोमि। नभद्वारे गुरुदर्शनं निरीक्षे ॥ ११ ॥
जगत का फीका लागा रंग । हुए मन माया दोनों तंग ॥ १२ ॥	जगतः वर्ण मलिनं प्रतीयते । मनमाया च द्वे खिन्न: अभवताम् ॥ १२ ॥
लगा दुखदाई जग ब्योहार । दरश गुरु चहत रहूँ हर बार ॥१३॥	जगत: व्यवहारं दुखदायकं प्रतीतम् । प्रत्येकवारं गुरुदर्शनं कामये ॥ १३ ॥
सेव गुरु मन में अति भाई ।	गुरुसेवा मनसि अति रोचते।

जगत की किरत तजन चाही ॥१४॥	जगत: कार्यकलापं त्यक्तुम् ऐच्छम् ॥ १४ ॥